संधान

3

प्रभास विशेष



मिथिला समाजक प्रगतिशील चेतनाक जरूरी पोथी

सन्धान

सम्पादक

अशोक

मुद्रक एवं प्रकाशक : मित्रम् प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, भिखना पहाड़ी, नयाटोला, पटना–4

सम्पादकीय सम्पर्क: सी-407, आफिसर्स फ्लैट बेली रोड, पटना-800001, दूरभाष : 230 144

मूल्य : [redacted] टाका 40.00

प्रकाशन, संचालन एवं सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक

सन्धान-3

वर्ष-3 अंक-3 जनवरी 1999

संधान-3

सम्पादकीय

साहित्य हुनकर जीवन छलनि

प्रभास कुमार चौधरी आब नहि छथि। हुनकर अभाव सभ के खटकि रहल अछि। कतेक रास भरोस टूटि गेल अछि। भरोस छलैक जे प्रभासजी छथि त' बात बनि जायत। ओझराएल ताग सोझरा जायत। ठमकल डेग फेर उठि जायत। सभ के संग ल' चलबाक कौशल हुनका मे रहनि। योजना बनएबाक आ ओकरा कार्यान्वित करबाक ताकति हुनका मे छलनि। सभक सहयोग प्राप्त क' लेबाक क्षमता रहनि। सब बएस आ वर्गक लोक के आस्था हुनका संग जुड़ल छल। एम्हर ओ आर बेसी सक्रिय भ' गेल छलाह। सगर राति दीप जरयक माध्यमे, प्रवासी वा कथा-दिशाक माध्यमे अथवा युवालेखनक संग अनेक सृजनात्मक गोष्ठीक माध्यमे।

हुनका अपन पिताक बाद पत्नी ज्योत्सनाजीक देहावसान सँ अत्यधिक आघात लागल रहनि। ओ लगभग टूटि गेल छलाह। कमजोर भ' गेल छलाह। एहन स्थिति मे साधारण लोक एकान्त ताक' लगितए। पूजा-पाठ कर' लगितए अथवा शराब मे, भांग मे बुत्त भ' जइतए। प्रभासजी साधारण लोक नहि रहथि। साहित्य हुनकर जीवन छलनि। तैं ओ साहित्य मे आर बेसी अपना के सक्रिय केलनि। अपन मूल आस्था के पकड़लनि। अपना के बचा क' रखबाक चेष्टा केलनि। मुदा आघात पैघ छल। कने लापरवाह भ' गेलाह। यैह लापरवाही हुनका लेल घातक भ' गेलनि।

दुख के बिसरबाक लेल ओ सृजनात्मक मंच के माध्यमक रूप मे किएक चुनलनि? साहित्यो मे हुनका लगभग सभ किछु प्राप्त भ' गेल छलनि जे साधारणतया कोनो मैथिली लेखक के काम्य भ' सकैत छैक। प्रसिद्धि, पाठकक संख्या, मोजर, पुरस्कार सभ भेटि चुकल छलनि। आब ओ राम-राम करैत जीवन बीता सकैत छलाह। पथ्य-पानि सँ रहि सकैत छलाह। मुदा नहि। हुनका भीतर जे निरन्तर एक आगि जरि रहल छल से आर धधकि उठल। साहित्य, सृजन हुनकर जीवन छलनि। ओ ओही मे अपना के सक्रिय, सार्थक केलनि। अपन मुक्ति तकलनि।

प्रभास कुमार चौधरी जखन कथा लिखब शुरुह केलनि ओहि सँ पूर्व ललित, राजकमल, धीरेन्द्र, सोमदेव, रमानन्दरेणु, मायानन्द मिश्र, रामदेव झा, हंसराज आदि मैथिली कथा मे अपन विलक्षण आ महत्वपूर्ण योगदान क' रहल छलाह । स्थापित भ' गेल छलाह । आधुनिक मैथिली कथाक आधार के व्यापक ओ सुदृढ़ क' रहल छलाह । विश्वक आन भाषा-साहित्यक समकक्ष मैथिली के ठाढ़ करबाक लेल ओ लोकनि प्राण-प्रण सँ चेष्टारत रहथि । मैथिली कथा मे नव विषय, नवभूमि, नव भाव-बोध आबि रहल छल । हिनका लोकनिक हस्तक्षेप आ योगदान बिसरल जाइवला नहि अछि। मुदा हमरा ई आश्चर्य लगैत रहल अछि जे एतेक आधुनिक ओ सम्बद्ध बूझल जाइबला लेखक लोकनि अपन जीवन मे अन्ततः एतेक एकांगी, तन्त्र-मन्त्र मे आस्था रखनिहार, अतीत मे चल जाइबला, रोशनीक एक किरण लेल व्याकुल, सन्यस्त आ कट्टर किएक भ' गेलाह ? हालांकि एक तरहें देखी त' एहि सँ हुनकर रचना वा कथाक विकास प्रभावित नहि भेल अछि। ओकर मूल्य कोनो प्रकारें अस्वीकार योग्य नहि अछि । मुदा प्रश्न ई बहुधा उठैत रहैत अछि जे किछु अपवाद के छोड़ि ओ लोकनि सृजन सँ विमुख किएक भ' गेलाह ? अपना के पहिनहिं जकाँ साहित्य सँ, साहित्य मे आनल अपन दृष्टिबोध सँ जोड़िक' किएक नहि राखि सकलाह ? साहित्य आ जीवन मे अन्तर्विरोध किएक उत्पन्न भेल ? ओ ऊर्जा आ उष्मा हुनका भीतर अन्तधरि किएक नहि संरक्षित रहि सकल ? एहि सभ प्रश्नक उत्तर हमरा लोकनि के तकबाक चाही। तकबाक चाही जे लेखकक जीवन मे ई निराशा, जटिलता, टूटन किएक उत्पन्न भेल ? तखनहि हमरा लोकनि अपन जीवन आ लेखन के विकसित क' सकब । मैथिली कथा के आगू बढ़ा सकब । सार्थक जीवनक प्रारुप प्रस्तुत क' सकब । जे मनुक्खक गरिमा के आ ओकर जीजीविषा, प्रतिरोध एवं संघर्षक शक्ति के अभिव्यक्त क' सकत ।

हम सभ इहो देखैत छी जे प्रभासक पीढ़ी मे आबि क' स्थिति मे परिवर्त्तन आएल अछि । जीवन आ साहित्य मे विरोधाभास, अन्तर्विरोध कम भेल अछि । अनेक लेखक अन्तधरि अपन ऊर्जा संरक्षित रखने देखाइत छथि । राजमोहन झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन आदि नाम एहि बातक प्रमाण अछि । ई लोकनि अपन साहित्य मे एतेक जोर आ तेजी सँ नहि दौड़लाह जे हुनकर सांस फुल' लागनि। अपन जीवन ओ साहित्य मे एक तारतम्य बनाक' रखबा मे ई लोकनि सफल भेल छथि । ने तेज दौड़ी ने ठेस खसी । आवश्यकतानुसार परिस्थितिवश कखनहुँ के कदमताल सेहो करैत रहलाह अछि त' सशक्त आ गतिशील डेग सेहो उठौलनि अछि । मोटामोटी ई लोकनि अपन जीवन आ साहित्य मे सहज रहल छथि । प्रभास कुमार चौधरी मे जे गुण हमरा लोकनि देखैत छी से कोनो असगर हुनके टा मे नहि छलनि । हुनकर समस्त पीढ़ी मे कमो-बेश छनि । भले ही ओकर अभिव्यक्ति जेहेन हो, जेना हो ।

प्रभासजी के अपन पिता सुरेन्द्र चौधरी सँ अत्यन्त लगाव छलनि । अपन गाम सँ अत्यधिक जुड़ाव छलनि । ओ ई बात कहियो नहि बिसरि सकलाह जे सोलह बरखक अवस्था मे गाम हुनका सँ छूटि गेल रहनि । जीवन बनेबाक लेल गाम हुनका छोड़' पड़लनि । मुदा सोलह बरखक अवस्था धरि गाम मे बिताओल जीवन हुनकर हृदय मे 'फ्रीज' भ' गेल रहनि । जेकरा हुनका जखन आवश्यकता होइन कने धाह देखाक' घमा लेथि । एहि मे हुनकर पिता चिट्ठी द्वारा सहायता करथिन । वैह जीवन हुनकर प्रेरकशक्ति सेहो छलनि । हुनकर सीमा बनि गेलनि। एहिगाम मे सभसँ प्रमुख हुनका लेल हुनकर 'पिता' छलथिन । वियाहक बाद नोकरीक कारणे जखन ओ 'शहर' मे रह' लगलाह त' ओहिठामक प्रमुख हुनकर पत्नी छलथिन। गाम छल संयुक्त परिवार त' शहर छल सरकारी परिवार । गाम सँ शहर, संयुक्त परिवार सँ सरकारी परिवार दिस संक्रमण मे प्रभासजी फँसि गेलाह । एहि पार सँ ओहिपार नहि जा सकलाह । ताहू मे जखन मित्र जीवकान्त हुनका टोकारा द' देलथिन जे 'प्रभासक कथा मे कथानायक पिता आ पत्नीक बीच 'ओसिलेट' करैत अछि' त' ओ एकर संज्ञान ल' लेलनि । सचेत भ' गेलाह । जीवकान्तक टिप्पणी के कटबाक लेल ओ प्रसिद्ध कथा 'पिता' लिखलनि । ई बात, ई बोध अन्तधरि हुनकर पछोड़ नहि छोड़लकनि। अपन अन्तिम कथा 'अष्टाबक्रक शेष कथा' मे सेहो ओ अपन 'पिता' मे कहल बात के पुष्ट केलनि। एहि प्रकारें नेनपन मे बिताओल गामक जीवनक संग 'पिता' सेहो हुनका मे फ्रीज भ' गेलनि ।

प्रभास कुमार चौधरी पूर्व जमीन्दारक पौत्र छलाह । एक कवि-शिक्षकक पुत्र छलाह । वंगला साहित्य सँ नेनपने मे परिचित भ' गेल रहथि । हृदयक उदारता हुनका मे मानवीयता आ मानवीय सम्बन्धक उष्मा प्रदान केलकनि । ओ एहि उष्माक सृजनात्मक उपयोग केलनि । एहि सँ जरबो-पजरबो केलाह । सुख-दुख भोगलनि । मुदा ई उष्मा हुनकर हाथ सँ कहियो नहि छूटल । एही उष्मा सँ ओ लोक के, पाठक के प्रकाश आ गरमी परसलनि । जे ठिठुरैत जड़काला मे सुर्जक ताप ल' के आएल । एहि सन्दर्भ मे एहि बातक बड़ थोड़ महत्व अछि जे ओ अपन वर्ग सँ बाहर नहि निकलि सकलाह।

मुदा अपन वर्गक भीतरे रहि ओ जाहि आलोचनात्मक दृष्टिक संग ओहि वर्ग आ जातिक राग, द्वेष, टूटन, पतन, घमण्ड, आतंक-आदंक के तकलनि आ नपलनि से एहि सँ पूर्व मैथिली कथा मे एतेक व्यापकता सँ नहि आएल छल ।

प्रभास सर्वहारा, दलितक लेखक नहि छलाह । प्रभास मे दलित दृष्टि नहि छलनि। सर्वहारा, लेल, दलित लेल हुनका हृदय मे ममता छलनि । सहानुभूति छलनि । सहानुभूतिएक कारण ओ ओहि वर्गक गतिविधि पर सेहो नजरि रखने छलाह । समयक

संग चलि रहल परिवर्त्तन ओ आन्तरिक बैचेनी के ओ अखियासि रहल छलाह । मुदा हुनकर दृष्टि सामाजिक-सांस्कृतिक छलनि । ई अकारण नहि अछि जे दलित शोषितक जाहि विन्दु के-आत्मसम्मान आ इज्जतिक बिन्दु के ओ अपन रचना मे अभिव्यक्त केलनि ओ एम्हर 'आर्थिक शोषण' सँ आगू निकलि गेल अछि । ओकरे भजा क' आइ राजनीतियो भ' रहल अछि । सामाजिक न्यायक ई एक प्रमुख विन्दु मानल जाइए । प्रभासक कथा-उपन्यास मे ई विन्दु बीस तीस वर्ष पूर्वहिं सँ अभिव्यक्त होइत रहल अछि । हमरा जनैत आर्थिक शोषणक प्रति जागरूकताक लेल ई आधार बिन्दु थिक । प्रस्थान विन्दु सेहो भ' सकैए । मिथिला मे वामपन्थी आ समाजवादी आन्दोलनक व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ल अछि । प्रभास जी गाम आ समाज सँ जुड़ल छलाह । तैं दोसरो पार सँ देखिक' ओ एकरा अकानि लेलनि । प्रभासक लेखन मे जे बात आएल से मैथिली मे पहिनहुँ सँ आबि रहल छल । यात्रीक 'बलचनमा' त' एकर ठोस आ प्रमाणिक उदाहरण अछिये । राजनीतिक रूप सँ सेहो अनेक संगठन एहि दिशा मे निरन्तर कार्यरत् रहल अछि । ई फराक बात जे रोपलक कियो आ कटलक कियो ।

x x x

साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1998 क लेल मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-कथाकार जीवकान्तक कविता-पोथी 'तकैत अछि चिड़ै' के पुरस्कृत कएल गेल अछि । एहि लेल सर्वत्र प्रसन्नता अछि । तकैत अछि चिड़ै' लेल जीवकान्त, के मैथिल समाज रहिका द्वारा सेहो किरण पुरस्कार देल जा चुकल अछि । महाकवि यात्रीक 'पत्रहीन नग्न गाछ'क बाद परुकाँ कीर्त्तिनारायण मिश्र कें 'ध्वस्त होइत शांतिस्तूप' लेल साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कएल गेल आ एहि वर्ष जीवकान्त के । एक्कैसम शताब्दीक द्वारि पर ठाढ़ मैथिलीक समकालीन कविताक ई सम्मान रूढ़िवादी दृष्टि-बोधक पराजयक प्रतीक थिक । साहित्य अकादमी पुरस्कारक मान्यजूरी लोकनि एहि लेल धन्यवादक पात्र छथि । लगैए रौद मे कने गरमी आएल अछि । जाड़ फाटल अछि। आइ प्रभासजी रहितथि त' अपन मित्र जीवकान्त के पुरस्कृत होइतं देखि प्रसन्न होइतथि।

मैथिलीक मान्य कवि-कथाकार जीवकान्त कें साहित्य अकादमी पुरस्कारक लेल सन्धानक बधाइ ।

अशोक

जीवकान्त

समकालीनता मे दुर्भाग्य

प्रभास आब नहि छथि, से रेडियो सँ सूनल । फेर पत्र सभ आबए लागल जे मित्र सभक शोकक उद्‌गार छल । हमरा नहि लगैत अछि जे प्रभास नहि छथि ।

हमरा ई बात लिखबाक एहि छन मे जनाइत अछि जे ओ अगिला कोनो कार्यक्रम मे हमरा भेटताह । हुनकर अनेक पत्र अछि जकरा हम खोलि कए फेर सँ नहि पढ़ने छी । ओहि पत्र सभमे ओ भेटताह । भए सकैछ, ओ पत्र सभ नष्ट भए गेल हो ।

हुनका मोन पारैत अनेक बात मोन पड़ैत अछि । शुरूमे अर्थात् 1965 आ 1970 ई० क बीच प्रकाशित पोथी मे हमर सम्मति वला एक पत्रांश छपैत छलाह जाहिमे हम कहने रही जे प्रभासक तुलना संसारक कोनो श्रेष्ठ कथाकार सँ कयल जा सकैत अछि ।

फेर प्रभासक अत्यन्त प्रसिद्ध कथा 'पिता' अयलनि जे ओ हमरा नामे संबोधित पत्रोत्तरक एक विशिष्ट शैली मे लिखने छथि । हुनकर एहि कथाकें पढ़ि हम स्तब्ध भए गेल रही जे प्रभास कें कतेक दुख भेल छनि । बातक मारि असहनीय होइत छैक। प्रभास बहुत संवेदनशील कथाकार छलाह, तें हुनका ई मारि बहुत क्षुब्ध आ आहत कयने छलनि ।

ओही कथामे हमर एक टिप्पणी कें बेर-बेर ओ दोहरबैत छथि । ओ टिप्पणी संभवत: एहि प्रकारें अछि–''प्रभासक कथामे कथानायक पिता आ पत्नीक बीच ओसिलेट Oscillate) करैत अछि ।'' ई टिप्पणी कदाचित् हम चेतना समितिक परिचर्चा मे पढ़ल अपन कोनो लेखमे कयने होयब ।

एक ठाम आर हम दूनू गोटे विवाद मे ओझड़ा गेल रही । 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक) मे प्रभासक एक कथा आएल रहनि, 'मन्दाकिनी' । ओकरा पढ़ि 'पाठकीय मंच' मे हम लिखि देने रही–''प्रभासक नारी-पात्र मे 'फ्रॉक-फोबिया' होइत अछि, जे नायक सँ घनिष्ठ होइते ओकरा लग फ्रॉक उठा दैत अछि...इत्यादि । एकर उत्तर

मे अपन कथाक बचाओ मे, ओ अनेक अंक धरि प्रतिवाद करैत रहलाह । प्रतिवाद सभ तेहेन होइत छल जे हुनक प्रतिवाद मे हमरो प्रतिवाद देबए पड़ैत छल ।

फल भेल जे हाहाकार मचि गेल । ई उतराचौरी बन्न होअय, से सभक अभीष्ट भए गेल ।

ओहि बीच हरिमोहन बाबूक डेरापर हुनक दर्शन करए गेलहुँ, तँ ओ कहलनि जे हमर आ प्रभासजीक बीच जे खटसम्वाद भेल, से बहुत कटु भए गेल । ओ कहलनि जे हुनको समकालीन छलनि, ताहिमे ओ अच्युतानन्द दत्तक नाम विशेष रूपें लेलनि, ताहिमे वाद-प्रतिवाद होइत छल, मुदा ताहिमे कटुता नहि होइत छल । हम हुनका कहल जे हम आगाँ एहि विवादकेँ नहि बढ़ाएब ।

हम तँ बाद मे बहुत किछु पढ़ब आ बहुत किछु बाजब बन्न कए देल आ कोशिश कयल जे कटुता सँ मैथिलीक अत्यन्त सीमित लेखक-परिवार केँ असुविधाक स्थितिमे नहि खसाबी ।

बादमे एकाधिक गोष्ठीमे प्रभासजी टिप्पणी कयलनि जे जीवकान्तजी चुप छथि, तथापि अपन चेला-चाटी सँ हमर (प्रभास) आलोचना करबा दैत छथि ।

एक बेर एक पत्रिका मे (पत्रिकाक नाम स्मरण नहि अछि) प्रभासजी (सवक्तव्य) एक कथा छपबओलनि, संभवत: कथाक शीर्षक रहैक, ''वजन्ताक पोता'', ताहि मे ओ एहि आरोपकेँ लिखित रूप देलनि । हमर शिष्य (प्रभासजीक शब्द मे) सभ जनैत छथि जे हम हुनका सभकेँ ककरा विरूद्ध की कहबा लेल प्रेरित कयलियनि ।

हमरा आइ एहि बातक दुख अछि जे कदाचित् हमरा हुनका बीच ई बात साफ नहि भेल ।

हम अपन व्यवहार आ लेखन मे पछिला बीस बर्खसँ ई प्रयत्न कयल जे बांजा-भूकी बन्न नहि करी आ ने एहेन कोनो अनटोटल बात बाजी जे तकर नौबति आबय ।

प्रभासक देहान्त सँ मैथिलीमे एक शून्य उत्पन्न भेल अछि ।

मोहन भारद्वाज एक बेर कहलनि जे हरिमोहन बाबूक जीवन काल मे हरिमोहन बाबूक बारे मे एक पाँती समीक्षा कतहु ने छपल । संस्कृत मे कहल गेल छैक–''जीवित कवेराशयो न वर्णनीय:''। सत्ते, अपन समकालीन पर बात करब कतेक दुर्भाग्यपूर्ण होइत छैक ।



मोहन भारद्वाज

अभिशप्त युगपुरुष

प्रभास कुमार चौधरी कथाकार छलाह । हुनक कहब छलनि–हुनका जे-किछु कहबाक छनि से ओ कथे मे कहताह । सत्ते, सैह ओ करबो कयलनि । जन्म, विवाह, नोकरी, बाबी, पिता, माय, पीसी, बहिन, भाइ–सभकेँ ओ अपन कथा-उपन्यास मे स्थान देने छथि । स्थाने नहि देने छथि, एहि सभ प्रसंग केँ कथाक विषय आ आधार बनौने छथि । ओना तँ प्रत्येक रचना मे रचनाकार कोनो-ने-कोनो रूप मे रहिते अछि, मुदा प्रभास कुमार चौधरीक कथा-उपन्यास मे आत्मकथा-तत्व जतेक मुखरताक संग अछि से मैथिलीक अन्य कोनो रचनाकारक कृति मे दृष्टिगत नहि होइत अछि। किछु गोटेक मानब छनि जे एकर एकटा कारण हुनक सामन्ती संस्कार छल । अपन खानदान आ परिवारक गप्प चिबा-चिबा कऽ करैत रहब आ एहि तरहें अपना केँ गौरवान्वित करबाक बाट बनबैत रहब एहि प्रकारक पृष्ठभूमि वला लोकक स्वाभाविक विशेषता थिक ।

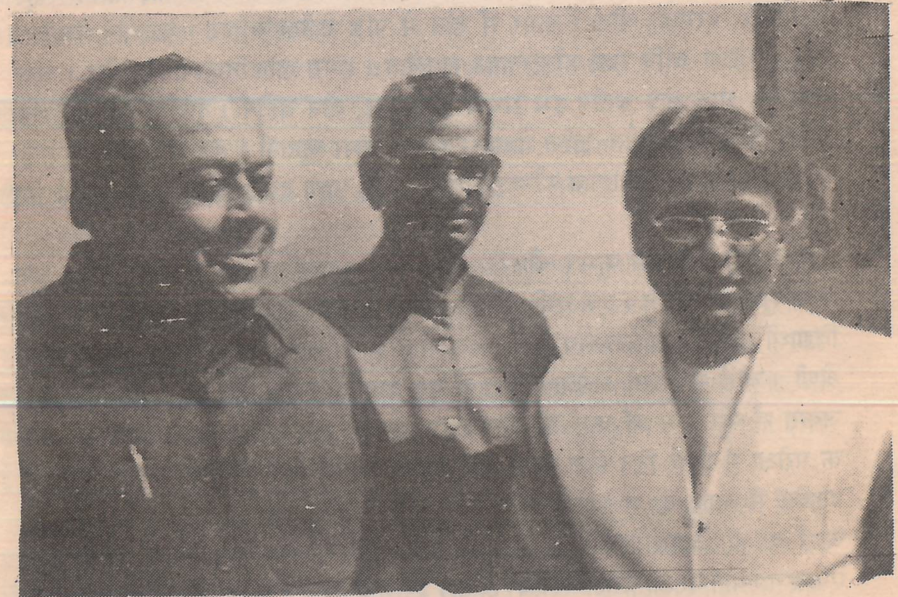
किन्तु, हमरा लगैत अछि जे हुनक रचनाक आत्मपरकताक ई व्याख्या यदि सत्यो अछि तऽ आंशिके रूप मे । हुनक जन्म भेल छलनि दरभंगा जिलाक पिण्डारुच गाम मे । एहि गामक इतिहास कोनो से पुरान नहि अछि । गोरौल स्टेशन लग एकटा गाम अछि परमगढ़ । ओहि गाम मे एक व्यक्ति छलाह बलभद्र झा । हुमायूँ हिनका पर प्रसन्न भेलनि आ चौधरीक उपाधि देलकनि । संगहि पिण्डारुच परगना सेहो भेटलनि। मुदा, ओहि गाममे जंगल छल । बलभद्र झाक प्रपौत्र जंगल केँ साफ करौलनि आ ओहिठाम जा कऽ बसलाह । झा सँ चौधरी तँ बनिए गेल छलाह, आब सामाजिक प्रतिष्ठाक बेगर्त्ता भेलनि । ई कमी पूरा कयलथिन नित्यानन्द चौधरी । धन सँ कुलीनता किनबाक भाँज ओ जनैत छलाह । मिथिलाक विद्वान ओ पाँजि-पाटिवला लोकसभ हुनक

कुटुम्ब-वर्ग मे आबि गेलथिन । पिण्डारुचक ई परिवार सम्पूर्ण मिथिला मे प्रशस्त भऽ गेल ।

पिण्डारुच गामक एही परिवार मे प्रभास कुमार चौधरीक जन्म भेल छलनि । सरकारी खाता मे हुनक जन्म-तिथि अछि 1941 इसवीक 2 जनवरी । मुदा, ई वास्तविक तिथि नहि अछि । जमीन्दारी कौशल मे हिनक पुरुषालोकनि नामी छलथिन आ तकरा प्रतापें समाजक रुखि अपना दिस मोड़बा मे सेहो जखन-तखन सफल भऽ गेलथिन, किन्तु सामाजिक स्थितिक दबाब सँ मुक्त भऽ कऽ काज करब हुनको सभक लेल संभव नहि छलनि । प्रभास कुमार चौधरीक जहिया जन्म भेलनि तहिया हुनक जमीन्दार पितामह रामचन्द्र चौधरीक मृत्यु भऽ गेल रहनि । पिता सुरेन्द्र चौधरी गामक हाई स्कूल मे प्रधानाध्यापक रहथिन । हुनका अपन पुत्र प्रभास कुमार चौधरीक पढ़ि-लिखि कऽ नीक नोकरी करबाक आवश्यकताक अनुभव भऽ गेल छलनि । ताहि दिन मिथिला मे जेहन शिक्षा-व्यवस्था छलैक आ संगहि नोकरीक जे बेगरता रहैक ताहि मे पिता आ शिक्षक लोकनि छात्रक जन्म-तिथि एहि तरहें लिखबैत छलाह जाहि सँ वयसगर भेलहु पर सरकारी नोकरी मे कोनो बाधा नहि होइक । ई मानसिकता एकटा प्रचलन बनि गेल । सुरेन्द्र चौधरी सेहो एकर अपवाद नहि छलाह । प्रभास कुमार चौधरीक जन्म भेलनि 19 जुलाइ 1939 कऽ, किन्तु प्रधानाध्यापक पिता स्कूल मे हुनक जन्म-तिथि लिखौलथिन लगभग डेढ़ साल कम कऽ कऽ । ओ गामक स्कूलक छात्र भऽ गेलाह। पं० शोभानन्द झा तथा पं. नन्दन मिश्र हुनक प्राइमरी शिक्षाक गुरु रहथिन । 1951 ई० मे गामक हाई स्कूल मे छठम क्लास मे नाम लिखयलनि आ दू वर्ष ओहि ठाम पढ़लाक बाद लहेरियासराय एम. एल. एकेडमी मे आबि गेलाह । ओहि स्कूल सँ 1957 मे मैट्रिकक परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह ।

एम. एल. एकेडमीक जीवन-काल प्रभास कुमार चौधरीक लेल अत्यधिक महत्वपूर्ण अछि । एहिठाम हुनक बहुविध प्रतिभाक विकास भेलनि । झिंगुर कुमर सनक अनुशासनप्रिय प्रधानाध्यापक भेटलथिन आ संगहि भेटलथिन चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' तथा ललितेश मिश्र (ललित) सदृश शिक्षक । हिनका लोकनिक सान्निध्य मे प्रभास कुमार चौधरीक भावी-जीवनक न्यों पड़लनि । अपन नोकरिहारा जीवन मे प्रभास कुमार चौधरी अनुशासनक दृढ़ पक्षधर होयबाक लेल जे प्रसिद्ध छलाह तकर बीआ एही समय मे बाओग भेल छल । श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' तथा ललितक प्रभाव सेहो हिनका पर कम नहि पड़लनि । एम. एल. एकेडमीक विद्यालय पत्रिका 'चेतना' मे हिनक रचना छपैत छलनि । हिन्दी मे हिनक कथा 'जहर के कीड़े' तथा मैथिली मे एकटा लेख 'मैथिलीक साहित्योद्यान मे मधुपक गुंजन' ओहि पत्रिकाक फाइल मे एखनहु भेटि

सकैत अछि । हिन्दी आ मैथिली मे तऽ सहजें अंग्रेजी आ संस्कृत मे सेहो हिनक रचना स्कूली पत्रिका मे छपैत छल । लेखनक अतिरिक्त वाद-विवाद प्रतियोगिता मे भाग लेब तथा ओतबे तत्परता सँ खेलाड़ी बनबाक प्रयास करब हिनक स्कूल जीवनक खास परिचय थिक । हिनक कथा आ उपन्यास मे स्कूली जीवनक कतेक चित्र आयल अछि। मुजफ्फरपुर मे आयोजित अन्तर्विद्यालय फुटबॉल प्रतियोगिता मे दरभंगा जिलाक खेलाड़ी मे एकटा ईहो छलाह । बॉलीबौल, टेनिस आ बैडमिंटन सेहो ई नीक खेलाइत रहथि। ब्रीज तथा शतरंजक माहिर खेलाड़ीक रूप मे हिनक बेस ख्याति छलनि । 1973 ई० मे बिहार राज्य ब्रीज प्रतियोगिता (मास्टर्स पेयर्स) मे हिनका दोसर स्थान प्राप्त भेल छलनि । तहिना सतरंजक खेलाड़ीक रूप मे भारतीय जीवन बीमा निगमक प्रतिनिधित्व ई कतेक ठाम कतेक बेर कयलनि । कहबाक तात्पर्य ई जे प्रभास कुमार चौधरीक बहुमुखी व्यक्तित्वक आधारशिला एम. एल. एकेडमी छल। ओहिठामक चारि वर्षक जीवन-काल हिनक सम्पूर्ण जीवनक पथ-प्रदर्शक बनि गेल।



(प्रभास, मोहन भारद्वाज, गंगेश गुंजन)

मैट्रिक कयलाक बाद प्रभास कुमार चौधरी पटना आबि गेलाह । पटना साइन्स कॉलेज मे नाम लिखौलनि । मुदा, अध्ययन सुचारु रूप सँ नहि चलि सकलनि । कारण

अनेक छल, जाहि मे दूटाक उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होयत । पहिल कारण छल परिवारक आर्थिक संकट आ दोसर छल हिनक शाह-खर्ची । हिनक पितामह जहिया मरलथिन तहिया हिनक पित्ती ओ पिताक माथ पर हजारो टाकाक कर्ज रहनि। घरक जर्जर आर्थिक स्थिति आ ताहि पर कर्ज सधयबाक दायित्व । परिणाम जैह होयबाक चाहैत छल सैह भेल । भू-सम्पत्ति मे तँ पितामहे हाथ लगा देने रहथिन, जे बचल छलनि से काज देलकनि । मुदा, बात एतहि समाप्त नहि भेल । खगल घरक जे अन्तिम परिणति होइत छैक सेहो भइये गेल–पित्ती आ पिता मे भिन्न-भिनाउज भऽ गेलनि । एहि स्थितिक पहिल शिकार भेलथिन पितामही । 'बाबी' कथा मे प्रभास कुमार चौधरी लिखने छथि–''एहि बँटवारा मे पिसा गेलि बाबी । ओकरा सम्पत्तिक तेहाइ भाग भेटलैक खोरिस मे । बिधवा छलि, सभक छुअल खाइतो नहि छलि । दिन मे अपने भानस करैत छलि आ राति मे दिनुके पानि भेल भात खा लैत छलि । परिवारक स्थिति आरो खराबे होइत गेलैक । काका हरदम अस्वस्थे । सरपट भाइ गामक स्कूल मे मास्टर, दरमाहा थोड़ । ऊपर सँ खेत मे पड़ि गेलैक बज्जर । कठमोन देब'बला खेत मे बीआ-बोनि सेहो डाँड़ लागऽ लगलैक । हमरा लोकनिक परिवार पैघ । दादा, माय आ आठ भाइ-बहीन हम सभ । पाँच भाइ, तीन बहीन । दादाक स्वास्थ्य सेहो ठीक नहि । माय खटैत-खटैत तबाह । ऊपरसँ हमर फुटानी । डेढ़ सय रुपैया बुकनी। पढ़ाइक खर्च, रहन-सहनक स्टैन्डर्ड बढ़ल जाइत, महग दवाइ-दारू....। परिवारक रीढ़ टूटि गेलैक ।''

रीढ़ तँ प्रभास कुमार चौधरीक सेहो चनकि गेलनि । ओ नोट लिखब आ प्रूफ पढ़ब शुरु क' देलनि । एक वर्षक बाद अर्थात् 1960 ई० मे आइ. ए. कयलनि । ''जाहि विद्यार्थी पर माय-बापक संग विद्यालयक सेहो आशा छलैक तकरा भेटलैक मात्र प्रथम श्रेणी । बोर्ड मे प्रथम अयबाक बात तँ दूर, स्कालरशिप पर्यन्त नहि भेटि सकलैक। जकरा सँ फेर सभ केँ कम-सँ-कम प्रथम श्रेणीक आशा छलैक, से आइ. एस. सी. क परीक्षा मे तेसरे दिन हौल छोड़ि वीरतापूर्वक वापस आबि गेल । दोसर वर्ष कहुना प्राइवेट सँ आइ. ए. मे प्रथम श्रेणी पाबि सकबा में समर्थ भेल । मुदा फेर सभ बेर जकाँ बी. ए. आनर्सक परीक्षा मे फर्स्ट-क्लास फर्स्टक सपना देखैत दोसर श्रेणी मे एगारहम स्थान पर जा बैसल'' (स्वप्नद्रष्टा) । राजनीतिशास्त्र मे आनर्स (1962) कयलाक बाद अध्ययनक क्रम किछु नियमित भेलनि । पढ़ाइए नहि, लेखन-कार्य सेहो गति पकड़लकनि । शुरु मे ई हिन्दी मे लिखैत छलाह । सेहो कविता बेसी, कथा कम। हिनक पहिल आ दोसर प्रकाशित कथा थिक 'धरती कुहरि उठल' (1956) तथा 'प्रतीक्षा' (1957) । ई दुनू कथा 'वैदेही' मे छपल अछि । मुदा, एकर रचना मूलत: हिन्दी मे

भेल छल । प्रसिद्ध कथाकार ललित अपन शिष्य केँ प्रोत्साहित करबाक उद्देश्य सँ एहि दुनू कथाक मैथिली रूपान्तर कयने रहथि आ तखन ओ मैथिली मे छपल छल। 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित 'बाहर इजोत: भीतर धूआँ' (1961) हिनक पहिल मौलिक मैथिली कथा थिक । तकरा बाद सुधांशु शेखर चौधरी सँ प्रोत्साहन पाबि ई मैथिली मे धुरझाड़ लिखऽ लगलाह ।

साहित्य लेखनक गति मे ई तीव्रता ओहिना नहि आयल छल । लगैत अछि, प्रभास कुमार चौधरी जीवन-रस जनलाक बादे साहित्य-रसक आस्वादन दिस ताहि तरहें अभिमुख भेलाह । पिण्डारुचे गामक श्री यमुनाधर मिश्रक बेटी सँ 27 नवम्बर, 1963 कऽ हिनक विवाह भेलनि । ई विवाह पटने मे भेल । गाम मे एकर जे प्रतिक्रिया भेल से एहि प्रकारक छल–

–''लव मैरिज कयलक अछि, प्रेम विवाह । पहिने सँ सट्टी-पट्टी हेतै, चारि बरख सँ ओकरे कॉलेज मे ओकरे बाप सँ कर्ज लऽ कऽ पढ़ैत छलैक । तकरे बदला मे जबर्दस्ती बिआह करा लेलकैक ।

–लड़कीक मामा कॉलेज मे बड़का प्रोफेसर छैक। एम. ए. मे नीक क्लास देया देतैक ।

–से सभ किछु ने ! पहिने सँ लटपट छलैक । बाइस वर्षक धाकड़ि मौगी छैक । कोनो नीक-बेजाय भऽ गेल हेतैक तकरे मार्जन लेल ई विवाह कयने छैक'' (जसमन्ती) ।

एहि सभ प्रतिक्रियाक विस्तार मे जयबाक आवश्यकता नहि अछि, मुदा एतेक धरि अवश्ये जे प्रभास कुमार चौधरीक विवाह पिताक इच्छाक अनुकूल नहि भेलनि। माय महादेव झाक बेटी छलथिन आ तें बेटाक वियाह छोट मे होयबाक दुख हुनको छलनि । मुदा, मायक ममता बेटाक सात खून माफ करबाक शक्ति रखैत अछि आ तें ओ उग्र नहि भेलीह । पिता मुदा एहि प्रहार केँ नहि सहि सकलथिन । हुनका लेल ई एकटा दुर्घटना छल ।

सर-सम्बन्धी आ गाम-घरक लोक केँ जे बुझबाक छलैक से बुझलक, किन्तु प्रभास कुमार चौधरी वैह कयलनि जे हुनक इच्छा छलनि । जाति-पाँजिक बन्धन आ कि पैघ-छोटक केवाड़ हुनक रास्ता नहि रोकि सकल । ओ अपन बाट अपनहि तकलनि। बाट ताकि तऽ लेलनि, किन्तु ओहि पर चलब ओतेक आसान नहि छल । 1964 ई. मे जखन ओ एम. ए. कयलनि तखन पिता बनि गेल छलाह । दायित्व बढ़ि गेल छलनि। संयोगे कहबाक चाही जे एम. ए. करिते के. के. एम कालेज, जमुइ मे व्याख्याता पद पर नियुक्ति भ' गेलनि । तखने इतिहास मे सेहो एम. ए. (1966 ई०) कयलनि । किन्तु,

नियुक्ति अस्थायी रहनि, आ प्रभासजी ओतऽ रहि नहि सकलाह । सत पूछी तऽ से नीके भेलनि । ओही वर्ष (1966 ई.) जीवन बीमा निगमक अखिल भारतीय प्रतियोगिता मे सफल भऽ गेलाह । ट्रेनिंग भेलनि नागपुर मे । प्रथम श्रेणीक पदाधिकारीक रूप मे पहिल पदस्थापन पटना मे भेलनि ।

जाहि वर्ष प्रभास कुमार चौधरीक पहिल सन्तानक जन्म भेलनि ताही वर्ष हुनक पहिल पोथी सेहो छपलनि– 'नव घर उठय पुरान घर खसय' । एहि मे हिनक तहिया धरि प्रकाशित एगारहटा कथा संकलित अछि । एहि मे दसटा कथा 'मिथिला मिहिर' मे छपल छल । एकटा कथा 'अभिव्यंजना' मे प्रकाशित भेल रहय जकर शीर्षक पोथी मे बदलि देल गेल । ओ छल 'मुक्ति' नामक कथा । यैह कथा बनि गेल 'नव घर उठय पुरान घर खसय' । ई संग्रह प्रभास कुमार चौधरीक साहित्य-लेखनक क्षेत्र मे एकटा प्रस्थान-विन्दु बनि गेल । एहि सँ पूर्व हिनक लेखनक भाषा तथा विधा निश्चित नहि छल । कहबाक चाही जे मैथिली सँ बेसी रुचि हिन्दीए-लेखन दिस छलनि । 'कथा-प्रभास'क लेखकीय वक्तव्य मे ओ लिखने छथि–''सातम दशकक आरम्भक संग हमर नियमित कथा-लेखन प्रारम्भ भेल । ....दादा हिन्दी मे कविता लिखैत छलाह, हमहूँ हिन्दिए मे शुरु कयलहुँ ।...1964 धरि हिन्दी मैथिली मे कथाक संग हिन्दी मे कवितो प्रकाशित होइत रहल । मुदा हमरा लागल जे हमरा लेल उपयुक्त विधा चुनि लेबाक बेर आबि गेल छल आ हम कथा विधा केँ बेसी उपयुक्त मानलहुँ ।'' स्पष्ट अछि जे एहि निर्णय पर पहुँचबा मे 'नवघर उठय पुरान घर खसय' केर महत्त्वपूर्ण भूमिका छल । मैथिली कथा-साहित्य मे प्रभास कुमार चौधरीक एहि प्रारम्भिक कथा-संग्रहक जे महत्व हो, हिनक लेखन-जीवन पर एकर प्रभाव दूरगामी भेल । कथाकारक रूप मे ओ स्थापित भऽ गेलाह । किन्तु, एहि कथा-संग्रहक संग एक विडम्बना सेहो अछि । एकर कभर-पृष्ठ पर प्रभास कुमार चौधरीक परिचय दैत कहल गेल अछि–''प्रभास कुमार चौधरी माने विरोधाभासक साक्षात् उदाहरण । एक दिस राजसी मनोवृत्ति, दोसर दिस स्वावलम्बिताक हेतु घनघोर श्रम ! प्रतिभाक एहन धनी जे अल्पे समय मे स्वनामधन्य । छात्र-जीवन रहितो उत्तरदायित्वक प्रति साकांक्ष ।'' हिनका सम्बन्ध मे ई टिप्पणी सुधांशु शेखर चौधरी 1962 मे कयने रहथि जकरा एहिठाम दोहराओल गेल । मुदा, हमरा लेल विचारणीय विन्दु ई नहि अछि जे उक्त टिप्पणी के–कहिया कयने रहथि । देखबाक बात ई थिक जे की ई उक्ति सही अछि ? की प्रभास कुमार चौधरी वस्तुत: विरोधाभासक प्रतिमूर्त्ति छलाह ?

ऊपर सँ देखला पर एहने लगैत अछि । अन्तरंग परिचयक अभाव मे एहन भ्रम होयब अस्वाभाविक नहि थिक । ई बात सही अछि जे हिनक जन्म जमीन्दार कुल मे भेल छलनि । किन्तु, से तँ इतिहास थिक । एहि लेल ई दोषिओ नहि छथि । दोषी होइतथि तखन जखन अपन जीवन आ लेखन मे जमीन्दारी करितथि । मुदा, ताहि लेल व्यक्ति ओ रचनाकार प्रभास कुमार चौधरी केँ बिटिया कऽ देखब आ जानब जरूरी अछि । ओ फ्रेजर रोड पर भूजा फँकैत भेटि जाइत छलाह अथवा फाइव स्टार होटलक पार्टी सँ कोका कोला पीबि कऽ चलि अबैत छलाह से कोनो तेहन बात नहि छल। पैघ बात प्राय: ईहो नहि छल जे रक्त-सम्बन्धी सँ लऽ कऽ गामक बन्धु-बान्धव धरि केँ, साहित्यकार मित्रमंडली सँ लऽ कऽ कार्यालयक सहकर्मी धरि केँ कर्ज लऽ कऽ पैंच दैत छलाह । एहि सभसँ बेसी ध्यान देबाक बात ई अछि जे हिनक समस्त परिचित लोकक मन मे एक प्रकारक आश्वस्ति रहैत छलैक । ओ निश्चिन्त रहैत छल जे जरूरति पड़ला पर यदि केओ संग देत तँ ओ प्रभास कुमार चौधरी हेताह । हम अनेक गोटेक मुँहे एहन आश्वस्ति-उक्ति सुनने छी, तकरा प्रमाणीकृत होइत देखने छी। मुदा, तकर विवरण मे हम नहि जायब । हम जांय चाहब हिनक लेखनक रास्ता ध'क' । कहि चुकल छी जे प्रभास कुमार चौधरीक रचना मे आत्मकथा-तत्वक प्रचुरता अछि । एहि प्रसंग हम एक एहन रचनाक उल्लेख करब जे हिनक अन्तिम लेखन थिक। ओ अपूर्ण अछि । ओकर शीर्षक अछि 'दादा' । हम सभ जनैत छी जे अपन पिता केँ ओ 'दादा' कहैत छलाह । हुनक कविता-संग्रह छपयबाक नेयार प्रभासजी बहुत दिनसँ करैत छलाह । मुदा, से कार्यान्वित नहि भऽ पबैत रहनि । अन्तत: फरवरी, 1998 मे ओ एकरा छपयबाक निश्चय कयलनि आ पटना आबि पाण्डुलिपि हमरा दऽ देलनि। हम प्रेस मे दऽ देलियैक । 22 फरवरी 1998 कऽ भोर मे कलकत्ता सँ हुनक फोन आयल आ एहि पोथीक प्रसंग सेहो बहुत गप्प भेल। पोथीक नाम की राखल जाय, परिशिष्ट मे 'जसमन्ती' आ 'पिता' कथा देल जाय वा नहि, आदि-आदि । तखन ओ उक्त पोथीक भूमिका पढ़ि कऽ सुना देलनि । कहलनि–'एखन लिखिए रहल छी । चारिम पृष्ठ मे छी । मोन भेल जे अहाँ केँ सुना दी, तें बिच्चे मे सुना रहल छी । एकर नाम हम 'दादा' देलियैक अछि । 'पिता' सँ आगाँक बात एहि मे रहतैक । साँझुका प्लेन सँ हम आबि रहल छी, सोझे अहीं ओहिठाम आयब । प्रेसवला केँ बजा कऽ रखने रहबैक । देरी भऽ जाय तैयो अहाँ जागल रहब ।''

साँझ मे ओ नहि अयलाह । आयल हुनक मृत्यु-समाचार । मृत्यु सँ किछु घंटा पहिने फोन पर ओतेक काल धरि ओ की सभ कहने रहथि से सभटा बिसरि गेल। आबो मोन नहि पड़ैत अछि । मुदा, ओहि अपूर्ण आलेख केँ आब जखन पढ़ैत छी तखन अपन परिवारक सम्बन्ध मे हुनक ई विवरण ध्यान खींचैत अछि–''दादा केँ अन्तिम समय नहि देखलियनि । सुभाषक गरा सँ उतरी लऽ श्राद्ध कयलियनि आ द्वादशाह दिन चुमाओन काल बिलखैत अपन चारू भाइक आ चारू छोट बहिनक माथ पर हाथ

रखैत मोने-मोन कहलियनि–नहि कानह । बाप तऽ खाली हमर मरल छथि। तोरा सभ लेल तऽ हम छी । हम छी एखन ।

"आ आइ सभ अपन-अपन जगह पर स्वस्थ-सानन्द छथि । प्रतिभा आ इभाक विवाह दादाक जीवने काल मे भऽ गेल छलनि । विभा आ सुप्रभा सेहो सासुर गेलीह। प्रतिभाक बिआह ग्यारहम वर्ष मे आ इभाक बारहम मे भेल रहनि । विभाक विवाह मैट्रिक पास कयला पर करौलियनि आ सुप्रभाक एम. ए. । चारू भाइ शिक्षा सम्पन्न कयलनि आ अपन-अपन काज मे लागल छथि ।...हमर दू बेटी सासुर गेलीह आ दू बेटी आ दुनू छोट बेटा संग रहैत छथि । पत्नी नहि रहलीह । 1995 क आठ जुलाइ कें ओहो संग छोड़ि देलनि । तीस पार कयलहुँ तऽ पिता छोड़ि गेलाह आ पचास पार कयलहुँ (पचपन) तऽ पत्नी छोड़ि गेलीह ।...."



(प्रभास जी अपन माय आ चारू सहोदर भायक संग)

मृत्यु दिन प्रभासजी अपन परिवारक इतिवृत्त कथा, अपन व्यक्तिगत जीवनक लेखा-जोखा एहि रूपें प्रस्तुत कयलनि । आलेख अपूर्ण वाक्य पर छूटल अछि आ आगाँ की लिखितथि से कहब कठिन अछि । किन्तु, एकटा बात हमरा बुझाइत अछि। प्रभासजीक ईहो कथा एहि प्रकारक अन्य कथा जकाँ केवल आत्मचरित बनि कऽ नहि रहैत । हिनक बाबी, जसमन्ती, पिता अथवा एहि कोटिक अन्य कथाक संग एकटा दुर्घटना ई भेल अछि जे ओ सभ आत्मकथाक लघुरूप मात्र बूझल जा रहल अछि आ ओकर जे मूल कथ्य छैक

से कतिया गेलैक अछि । बाबी राजरानी जकाँ सासुर आयल छलीह आ हुनक पालकीक ऊपर मे सोनाक कलश छलैक से बात मुख्य नहि अछि। प्रभासजी कहऽ ई चाहैत छथि जे एहन सामन्ती जीवनवला लोकक सेहो आइ केहन दुर्गति छैक । ओकर चिकित्सा आ कि मृत्यु-शय्या लेल सय टाकाक कर्जक कहुना जोगाड़ भऽ जाइत छैक तऽ सैह बहुत । तहिना 'जसमन्ती' अथवा 'पिता' कथा मे सेहो गामक वर्त्तमान कें देखल गेल अछि । आजुक गाम भौतिक रूप सँ तँ दुरहाल अछिए, ओहिठामक सामाजिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यन बेसी चिन्तनीय थिक। पहिने प्राय: सभ गाम मे एहन लोक होइत छलाह जे सार्वजनिक जीवन जिबैत रहथि। सौंसे गामक सुख-दुखक खोज-खबरि लेब, ओकर चिन्ता आ निदान मे लागल रहब हुनक स्वभाव होइत छलनि । 'पिता'क ई पीढ़ी आब समाप्त भेल जा रहल अछि । समष्टि-चिन्ता करऽवला मानसिकता मरि रहल अछि । प्रभास कुमार चौधरीकें मुदा एहने पिताक प्रेरणा सँ लिखबाक ऊर्जा भेटैत छनि । 'पिता' तँ एकटा प्रतीक छथि–समष्टि-चेतनाक । प्रभास कुमार चौधरी अपन कथाक प्रसंग लिखने छथि– "हम अपन लेखन मे सभ दिन किछु नव कहबाक चेष्टा करैत आयल छी–मध्यवर्गीय यथा- स्थिति सँ जनवादी यथार्थक चित्रण धरिक अपन कथा-यात्रा मे ।...तें आशा करैत छी जे एहि सदीक अन्तिम दशक मे एहन किछु लिखि सकब जे आइधरि नहि लिखि सकलहुँ–नव सदीक आगमन सँ पूर्वक दशकक लोक आ ओकर जिनगीक कथा ।" हम सभ जनैत छी जे प्रभास कुमार चौधरीक इच्छा-शक्ति केहन दृढ़ छलनि । परिवारक अधिकांश लोकक अनिच्छाक बादो ओ स्वेच्छा सँ बिआह करबा में नहि हिचकिचयलाह। तहिना मिथिला वा बिहार सँ बाहरक पत्र-पत्रिका मे हिन्दी-रचनाक प्रकाशन सँ भेटैत यश-लाभ कें छोड़ि कऽ मैथिली कथा-लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह । ई सभ हिनक इच्छा-शक्तिएक नहि, निर्द्वन्द्व आत्म-ज्ञानक परिचायक थिक । तें प्रभासजीक उक्त कथन फोंक नहि जाइत से हम सभ विश्वास कऽ सकैत छी । हुनक अन्तिम प्रकाशित कथा 'अष्टावक्रक शेष कथा' मे तकर संकेतो भेटैत अछि । ई कथा कनेक फसरल अछि, बन्हन ढील छैक, मुदा बात ओएह अछि । ई कथा पढ़ि कऽ हमरा हुनक एकटा दोसर कथा मोन पड़ि गेल–'अबैत जाइत' । ई कथा ओ 1973 ई. मे लिखने रहथि। ओहू कथा मे गामक एकटा एहने चरित्रक प्रसंग अछि । मुदा, ओ कथा व्यक्ति पर समाप्त होइत अछि जखन कि 'अष्टावक्रक शेष कथा' मे व्यष्टि सँ समष्टि दिस जयबाक इच्छा स्पष्ट अछि । ई बात भिन्न थिक जे एहि इच्छाक कार्यान्वयन कथा मे कतेक सफलतापूर्वक भेल अछि ताहि पर विचार कयल जाय, मुदा प्रभासजीक **ई इच्छा** एहि कथा मे जोर मारने छनि ताहि मे सन्देह नहि । पिताक प्रभाव कें अपन सार्वजनिक चेतनाक धरोहरि बना कऽ ओ राखऽ चाहैत छलाह से धरि निश्चित ।

ओ जे नहि लिखलनि ताहि पर की विचार कयल जाय । जे लिखलनि अछि, पहिने ताहि पर ध्यान दी से नीक । आ तखन हुनके एकटा वाक्य हमरा बेर-बेर मोन पड़ैत अछि–"मृत्यु हमर व्यक्तिक नियति अछि, हमर रचनाकारक नहि ।"

('अभिशप्त युगपुरुष' नामक पोथीक एकटा संक्षिप्त अंश)



तारानन्द वियोगी

प्रभास माने सार्थक सृजनात्मक मंचक मैनेजर

1 जनवरी 1997 कें हमरा लोकनि कलकत्ता मे रही–हम, अशोक आ रमेश। ओहि दिन साँझ कें हमरा लोकनि अलीपुर पहुँचलहुँ, जतय जजेज कोर्ट रोड मे प्रभास जीक डेरा छनि । एही डेरा मे 28-29 दिसंबर 1996 कें 'सगर राति दीप जरय' आ आन अनेक प्रासंगिक आयोजन भेल छलैक–राजकमल जयन्ती, राजमोहन जीक सम्मान, कथा-परिचर्चा ।

हमरा लोकनिक पहुँचलाक बड़ी कालक बाद प्रभासजी डेरा घुरल छलाह । हमरा लोकनि नववर्षक मंगलकामना देलियनि । आ, हमरा सभक आत्मीय अभिनन्दन सँ ओ ततेक अभिभूत भेलाह जे अपन बेडरूम मे बैसाय अपन टटका लिखल कथा अद्‌भुत उछाह आ उल्लास सँ सुनब' लगलाह । प्रभासजीक जीवन्तताक ओ स्मरणीय क्षण छलनि । नवतुरिया-सुलभ वेग हुनक उत्साह मे छलनि । हुनक कथा-पाठक स्वर कहैत छल जे हमरा लोकनिक ओ कतेक समीप छथि ।

प्रभास जीक यैह विशेषता हमरा सभ दिन सँ रोचक आ मोहक लागैत रहल अछि। आयु आ बोध जेना-जेना बढ़ैत छैक, हम सभ देखैत आयल छी जे तेना-तेना लेखक मे जिज्ञासा आ उत्साह कम भेल जाइत छैक । जेना-जेना लेखक गरिमा-पूर्ण भेल जाइए, तेना-तेना सतह सँ, काँचपन सँ आ एही सभ कारणें नवतुरिया सँ दूर भेल जाइए । प्रभास जी तकरा रोकबाक सायास चेष्टा करैत रहलाह अछि । एहन किछु तत्त्व हुनका संस्कारो मे छनि । हुनक सम्पर्क मे अयने बेर-बेर लागैत रहैत छैक जे बाबी आ पिता सत्ते एहि आदमीक श्वास मे बसि रहलैक अछि–आइ धरि ।

कथाक शीर्षक छल–पतिबरता । विशाल कथा छल–काया मे सेहो आ कथ्यक दृष्टि सँ सेहो । प्रभास जी ई काज बहुत कयलनि अछि । एहन-एहन कथ्यक कथा ओ मैथिली कें देलनि अछि जे मैथिली कथा-साहित्यक परिपक्वता बढ़ौलक अछि। ई बात भिन्न जे अधिसंख्य पाठक-लेखक तामझामे मे ओझरा क' बौखि जाइए आ हा हन्त हन्त ! कथाक कथ्य हुनक बोध कें आ प्रज्ञा कें स्पर्शो नहि क' पबैए । दुखद

तँ ई थिक जे एहनो लेखक-आलोचक लोकनि साहित्य कें बुझबाक दाबी रहरहाँ करैत रहैत छथि । ई मैथिलिए मे हो !

तँ, प्रभासजी जखन ओ कथा पूरा कयलनि तखनहि सँ हमरा मोन मे कुलबुली मचल रहय जे हुनका सँ थोड़े खुसफैल सँ गप करी–हुनक बोध पर, दृष्टिकोण पर हुनक संस्कार-निर्माण आ रचना-प्रक्रिया पर ।

तीन जनवरीक दूपहर एहि लेल तय भेल । ओ अपन कार्यालय मे छलाह । अपन कार्य-व्यस्तता कें ओ प्राय: निघटा लेने हेताह हमरा दुआरे, हमरा लोकनि साँझ धरि निश्चिन्त गप करैत रहलहुँ ।

एहि गपक प्रसंग सेहो एक बात । हम चाहने रही जे गप जँ करबे करब तँ कनेक परम्परागत इन्टरभ्यूक टच द' देल जाय । हुनका सँ हम टेपरिकॉर्डरक जिज्ञासा कयने रही। ओ कहने छलाह जे हुनक ऑफिस मे टेपरिकॉर्डर छनि । हम कैसेट अपना संग कीनि क' ल' गेल रही । हम गेलहुँ । कने-मने आहे-माहे भेल । आ ओ सुरूह भ' गेलाह । हम टेपरिकॉर्डरक मोन पाड़लियनि । ओ घंटी बजौलनि । पी. ए. तत्क्षण नहि आबि सकल । गप आगां बढ़ैत गेल । हम फेर मोन पाड़लियनि । फेर पी. ए. बजाओल गेलाह । गप मुदा बढ़ैत गेल । हुनक अभिव्यक्ति मे ततेक वेग छल, ततेक क्षिप्रता जे टेपरिकॉर्डर प्रसंगे सँ गायब भ' गेल । आ ओ जे हम चाहने रही जे गप-सप कें कनेक परम्परागत इन्टरभ्यूक टच देब, एकदम्म संभव नहि भ' सकैत छल जेना यात्रीजीक संग संभव नहि भ' सकैत अछि ।

गपक प्रारम्भ पतिबरता-आख्यान सँ भेल छल ।

–देखू, ई चुमनी जे अछि, एहि कथाक नायिका–ओकरा लग मे कोनो शील नहि वचल छैक । समाजक दृष्टि मे कोनहु चरित्र नहि छैक ओकरा मे । बिना ब्याहक एक परपुरुखक संग भागि आयल अछि । शारीरिक रूप सँ कुरूप तँ अछिये । मुदा, केहन मोहक व्यक्तित्व छैक ओकर, कतेक कुण्ठा-रहित । केहन दीप्त चेतना छैक ओकर !

–ई बात तँ अहाँक सम्पूर्ण रचनाशीलताक संग अछि भाइ ! एही एक बात कें कहबाक लेल तँ लागैए जेना अहाँ एतेक रास कथा-उपन्यास रचलहुँ अछि । प्रत्येक मनुक्ख अपन समस्त भौतिक-ऐहिक अपूर्णता आ विकलांगताक अछैत सुन्दर आ सम्पूर्ण अछि !

आ, हुनका मुखाकृति पर जेना सत्य सुनबाक सन्तोष छिटकलनि ।

–मुदा, मैथिलीक लेखक लोकनि मे अनुभवक व्यापकता के घनघोर अभाव छैक। अप्पन लिखबाक काल मे तँ से देखार पड़िते छैक, दोसर कें पढ़बा काल मे सेहो पिण्ड नहि छोड़ैत छैक ।

–हँ भाइ, से तँ होइतहि छैक । लोक अपने भय सँ दोसरक साहस केँ नपैत अछि।

–दू गोट कथा मे जँ एक रंग चौहद्दी देखार पड़ि जाय, बस हल्ला मचि जायत–रिपीटेसन, रिपीटेसन ! एक्के बात लिखने जा रहल छथि ! चौहद्दी देखि क' कथ्यक अनुमान कयल जाय, तँ तकरा की कहबै ? हमरा तँ जहिया लागि जायत जे एक्के अनुभव केँ हम बेर बेर दोहराब' लागल छी, हम लिखब बन्न क' देब ।

जेना बीज ओगरिक' राखैत अछि अपन भीतर विशाल वृक्ष, प्रभास जी अपना भीतर अपन बाबी, अपन पिता, अपन कका, अपन गाम बाध-बोन, गाम मे बीतल नेनपनक ओहि समय केँ ओगरि क' राखने छथि । हुनक व्यक्तित्व आ संस्कारक बुनाबटि केर परिपेक्ष्य मे जँ हम हुनक रचना सभक अध्ययन करैत छी तँ हुनक रचना सभ हमरा एक विराट ब्रह्माण्डीय घटना-सन लगैए । पिता हुनका जन्म देलथिन आ आब लगातार ओ अपन पिताकेँ जन्म देने जा रहल छथि । बाबी आ कका हुनका रचलथिन आ आब ओ बाबी आ ककाकेँ रचि रहल छथि । अन्ततः प्रत्येक लेखक अपन आत्मकेर सूक्ष्म उद्घाटन द्वारा यैह करबाक चेष्टा करैत अछि ।





(जीवन बीमा निगम के अधिकारी प्रभास)

प्रिय अशोक भाइ, एहि लेखकेँ हम कलकत्ता सँ घुरलाक बाद लिखब प्रारम्भ कयने रही । मुदा, जानि नहि कोन कारणें–एकर शैली पसिन्न नहि पड़बाक कारण अथवा अत्यन्त व्यस्तता आदिक कारण ई लेख पूरा नहि क' सकलहुँ । आब एकरा लिख' बैसलहुँ अछि तँ प्रभास जी नहि छथि । प्रभास जीक नहि होयब पर विश्वास करब हमरा लेल कठिन बनल अछि, यद्यपि कि हम नेनमति नहि छी । कतेक रास योजना सभ छलनि हुनका लग, जाहि सभ पर ओ एक्कहि संग काज करबा मे भिड़ल छलाह । ई समय हुनक जीवनक सभ सँ सक्रिय समय छलनि । ओहुना हुनक जीवन अत्यन्त सक्रिय जीवन छलनि आ मृत्यु केँ जे ओ वरण कयलनि, तकरो एक सक्रिय मृत्यु कहल जेतैक । हमरा लोकनि केँ अपनहुँ लेल एहने मृत्युक कामना करबाक चाही, कारण क्यो एक महापुरुख भाखि गेलाह अछि जे किछु गोटे मरि तँ जाइ छथि बहुत-बहुत पहिनहि, अपन जीवनहि मे, अन्त्येष्टि हुनक बहुत बाद मे कयल जाइत अछि । अहूँ प्राय: मानब जे अक्रिय जीवन सँ वरेण्य थिक सक्रिय मृत्यु। मुदा, प्रभास जीक मृत्यु एक आर प्रश्न हमरा लोकनि लग ठाढ़ कयलक अछि । हमरा लोकनि लग जँ बहुत काज अछि, बहुत योजना अछि, तँ मात्र एहीटा सँ ई सिद्ध नहि भ' जाइछ जे हमरा सभकेँ अपन काज-अपन योजना केँ पूरा करबाक लेल पर्याप्त समय भेटिये जायत। कहियो कोनो दिन ऑफिस सँ घुरैत काल, जलखै करैत काल, बस मे चढ़ैत काल मृत्यु मुस्कियाइत चलि औतीह आ एहि देस-दुनिआ केँ 'टाटा' कहि विदा भ' जाय पड़त । तें समस्या कने कम उत्पन्न कयल जाय, झंझटि कने कम पसारल जाय, आ कार्य–निष्पादनक गति थोड़े आर बढ़ाओल जाय ।

ओहि दिन प्रभासजी सँ बहुत रास गप भेल रहय । तीन प्रकारक प्रश्न सभ हुनका सँ हम पुछने रहियनि हुनक रचना-प्रक्रियाक मादे, वैचारिक बुनाबटक मादे आ समकालीन मैथिली लेखनक मादे । सभक उत्तर ओ देने छलाह । हुनक उत्तर मे वेग बहुत छलनि आ ओ बहुत डिटेल मे जाइत छलाह । हुनक उत्तर-शैली मे एक विशिष्ट प्रकारक अभिव्यक्ति-आतुरता हम साफ अनुभव कयने रही, जकर दूटा अर्थ हमरा बुझायल रहय । एक तँ ई जे नव पीढ़ी धरि अपन पक्ष, अपन उत्तराधिकार सम्पूर्णताक संग पहुँचेबाक कामना हुनका भीतर रहनि । आ दोसर कदाचित् बेसी महत्त्वपूर्ण बात ई जे हुनका शिकाइत रहनि जे हुनका सही तरीका सँ बूझल नहि गेलनि । ई शिकाइत बहुत जायज छल । 1956 मे जखन हुनक पहिल हिन्दी कथा (गटर के कीड़े) छपल छलनि, आ तकरा बाद हिन्दीक तमाम प्रतिष्ठित पत्रिका सभ मे छपैत 1961 अबैत-अबैत ओ जते प्रतिष्ठा हिन्दी मे अर्जित क' लेने रहथि, आइ धरि जँ ओ लगातार हिन्दी मे काज करैत रहितथि तँ भारतीय साहित्य मे हुनक स्थान आ सम्मान आइ किछु आर हेबाक चाहैत छलनि । मैथिली अपना सक्क भरि हुनका पूरा सम्मान देलकनि, मुदा

ई बात सभ क्यो मानताह जे एहि सम्मानक पाछां हुनक रचनाशीलताक संज्ञान आ स्वीकृति कम, मैथिलीक लेल हुनका द्वारा कयल जाइबला सेवा बेसी जवाबदेह कारण छल। ओना मैथिली मे रचनाशीलताक स्वीकृति भेटबे किनका कयलनि अछि ? एक तँ जड़, संवेदनहीन आ अनुपस्थित आम मैथिल पाठकक लेल हमरा लोकनि रचना क' रहल छी आ दोसर जँ सतर्क बुद्धिजीवी पाठक अछियो कतहु कोनो कोन मे, तँ मैथिलीक ई महन्थ लोकनि तेहन भयावह घटाटोप रचने छथि जे मैथिली रचना कैँ गंभीरता सँ लेबा मे आइयो सतर्क मैथिल बुद्धिजीवी कैँ सन्देह होइत रहैत छनि । तँ से अशोक भाइ, प्रभास जीक मृत्यु हमरा लोकनि लग कयल जा सक' बला एकटा काज ईहो बढ़ा गेल अछि जे सार्थक रचनाशीलता कैँ संज्ञान आ स्वीकृति भेटबा योग्य माहौल बनेबाक लेल हमरा लोकनि संघर्ष करी ।

प्रभास जी हमरा बतौने रहथि जे हुनक पिता कवि रहथिन । आशुकविक गुण हुनका मे छलनि । हुनका कविता लिखैत देखि आ हुनक कविता सभ कैँ सूनि, प्रभास जी कैँ काव्य-लेखनक प्रेरणा प्राय: आयुक दसम वर्ष मे भेल छलनि । हुनका गाम मे विद्यापति पिंडारूछ नाट्यकला परिषद् नामक एक नाट्य-संस्था छल, जे वर्ष मे चारिटा नाटकक मंचन करैत छल । हुनक पिता नाटकक नीक कलाकार छलखिन आ प्रभास जी जे नाटकक मंच पर पहिल बेर उतरल छलाह, से अपन पितेक संग। हुनका घर मे एक समृद्ध घरेलू पुस्तकालय छलनि, जाहि मे सँ रवीन्द्र, शरत् आ प्रेमचन्दक सम्पूर्ण सेट ओ नेनपनहि मे पढ़ि गेल छलाह। सुधा, माधुरी आदि पत्रिका नियमित रूप सँ हुनका ओतय आबनि, जकर ओ अध्ययन कयल करथि । अपन घरेलू पुस्तकालयक प्रसंग बड़ कचोटक संग ओ हमरा कहने छलाह जे 'ओहि समृद्ध पुस्तकालय कैँ समाप्त करबाक श्रेय हमरे अछि ।' भेल ई रहैक जे नौजवान भेला पर ओ अपना गाम मे चन्दा झाक नाम पर एक ग्रामीण पुस्तकालयक स्थापना नवजुवक सभक सहयोग सँ करबौने छलाह । ओही मे अपन घरेलू पुस्तकालयक सभटा पोथी द' देलखिन। दुख व्यक्त करैत ओ बतौने रहथि-'ग्रामीण पुस्तकालयक बोर्ड एखनहु लटकले छैक, मुदा पोथी सभ समाप्त भ' गेलैक ।' एहि सँ पता चलैत अछि जे पछिला तीस बरस मे मिथिलाक प्रतिष्ठित गाम सभ कतेक विकास कयलक अछि ।

प्रभास जीक पितृव्य रहथिन त्रिलोचन चौधरी । ओ ताहि युग मे इतिहासक एम. ए. छलाह, मुदा कहियो गाम सँ बहरेलाह नहि, कारण ओ 'भेलेनचुरेरिएन' (सदति काल अपना कैँ बीमार अनुभव कर' बला) व्यक्ति छलाह । हुनक चारि गोट शौक रहनि-नोसि, माछ, शतरंज आ किताब पढ़ब । अत्यन्त कृतज्ञताक संग प्रभासजी बतौने छलाह जे 'ककाक शौक सभ मे सँ अन्तिम दू हम ग्रहण कयलहुँ ।' से, पोथी पढ़ब अन्तधरि हुनक व्यसन बनल रहलनि। पढ़बाक स्पीड हुनक ततेक तेज रहनि से चकित होयबा जोग बात छल ।

एहि गप-सपक क्रम मे प्रभास जी अपन हिन्दी कविता सभक किछु पांती सभ हमरा सुनौने छलाह, जे कि ताहि दिन मे (1953-60 क जबाना मे) बहुत चर्चित भेल रहनि ।

हुनक पहिल प्रकाशित कविता 'प्रश्न' केर ई पांती देखी-

क्या अवनि पर स्वर्ग को तुम ला सकोगे ?
प्यार के तुम गीत प्यारे गा चुके हो ।
बन भँवरा तुम फूल पर मँडरा चुके हो ।
रंग के उर से लिपट तुम गीत रस के गा सकोगे?

तहिना, एक आन कविताक पांती ओ सुनौलनि-

मरण की रागिनी मे नव सृजन का गीत बजता है
नहीं क्या बीज लघु निज को गला बटवृक्ष बन जाता ।
नहीं तम चीर क्या दिनमान किरण वितान तन जाता
विरह की बाँसुरी मे नव सृजन का गीत बजता है ।
रूको मत सोचकर यह पंथ मे आँधी चलेगी क्या
रुको मत सोचकर यह दीप की बाती छलेगी क्या
विजय के चाँद को लख ज्वार मे सागर गरजता है ।

आ एक अत्यन्त लोकप्रिय भेल कविताक ई पांती ओ सुनौने छलाह-

महापर्व यह दीप जल रहे नगर-नगर में
गूँज रहे नेताओं के स्वर डगर-डगर मे
किन्तु शहीदों की मजार पर आज अंधेरा
राजघाट पर अनाचार ने डाला डेरा ॥

एहि काव्य-पंक्ति सभ मे हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे सत्यक नवीन पक्षक उद्घाटन सकारात्मक भावदशा मे करबाक प्रति हुनका रुचि रहनि आ दोसर बात ईहो जे हुनक अभिव्यक्ति मे पर्याप्त प्रवाह आ गति रहनि ।

मुदा, जेना कि प्रभास जी गछने छलाह, 1956 अबैत-अबैत हुनका लागय लागल छलनि जे कविता हुनक विधा नहि थिकनि आ वस्तुतः हुनक गति फिक्शन मे छनि। एकर बाद सँ क्रमशः कथा-लेखन मे ओ दत्तचित्त होइत गेलाह । प्रारम्भिक दौर मे ओ सभ कथू हिन्दिए मे लिखैत छलाह । ओ बहुत आदरक संग स्मरण कयने रहथि जे हिन्दी सँ मैथिली मे आनबाक श्रेय ललित जी आ अमर जी कैँ छनि । मैथिली मे प्रकाशित हुनक प्रथम दू कथा-'धरती कुहरि उठल' आ 'प्रतीक्षा'-मूल रूप मे हिन्दीए मे लिखल गेल छल, जकर मैथिली अनुवाद ललित जी कयने छलाह । हँ,

एहि सँ पूर्व 'मैथिली साहित्य मे मधुपक गुंजन' शीर्षक हुनक एक निबंध 1953 मे सरस्वती विद्यालय पत्रिका मे छपल रहनि, जाहि पत्रिकाक ओ छात्र-प्रतिनिधि संपादक छलाह।

प्रभास जी कहने रहथि जे हुनक प्रायः सभ कथा मैथिलीक संग-संग अनूदित भ' क' हिन्दी मे छपैत छल । किछु कथा तँ एहनो छल, जकर प्रकाशन मैथिली मे होयबा सँ पूर्वहि ओकर हिन्दी अनुवाद प्रकाशित भ' गेल छल । जेना 'प्राचीन वृत्त की नई परिधि' पहिने छपल, 'नव घर उठय पुरान घर खसय' ('मुक्ति' शीर्षक सँ) बाद मे । एहन अन्यान्य कथा सभ छल-'छूत का रोग' (छुतहा रोग), तंग घेरों के जख्मी अरमान (स्वप्नद्रष्टा) आदि ।

एहि किछु काल मे बहुत तरहक बहुत रास बात प्रभास जी कहि गेल रहथि। जेना ई बात कि हुनक रचनाशीलताक विकासक तीन चरण रहलनि- (1) गाम सँ लहेरियासराय धरिक प्रारम्भिक काल, जखन कि ओ 'बाबी'क वातावरण केँ भोगलनि (2) साइंस कालेज आ मिन्टो हॉस्टलक 57-64 क सक्रियताक भरल ज़बाना, जखन कि ओ बिहार सँ बाहर प्रकाशित होब' लगलाह आ (3) 65-66 मे के. के. एम. कालेज जमुई मे प्रोफेसरी सँ ल' क' 1966 मे जीवन-बीमा निगम मे प्रवेश धरिक ज़बाना, जखन कि ओ निर्णायक रूप सँ अपन गन्तव्य चुनलनि। ओ अपन घर-परिवारक वृत्तान्त सुनाब' लागल रहथि जे कोना हुमायूँ सँ हुनक पुरखा लोकनि केँ जागीर भेटल रहनि। कालान्तर मे चौधरी परिवारक तीन फरीक भेल छल, जाहि मे सँ जमीन्दारी मे सवा पांच आना हिनका परिवारक हिस्सा छलनि । ओ खिस्सा कहलनि जे कोना धानुक, मल्लाह, मुसलमान आदि बाहर सँ आनि क' बसाओल गेलाह, कोना एक आना भरि सम्पत्ति ब्राह्मण-हितार्थ उपयोग होइत छलैक । हद छलाह ओ। ओ हमरा सोखा शंभुनाथक खिस्सा कहलनि जे कि हुनक गृहदेवता छलखिन आ कोयला महराजक जे कि कुलदेवता छलखिन ।

हम पुछने रहियनि-भाइ यौ, गाम जतेक गँहीर धसल अछि अहाँक प्राण मे, आब, एत्ते बरस सँ परदेश रहैत-रहैत एहन तँ नहि लागैए जे मिथिला अनचिन्हार भेल जाइए ?

ओ तुरन्त गछि लेने रहथि जे हँ, थोड़े अनचिन्हार तँ जरूर लागैए । एहन पीढ़ी सामने आयल अछि जकर बाबा गोड़ लागैए आ पोता सीना तानिक' आगां द' क' चलि जाइए । बुझबाक कोशिश करैत छी जे एना कोन-कोन कारण सँ संभव भेल अछि । एकपेरिया जे छल से टूटल-भांगल खरंजा मे बदलि गेल, से तँ एक दिस। लोकक भोजन बदललैए, कपड़ा-लत्ता बदललैए; मुदा गामक परम्पराक जे सुगन्धि छल, से लुप्त भेलैए । से, गाम थोड़े अनचिन्हार तँ जरूर लागैए ।

मुदा, अपन गाम, अतीतक अपन गाम सँ ओ कोना आत्मीय रूप सँ जुड़ल रहथि, से चकित होयबा जोग बात छल । ओ कहने रहथि जे अगिला 100 कथा आ 50 टा उपन्यास जे हुनका लिखबाक रहतनि तँ अपना गाम सँ बहार जयबाक बेगरता हुनका नहि पड़तनि। ओ अपन योजना सभ हमरा बतौने छलाह । कहने रहथि जे उपन्यास-लेखनक 'सेकेंड इनिंग (दोसर खेप) शुरू करबा लेल हम एकदम तैयार छी । आगामी छव गोट उपन्यासक रूपरेखा तैयार अछि । हमर पहिल जे उपन्यास होयत से एक हजार पृष्ठक महत्वाकांक्षी प्रयोगशील उपन्यास होयत । ओ बेर-बेर ई बात बाजथि जे अपन लेखन मे रिपीटेसन हम नहि होब' देबैक । जहिया लागल जे अपना केँ दोहरा रहल छी, लिखब बन्न क' देब । अपन पुरना इमेज केँ तोड़िक' नव इमेज बनेबाक चेष्टा मे हम लागल छी । एहि मे एखन धरि कतेक सफल भेलहुँ अछि से तँ पाठक लोकनि बतौताह, मुदा आगां हम अपनहुँ ई कहि सकब जे हम सफल भेलहुँ अछि । आब ओ कोना कहि सकताह ?

अपन रचना-प्रक्रियाक मादे ओ बतौने रहथि जे अपन कोनहु विचार केँ प्रतिबिम्बित करबाक हेतु उदाहरणक तौर पर कथाक रचना करब हमरा पार नहि लागैए । पहिने हमरा 'कथा' आबैए, तकर बादे ओहि मे 'कथ्य' केँ संशिलिष्ट क' पाबै छी । ओ बहुत साफ-साफ कहने रहथि जे कथा विचारक संवाहक थिक, ने कि विचारक उदाहरण। मन्दाकिनीक नांगट होयब अपना मे एक कथा थिक, कथ्यक पॉरप्रेक्ष्य मे कैक आयाम सँ एकरा पकड़ल जा सकैत छैक, आ तकर किछु स्वतंत्रता तँ पाठको केँ भेटबाक चाही । अपन अनेक कथा-रचनाक प्रक्रिया बता क' एहि बात केँ ओ स्पष्ट कयने छलाह । ओ कहने रहथि जे प्रासंगिक आ सहयोगी कथा तत्त्व बहुत बेसी रहैए हमर कथा मे, से वस्तुतः हमर शैली थिक । हम हुनका पुछने रहियनि जे यश-लिप्सा, जे कि हरेक लेखक केँ रहैत छैक से अहाँक पूरा भेल कि नहि ? तकर बड़ा सटीक उत्तर दैत ओ कहने रहथि जे लिखब जे हम शुरू कयलहुँ से 1962 धरि हम सिर्फ देखाउँस मे लेखन कयलहुँ । 1969-70 धरि अपन परिचय केँ पोख्ता करबाक हेतु आ यश हेतु लिखलहुँ । ताहि क्रम केँ अहाँ आर थोड़े आगू धरि मानि ल' सकैत छी। मुदा, आब जे हम लिखैत छी, तकरा पाछां कोनो बाहरी कारण मानब हमरा कठिन लागैए। आब तँ हम अपन आन्तरिक आवश्यकतावश लिखैत छी । अपन आत्मविस्तार हेतु लिखैत छी ।

❑❑

आब प्रभास जी चलि गेलाह अछि । ओ जे गेलाह से हुनका संग अनेक-अनेक अध्याय सभ, अनेक-अनेक स्मरणीय प्रयास सभ चलि गेल अछि । ओँ जे मुइलाह भाइ, से हमरा लागैए जे हुनकहि संग हमरो लोकनि थोड़े-थोड़े मरि गेलहुँ अछि । हुनका-सन कर्मण्य आ सतर्क-सक्रिय लोकक मृत्यु कदापि एक हुनकेटा मृत्यु नहि भ' सकैत अछि । ओना तँ हमरा लोकनि ततेक विगलित भावुक लोकनिक प्रजाति मे सँ छी जे हरेक व्यक्तिक मृत्यु केँ ऐतिहासिक सन्दर्भ मे अपूरणीय क्षति साबित करबाक वचन दैत रहैत छी, मुदा ककरो मृत्यु कोना अपूरणीय क्षति भेल करैत छैक,

से प्रभास जीक मृत्यु सँ ज्ञात होइत अछि । खास क' क' एहन समय मे जखन कि मैथिली साहित्य एक निर्णायक दौर सँ गुजरि रहल अछि, आ जखन कि हुनक आ हुनका सन लोकक बहुत-बहुत आवश्यकता छैक ।

प्रभास जी बहुत रास काजक श्रीगणेश क'क' छोड़ि गेलाह अछि । एहि सभ काज केँ परिणति धरि पहुँचेबा लेल आधा दर्जन कर्मठ लोकक बेगरता छैक । 'सगर राति दीप जरय' अभियान, जकर कि एक तरहें ओ चौकस गार्जियन छलाह, तकरा आगां बढ़ेबा मे हमरा लोकनि दत्तचित्त होइ । एक गोटे 'कथा-दिशा'क प्रकाशनक भार लेथु, जनवरी 98 सँ जकर नियमित प्रकाशनक ओ वचन द' गेलाह अछि । 'युवा लेखन'क आजीवन सचिव बनबा लेल आब के आगां औताह, सेहो एक मुद्दा थिक । की पता छल जे एहि संस्थाक रजत जयन्तिये वर्ष धरि सचिवत्व निमाहबा लेल हमर आर्ज वन सचिव तैयार छलाह ?

एक काज थिक 'प्रवासी' । एक काज थिक ओहि संकलन सभक प्रकाशन, जकर ओ घोषणा क' गेलाह अछि, आ जकरा सन-सन आन अनेक-अनेक योजना हुनका मोन मे छलनि । मुदा सभ सँ पैघ चैलेंज जे कि ओ छोड़ि गेलाह अछि, से ई जे सार्थक सृजनात्मक मंचक अगिला मैनेजर आब के हेताह, जकरा लेल कि मैथिली साहित्यक ई शताब्दी हुनका कहियो बिसरि नहि सकतनि !



शिवशंकर श्रीनिवास

प्रभासजीक कथाक बात-विचार

प्रभास कुमार चौधरी एहन नाम थिक, जिनका सँ मैथिली कथा साहित्य विभिन्न रूपें समृद्धि पौलक अछि । मैथिली कथा-साहित्यक विकासक जेहेन रङ अछि ओहि मे हिनक योगदान झलकैत अछि । तात्पर्य प्रभास मैथिली कथा-साहित्यक जरूरी नाम थिक, एहेन नाम जिनक कथाक अध्ययन बिना मैथिली कथाक अध्ययन पूर्ण नहि हैत ।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद मैथिली कथा नव भाव-भूमि तकलक आ विस्तार पौलक, ओहि पीढ़ीक बादक पीढ़ी मे प्रभासजी कथा मे शिल्प ओ विषय व्यापकता दृष्टिएँ अद्भुत कार्य कयलनि, जे प्रशस्य ओ विवेचनीय अछि ।

हिनक शिल्प अर्थात् कथाक रचाव अपन खास ढङ क अछि । हिनक कथा कोनो सरल रेखा जकाँ नहि चलैत अछि, अपितु कथाक बीच वा कोनो भाग सँ विषय उठा ई कथाकार अपन कथा के आदि आ अन्त करैत छथि । कथाक बीच मे मूल बात के पुष्ट करैत कतेको क्षण वा मनो-विश्लेषणात्मक विस्तार भेटत, जकर खूबी एहि सँ नापल जा सकैत अछि जे ओकरा सँ मूलबात के कोनो मतलब नहि बुझाइतो अनावश्यक नहि जरूरी बुझायत ।

क्रमश: हिनक कथा कहैत अछि जे कथा लेल ई आवश्यक नहि अछि जे मात्र घटनाक विस्तार मे कथ्य के पूर्ण कयल जाय । तात्पर्य जे ई कथाके कोनो एक क्षण सङ बान्हल रहब जरूरी नहि बूझैत छथि । हिनक कथा कहैत अछि जे कथा लेल समय-सीमा वा एक क्षणक महत्त्व नहि एक सूत्रात्मक होयबाक महत्व अछि जे अन्त तक अपन कथ्य के छिड़िआय नहि दीअय । तें ई कथाकार कोनो घटना कहैत जीवनक कोनो क्षण मे जा अपन कथा पूर्ण करैत छथि, जे गुण आजुक पीढ़ीक कथाकारक कथा मे बेस विस्तार पौलक अछि, किन्तु अपन पीढ़ी तक मे ई कथाकार

विशेष लक्षित होइत छथि । एक क्षण सँ विभिन्न क्षण मे जायब आ पुन: ओहि क्षण मे घुमि आयब हिनक कथाक खास अन्दाज अछि । एहि बीच अन्य भाषाक कथा मे औपन्यासिक फलक देखबाक इच्छा व्यक्त कयल जा रहलैक अछि, किन्तु एते अवश्य जे बात उपन्यास आ कथा कैँ फुटक' बैत अछि ओ त' आवश्यके अछि । ओहिमे सभसँ पहिने ई जे उपन्यास मे विभिन्न क्षण सँ बात उठैत एक क्षण पर अबैत अछि आ कथा मे एक क्षण सँ विभिन्न क्षण मे जा एक क्षण मे घुरि आबय । ई अन्तरक अतिरिक्त कतेको अन्तर त' स्वाभाविक अछि किन्तु उपन्यासक जे फलक विषय मे कहल अछि ओ ई जे कथा मे जखन मनोविश्लेषण घनीभूत हैत त' बीतल क्षणक विस्तार सँ घटना जुड़ि सकैए (जे उपन्यासक फलक रूप से परिचित अछि) आ कथा मे औपन्यासिक फलकक बोध कयल जा सकैत अछि । एकर कथात्मकता के अर्थात् कथा-घटना के विश्वसनीय ओ सहृदय बनेबाक लेल आवश्यक मानल जा रहल अछि। से ई बात सातम दशकक कथाकार प्रभासजीक कथा मे आयब विशेष महत्व रखैत अछि । एकर पुष्टि हेतु हिनक 'बाबी' कथा पर ध्यान देल जाय । कथाकार द्विरागमनक' घर अयलाक बाद जाहि कचोटक संग 'बाबी' के मन पाड़ैत कथा कहैत छथि ओहि मे बाबी सङ जुड़ाबक प्रसङ हुनक बालपन (कथाकारक) मे चल जाइत अछि । हुनक ओ प्रसङ आर जे किछु कहय, मुदा बहुत मधुर रूपें बाबी-पौत्रक जुड़ाब संग वर्त्तमान संवेदना के सक्षम ओ विश्वसनीय अभिव्यक्ति देबा मे पूरक होइत अछि ।

एहिना हिनक कोनो कथा हो हिनक कथा मे एक क्षण नहि एक सूत्रात्मकताक महत्त्व भेटत । एकरा स्पष्ट करक हेतु एना कहि सकैत छी जे ई कथाकार कोनो कथाक घटना के ओकर प्रसङ कैँ उठौताह ओकर वर्णन करैत अर्थात् घटना सँ घटना के जोड़ैत ओना ओकर वर्णन कर' लगता जे भिन्न रूपें अपना सङ बान्हि लेत किन्तु ओकर समाप्ति सङ जे घटना आरम्भ भेल रहत ओकरा सङ अविछिन्न लागत, ततबे नहि कथा प्रसङक मर्मभेदी शक्ति के बढ़ा देत । हिनक ई विशेषता हिनक कथा के नव ओ खास शिल्प प्रदान करैत अछि । उदाहरणस्वरूप पुन: कोनो एक कथा के उठाओल जा सकैत अछि । जेना हिनक कथा अछि 'एकालाप' । उक्त कथाक प्रसङ एकटा चिट्ठी सँ बनैत अछि । एहन चिट्ठी जकर अक्षर ककरो पढ़ल नहि होइत छैक । कथा नायक ओहि पत्रकैँ स्वयं पढ' लगैत छथि, किन्तु नहि पढ़ि पबैत छथि । तखने हुनक नजरि पिताक फोटो पर जाइत छनि आ सभटा अन्हार फाटि जाइ छनि ।' मन पड़ैत छथिन पिता आ पिता सङ हुनक उत्तरदायित्वक बीच विभिन्न संघर्ष ओ राग-अनुराग। ओहि मन पाड़व मे हुनका ई बोध भ' जाइ छनि जे ई पत्र हुनक (नायकक) सीवी पीसीक छियनि आ तखन ओ दकचल सन अक्षर पढ़लो भ' जाइत छनि । जे आखर

पहिने अक्षर रूप मे पढ़ल नहि होइत छनि ओ आखर आत्मीयताक बोध मे सभटा पढ़ा जाइत छनि। ई बात मानवीय संबन्धक प्रवलता के कहैत, संकेत दैत अछि जे मनुष्य ओना जे वस्तु देखैत अछि ओकर देखब मे फर्क पड़ि जाइत छैक जखन ओ वस्तु ओकर संवेदना के छुबैत छैक । तँ एहि रूपें चिट्ठी के पढ़ि कथा-नायक सीवी पीसीक जीवन-वृतान्त कहैत कोनो सुआसीनक नैहर ओ सासुरक बीच डोलैत जीवन के कहैत, कथाके कतेको क्षण सँ बुलाक' अनैत अछि आ अन्त मे पुन: आबि जाइत अछि ओ पत्र आ तखन पाठक के ओहि पत्रक मार्मिकता स्पष्ट होइत अछि । बुझबा मे अबैत अछि जे विभिन्न बीतल क्षणक प्रसङ एहि कथाक लेल कतेक महत्वपूर्ण छल । एहि रूपें प्रभासजीक कथा मे विभिन्न क्षणसँ कोनो खास क्षणके जोड़बाक महत्व वा खूबी साफ होइत अछि ।

प्रभासजीक कथाक खूबी उक्त रूपें शिल्पक स्तर पर खास अछिये, विषयक स्तर पर सेहो अद्भुत विभिन्नताक विस्तार लेने अछि, जाहि मे भेटत विषयक सङ कतेको एहन अनुपम ओ खास चरित्र घटना जे मानवीय जीवनक विभिन्न पट खोलबा मे सार्थक होइत अछि । ई कथाकार अपन जीवन ओ समाज के बहुत संवेदित भ' गौर कयलनि अछि आ जे बात हुनका मानव विकासमे सहायक ओ बाधक भेल बुझेलनि अछि ओकरा उठा प्रगतिक वाट देवाक प्रयास कयलनि अछि, एहन वाट जे जीवन बोधक हो, सामाजिक न्याय देयक हो ।

प्रभासजीक व्यक्तिगत जीवनके, जे नहियो जनैत हैत ओ हिनक कथा सँ बूझत जे ई कथाकार एहन परिवार मे जन्म लेने छलाह जे पैघ जमीन्दारक छल होयत, जकर आर्थिक स्थिति समयक प्रभावमे घटैत सन रहल होयतैक । हिनक कथा पढ़ैत काल जे कथा पारिवारिक सुख-दुखक कथा अछि वा गामक कथा अछि जाहि मे नायक हम रूप मे घटनाके अवलोकित क' रहल अछि, लागत जे घटैत सामन्तक घर कथा थिक वा ओहि घर मे एकटा प्रगतिशील युवक घटनामे रमि कथा कहि रहल अछि। हिनक कथा मे ई बात ध्यान देबाक थिक जे विभिन्न तरहक कथा मे एक्के वर्गक जातिक दलित अछि एक्के तरहक ओकर शोषक । ओ ओहि शोषणक विरोध मे, सामन्ती परिवारक चालि-वृत्त पर व्यंग करैत जे स्वर शोषणक अन्त चाहैत अछि ओ ओहि परिवार सँ कोनो ने कोनो रूपे मतलब रखैत अछि जे सामन्तवर्ग अछि, आ एहि रूप मे ई स्वर कथाकारक व्यक्तिगत जीवन के समक्ष आनि दैत अछि । एहि रूपक कथाकार के व्यक्तिगत प्रयासो करैत, कथा मध्यमे, देखल जा सकैत अछि । एहि लेल ओ कएकटा पात्रक पूर्व परिचय कोष्ठ मे द' अतिरिक्त सँ सेहो कहैत देखल जाइत छथि । हिनक कथा मे देखब जे कतेको विभिन्न कथाक पात्रक नाम एक्के अछि जे पूर्वकथाक बातके

पुष्ट करैत लागत । जेना पिता जिनका कथाकार दादा कहैत छथिन हेड मास्टर छथि तँ सभ कथा मे ओ वैह छथि । बाबी छथि, हुनक वेटी सीवी-पीसी छथि जिनक सासुर सौराठ छनि । बाबीक जेठ बहीन, बड़की बाबी थिकी जे बाल विधवा भ' वहीनिक ओहिठाम रहि गेलीह । एहिना अन्य पात्र मे जेना 'मलाहक टोल' मे फुलेसरी बुढ़िया वताहि अछि आ गवैत अछि 'हाली-हाली वरिसू इन्नर देवता तँ दोसरो कथा मे (इन्द्रधनुष) वैह वतही अछि आ ओ ओहिना करैत ओहिना गवैत अछि । एहिना कथा पात्र मे मानस, आलोक, मुनरा, वजन्ता, गुलमा, किसना भेटत । सभ पात्रक सङ घटले घटनो के यदि जोड़' चाहब तँ जुड़ि जायत । जे अद्‌भुत अछि । आ महत्वपूर्ण एहू अर्थ मे जे कथाकार अपन कथा-क्षेत्रके अपन भूमि, अपन जीवन आ समाज सँ जोड़ि ओकर प्रत्येक कोन के परिचित राख' चाहैत छथि । ओना त' कोनो रचना सँ लेखकीय दृष्टि बूझल जा सकैत अछि आ ओहि दृष्टिक मुताबिक ओहि लेखकक जीवन-क्रम । ओकरा एना कहू जे लेखकक जन्म केहेन परिवार मे भेल ओकर आर्थिक स्थिति, लालन-पालन ओ शैक्षणिक विकास आदि के दू टूक क' बूझब असंभव जँ नहि तँ कठिन अवश्य अछि । एहि कठिनता के प्रभासजीक कथा सहंज करैत अछि आ हिनक व्यक्तिकेँ समक्ष रखबा मे समर्थ होइत अछि । उक्त रूपें मैथिली साहित्य मे एना लेखन सँ लेखकके नहि व्यक्ति के सेहो बूझब, से एना बूझब जे लागत एहि लेखकक आत्मकथा अंश हो आ से लगितो ओ मात्र कथा रहत अद्‌भुत अछि । एहि रूपें प्रभास जी अपन पूर्व कथाकार सँ भिन्न छथि सैह नहि ओ कथा शिल्प, विषय आदि मे अपन खास पहिचान बनेबा मे समर्थ ओ महत्वपूर्ण छथि ।

मैथिली कथा मे प्रभासजी सँ पहिने जमीन्दारक आतंक, ओकर अत्याचार, ओहि अत्याचारक विरूद्ध संघर्षक कथा छल, किन्तु प्रभासजी ओहि सँ भिन्न जमीन्दारक सुख-दुख, अह्‌म, भय, ओ करूणा के समक्ष अनैत अर्थात् ओकर अन्दरुनी परिचय सङ ओकर शोषण-वृत्त पर आघात करैत कथा कहैत छथि । पूर्व कथा मे जमीन्दारक मात्र शोषक रूप समक्ष अबैत छल, वा कहू सामन्ती मनोवृत्तिक व्याख्या होइत छल किन्तु प्रभासजी ओकर शोषकक रूप सँ अतिरिक्त ओकर भीतरक उथल-पुथल सँ जाहि मे राग-अनुराग, सौख्य-मनोरथ, प्रेम-घृणा, भय-आक्रोश सभ अछि परिचय करबैत छथि ।

स्वतंत्रताक बाद एहि देश मे जमीन्दारी उन्मूलन भेल । मिथिला मे सेहो एकर असरि भेलैक । मिथिलाक सभसँ पैघ जमीन्दार दरभंगा महराज सँ ल' क' हुनक अधीन छोट-छोट जमीन्दारो एकर प्रभाव मे पड़लाह । 1960-61क वाद तँ एत' कतेको भूमि-संघर्षक घटना घटल । सर्वसाधारण सँ ल' क' सभ मे उन्मुक्त होयबाक भाव आयल । मार्क्सवादी सिद्धान्तक स्थापना हेतु कम्युनिष्ट आन्दोलन एहिठामक समाज मे राजनीतिक चेतना भरि रहल छल ।

दलित गोलबन्द भ' रहल छल, सामन्ती मनोवृत्ति पर बेर-बेर आघात पड़ि रहल छल । एहि सभक बीच ओ परिवार जे जमीन्दारी उपभोग मे जीव चुकल छल ओकर अन्दरूनी हालत केहेन छलैक से जानकारी हिनक कथा दैत अछि । जे जानकारी दैत ओकर मानवीय रूप सँ परिचय करबैत ओकर अह्‌म के समक्ष राखि ओहि पर विभिन्न रूपें चोट करैत अछि ।



(प्रभास जी टेलिफोन पर)

एहि रूपक हिनक कथा पढ़ैतकाल लागत जेना कथानायक ओहि जमीन्दार वा सामन्तक अन्दरक स्थिति ओ रूप के अनावृत्तक' रहल अछि । ओहि बीच सँ

ओकर आडम्बर ओ अहम् पर व्यंग करैत ओकर शोषकक रूप पर आघात करैत, शोषित मे वल. भरैत देखल जाइत अछि । कथा एहि रूप मे निश्चिते नव माटि पौलक अछि आ एकर फलक विस्तारित भेलए ।

हिनक कथा शोषित के आत्मीयता प्रदान करैत ओकरा अपन अस्तित्वक रक्षा मे सक्षम होयबाक शुभकामना ओ प्रेरणा दैत अछि । हिनक कथा दलित मे ओ आत्मविश्वास आ एकजुटताक कामना करैत जे ओकरा संघर्ष रस्ता मे टूट' नहि दैक ओ साकाञ्च रहय, ओकर आन्दोलन आर्द्राक मेघ जकां जमिक' बरिसय, इन्द्रधनुष ओकरा सोखि ने लैक । पानि सोखबा सँ मतलब जे आन्दोलन कोनो कुचक्र मे नहि फँसि जाय । एहि सन्दर्भ मे कथाकार सतर्क करैत छथि ।

'इन्द्रधनुष' कथा मे उक्त बात आयलए । कथानायक गाम आबि बुझलनि जे गाम बदलि रहलैए । दलित वर्ग एक जुट भ' रहल अछि । ओकरा लोकनिक एकजुटता सँ सामन्तवर्गक परिवार मे वा कहू कथा-नायक अपन परिवार मे भय आ आक्रोश पसरैत अनुभव करैत छथि ।

कथानायक ओकरा लोकनिक एकजुटताक ओ संघर्ष फलद होयबाक कामना मे गाम घूमैत छथि । अन्त मे अनुभव करैत छथि ई आन्दोलन इन्द्रधनुषी छियैक जाहि सँ कोनो फलक आशा करब व्यर्थ थिक, किन्तु नायक टूटै नहि छथि ओ अन्तो मे आशा करैत छथि जे सतीनाथ झा केँ जे ओकरा लोकनिक संघर्षके अपन स्वार्थक कुचक्रमे फँसा लेलकैक अछि, लतिया क' कातक' दैते आ संघर्ष के सही वाट पर ल' आनत ।

हिनक कथा आश्चर्य जे दुनू वर्ग के सचेत क' रहल अछि से एक दिस सामन्तवर्ग के ओकर अहम् ओ सामन्ती परिपाटी सँ उवारबाक हेतु आ दोसर दिस दलितके, ओकर अपन अस्तित्वक रक्षा हेतु ओ संघर्षक पथ पर कामयाब होयबाक हेतु ।

उक्त दुनू बात ओ बहुत साफ आ आत्मीयता सँ कहैत छथि । लेखक सामन्तवर्गक लोकके सतर्क क' के कहैत छथि जे हुनका अपन स्थिति बुझक चाही आ ओहि अनुकूल चलक चाही । हुनका बूझक चाही जे समाजक सभ एक थिक, सभक आदर होबक चाही । एहि वर्ग पर व्यंग करैत चेतबै छथि आ कहैत छथि, ''जमींदारी गेलनि, धनो-बीत गेलनि मुदा एखनो त' वैह सभ किछु कहबैत छथि । हुनके लोकनिक इज्जति छनि।टोलक लोक आ ओकर बेटी-पुतहुक इज्जति कोन ?' एहि वर्ग के चेतबैत ओ कर्मकाण्डक सेहो विरोध करैत छथि । कर्मकाण्डक विरोध हमरा जनैत सामन्तक विरोध थिक । गरीब लेल अर्थात् श्रमिक लेल कर्मकाण्डक कोन महत्त्व ? जकरा अपन जीवन चलेबाक छैक, बोनि सँ पारिवारिक निमहाता करबाक छैक ओ कर्मकाण्डी भ' कोना

रहि सकैए? जहिया कर्मकाण्डक जन्म भेल ओ राजाक अधीन सुरक्षित रहल आ राजा ओहि कारणे ओकरा सुरक्षित रखलक जे शासकीय दृष्टिक निर्वाह ओहि मे छलैक। जे से, किन्तु ओ कर्मकाण्डी मनस्थिति जखन आडम्बरी भ' जाय त' स्वस्थ भ' जीबो सकबा मे वाधक सिद्ध हैत । जमीन्दार लोकनि ओही आडम्बरी मनस्थिति मे जीव रहल छलाह, एहिठाम सचेत करैत लेखक कहैत छथि, 'बाबीक जीवित शरीर के मात्र सय रूपैया सङ सिमरिया घाट जाय पड़लैक तैं की ? ओकर मृत आत्माक शांति हेतु पाँच हजार खर्चक' भरि गामक भोज कोना नहि होयतैक ? बाबी अपन बुढ़ारी मे भूखल शरीर आ सुखाएल हड्डी लए अङने-अङने एक तामा चाउर पैंच मङलक तैं की? ओकर श्राद्ध मे एक हजार ब्राह्मण त' कचरि क' खयलकैक ।' ई व्यंग आडम्बरी मनस्थिति पर व्यङ करैत नव सामाजिक रचनाक माङ करैत अछि ।

अतः कथाकार जहिना जमीन्दार वर्गक वा कहू सामन्ती मनस्थितिके सामान्य धरातल पर अयबाक हेतु सचेत करैत छथि तहिना दलित वर्ग के अपन अस्तित्वक रक्षा लेल संगठित भ' एकजुटता सङ शोषणक विरूद्ध संघर्ष करबाक लेल प्रेरित करैत छथि ।

एहिठाम स्त्री (चाहे कोनो वर्गक हो) ओ दलित अछि । उपभोगक वस्तु बूझल जाइत अछि । एहन मनस्थिति मानैत रहल अछि जे उक्त वर्गके अपना मने जीबाक कोनो अधिकार नहि छैक । 'एकटा दुराचारक कथा' मे एहि बातक संकेत भेटैत अछि। पार्वती ओहि सामन्ती भनस्थिति रखनिहार वर्गक लाचार स्त्री थिक । जकरा देह पर विधवा भेलाक बाद ओहि वर्गक लोक द्वारा विभिन्न तरहें अत्याचार होइत छैक, किन्तु जखन पार्वती एहि वर्ग सँ निकलि अपन रक्षा लेल दलित वर्गक लोक मङना आङन आबि जाइए, ओ मङना के वरण कर' चाहैए त' कुकाण्ड भ' जाइत छैक । अपन उपभोगक वस्तु के बाहर भ' जयबा सँ सामन्ती वर्गक आगि भ' जायब आर की कहैत अछि ? ओकरा सभ के पार्वतीक रक्षाक चिन्ता नहि अपन उपभोग रूपी जीवक हरण भ' जयबाक चिन्ता छैक । लेखक साहस ओ संघर्षक बीच पार्बतीक ठोर पर हँसी अनैत छथि, वस्तुतः वैह हँसी सभक ठोर पर आबक चाही ताहि लेल संघर्ष आवश्यक छैक आ ओहि संघर्ष लेल लेखक एकजुटता आ धैर्यके आवश्यक बुझैत छथि ।

प्रभासजीक कथा मे भूमि-संघर्ष नहि अछि, हिनक कथा मे श्रमिक वर्ग एहि लेल संघर्ष नहि करैत अछि जे-'जमीन जोतय से जमीनक असली मालिक' थिक, अपितु ओ सभ अपन अस्तित्वक रक्षा लेल संघर्ष करैत अछि । ओ सभ पशुवत वा कहू वस्तु जकाँ अपन उपयोगक विरोध मे ठाढ़ होइत अछि । प्रभासजीक कथाकार सभक अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व वा कहू जीवनक हिमायती अछि । तें देखल गेल अछि

जे प्रभास जीक कथा मे बेसी सम्मानक रक्षा लेल संघर्ष भेल अछि । सामन्त लोकनि श्रमिक वर्ग पुरूषक श्रमक शोषण आ ओकरा लोकनिक स्त्रीक यौन शोषण करैत देखल जाइत छथि । दलित दुनू सँ अपन रक्षाक लेल सतर्क होइत अछि । एहि प्रभृतिक हिनक कथा मे 'टुस्सा आ वांझी', जगबाकाल, एकटा दुराचारक कथा, आगू मे ठाढ़ एकटा पछिला लोक, वजन्ताक पोता, रक्षक आदि अछि ।



(सगर राति दीप जरय (पैटघाट) मे भाषण करैत प्रभास । अध्यक्षता करैत प्रसिद्ध कथाकार उमानाथ झा)

एहि रूपक हिनक कथा दलितवर्गके प्रेरित करैत अछि, जीवनोत्थान हेतु सुनियोजित संघर्ष 'कर' कहैत अछि । कोनो संघर्ष जोश मे लपटाक' त्तहि रहि जाय

ताहि लेल धैर्य ओ अनुभवीक सहयोग लेबाक दिस संकेत करैत छथि । हिनक कथा 'आगू मे ठाढ़ एकटा पछिला लोक' मे जखन कलुआ अपन स्त्रीक यौन-शोषणक विरोध मे जमीन्दारक आगू ठाढ़ नहि भ' अपन अस्तित्वक रक्षा हेतु, ओहि लेल उपयुक्त वातावरण कायम करक हेतु आ सभसँ कहू सामाजिक ढाँचाक परिवर्त्तनक हेतु आन्दोलनक रूखि बनबैत अछि आ ओहि आन्दोलनक सभा मे जुटल भीड़ पुलिसक दमन सँ छिन्न-भिन्न होब' लगैत अछि त' सिरीचन ठाढ़ भ' ओकरा बचा लैत अछि । कथाक पाँती अछि जे 'सिरीचनक मुँह सँ सोराजी आन्दोलन मे सीखल शब्द बहरा रहल छलैक । भीड़ फेर सँ जुटि गेल छलैक आ सिरीचनक संग आगू बढ़ि रहल छलैक । सम्पूर्ण रूप सँ कथा सफल संघर्ष कामना करैत अनुभवीक सहयोग लेबाक बात कहैत अछि ।

'जगबाकाल' ओ 'टुस्सा आ वाँझी' एहन प्रभृतक कथा थिक जाहि मे संघर्ष तँ भेलए किन्तु ओ संघर्ष व्यवस्था परिवर्त्तनक बाट नहि पकड़ा सकल अछि, किन्तु कथाक संरचना अस्तित्वक रक्षा लेल संघर्ष के जरूरी बुझबैत एते अवश्य वोध करौलक अछि जे ओकर परिणाम चाहे जे हो, जरूरी अछि । 'बाढ़ि' कथा मे संघर्षक परिणाम स्पष्ट होइत अछि । दलित वर्गके सक्षम देखि कथाकार अनुभव करैत छथि "आब कोनो बाढ़ि एकरा सभके डुबा नहि सकतैक। कोनो मगरमच्छ एकरा सभके गीड़ि नै सकतैक । बाढ़ि सँ बचबाक वाट ई सभ अपने ताकि लेने अछि । एकरा ककरो मदति नहि चाहियैक । कथाकार दलित मे ओ संघर्ष आ क्षमता चाहैत छथि जे ओकरा स्वयं लेल योग्य बनबै । हिनक एहि रूपक कथा केँ जँ सुक्षमता सँ अध्ययन करब तँ अद्भुत रूप सँ ओ सभ समय संग संघर्षक सफलताक क्रमबद्ध विकास लागत । जहिया प्रभासजी लिखब प्रारंभ कयलनि तहिया सँ बाद मे समाजक स्थिति बदलैत गेलैक । एहि सभके हिनक कथा मे क्रमवद्ध रूपें देखल जा सकैत अछि । कथाकार परिवर्त्तन के बहुत उत्सुकता ओ सदइच्छा सँ हियौलनि अछि । ओ अनुभव कयलनि अछि जे वजन्ता कहियो किछु ने बाजल, मुदा 'वजन्ताक पोता' बजैए । समय ओ स्थितिक परिवर्त्तनक सङ ओकरा लग जे साहस अएलैए, एहि लेल जाहि क्षमताक विकास ओकरा मे भेलैए ओहि सभ बात दिस हिनक कथा ध्यान दीयबैत गेल अछि । दलित वर्ग मे आत्म सम्मानक भाव बढ़बाक विषय मे 'बजन्ताक पोता' कहैत अछि, 'जे हमरा मारत तकरा हम मारबै, मारि खा क' चरबाही नै करब हम ।' एहि तरहें हिनक कथा दलितवर्गक संघर्षक परिणाम के देखबैत ओकर उत्थानक इच्छा के प्रेरित करैत अछि आ जँ-जँ हिनक लेखन आगू बढ़ल तँ-तँ क्रमवद्ध विकासक बात जे कहलए ओ समक्ष अबैत गेलए । आ स्पष्ट भेलए जे दलितवर्गक समाङ 'टुस्सा आ बाँझी' मे 'बड़ी काल धरि वेहोश जकाँ सड़क पर पड़ल रहल, ओ आगू अपन 'रक्षक' भ' अपने ठाढ़ होइत अछि । आब वैह रक्षा लेल ताकि रहलए जकरा सँ रक्षा लेल ई वर्ग ठाढ़ भेल छल।

एहि रूपें हिनक कथाक विकास कहैत अछि जे उत्तरोत्तर दलितवर्ग केँ ठाढ़ होवक लेल समय उपयुक्त भ' रहलैक से ओकरा लोकनिक जगबासँ; एकजुटता सँ भेलैक अछि नहि त' सम्पूर्ण स्थिति पतनशील अछि । जे जतहि अछि संघर्षरत् अछि, 'सुरक्षित' नहि अछि । समाज मे घटित छोट-छोट घटना राजनीतिक रूप ल' लैत अछि। हिंसा ओ विध्वंस सँ राजनीति कयनिहार अर्थात् नेताक जन्म भ' रहलैक अछि । 'सुरक्षित' मे एही बातके देखाओल गेलए । 'ढेप' समाज मे सन्हिआएल राजनीतिक विद्रुपताक कथा थिक । शिक्षण संस्थान ओ कार्यालयक संस्कृति गड़बड़ा रहलैक अछि । देश मे कमजोर वर्गके उठेबाक लेल कोनो खास वर्षके ओहि कमजोर वर्गक नाम नामित करैत अछि, यथा-विकलांग, किन्तु सभ बात हास्यास्पद भ' जाइत अछि । देशक चारूकात एहन स्थिति अछि जे शान्त स्वभाव के विद्रोही बना रहल अछि । ओ विद्रोह सँ उचित रस्ता कायम भ' रहल अछि ।

पतनशील स्थिति सँ उबरबाक लेल, कोनो विद्रूपता सँ बचबाक लेल हिनक कथा विद्रोह के जरूरी मानलक अछि, किन्तु से मानितो हिनक कथाक मूल स्वर विद्रोह नहि थिक । हिनक कथाक मूल स्वर थिक मानवीय सम्बन्धक जुड़ाब । दिन-दिन लोक अपना मे लागि रहल अछि, अपनत्वक भाव लुप्त भ' रहलैक अछि । ओहि बीच हिनक कथा मनुष्यक प्रति जे मनुष्यक जुड़ाव छैक ओकरा मन पाड़ैत रहैत अछि। जाहि कथा मे एक वर्ग सँ दोसर वर्गक संघर्ष अछि । ओहू मे एहन स्थल अबैत अछि जाहिठाम सामाजिक सम्बन्ध वा कहू अपनत्वक भाव उभरि क' समक्ष अबैत अछि । सामाजिक वा पारिवारिक सम्बन्ध व्यवसायिक भ' गेल अछि ताहि परिप्रेक्ष्य मे हिनक कथा मानवीय सम्बन्धक कोमलतन्तु के तकैत अत्यन्त महत्वपूर्ण रूपें सम्बन्ध–भाव के जगवैत अछि। व्यवसायिक सम्बन्धक विद्रूपता हिनक 'उजाहि' कथा मे दृष्टि होइत अछि । एहि कथा मे नामी बाबू गाम आबि रहल छलाह आ अयलाह, सम्पूर्ण गाम हुनका मे लपटायल अछि, किएक तँ नामी बाबू सँ लोक किछु भेटबाक आशा क' रहल अछि । एहि गामक लालबाबू सँ कहियो एहिना आशा करै छल, तहिना एहने आव-भगत ओ पबै छलाह । आइ हुनका केओ ने पुछैत अछि । आइ हुनक स्नेह के लोक अवटेरि दैत अछि । लालबाबू मन मे जे टीस ओ क्षोभ जन्म लैत अछि ओ आजुक लोकक बनैत व्यवसायिक सम्बन्ध के देखार करैत अछि । एहि तरहें हिनक कथा मानवीय संवेदनाक क्षरणक स्थिति के खूब नीक सँ जनलक अछि । एकरा बचेबाक लेल, मानवीय अनुराग के जगेबामे हिनक कथा प्रेरकक काज कयलक अछि । कथा 'असाध्य' मे यैह देखाओल गेल अछि जे आत्मीयताक अभाव मे कोना आदमी क्लेशित-पीड़ित भ' जाइत अछि। वीरेन बाबू गाम मे रहैत छथि । गाम मे कृत्रि जीवन

छलैक, एहन जीवन सामूहिक होइत अछि । ओ जीवन टूटि गेलैक । कम्मे लोक गाम मे रह' लागल । सभ वाहर चल गेल । जे गाम मे रहैत छल ओहो अपना मे लागल छल । वीरेन लोकक आत्मीयताक अभाव मे बेचैन रहैत छलाह । भीतरे-भीतरे जरि रहल छलाह आ तें हुनका होइत छलनि जे बुखार अछि । ओ कनेको काल लेल लोकक सहानुभूति पयबाक लेल लोक के अपन नाड़ी देख' कहैत छलाह । लोक हुनक प्यास के किएक ने गेल ? तैं हुनक ताप केओ नहि बुझै छल । मनुक्ख मनुक्खक प्रति तखने संवेदनशील रहत जखन मनुष्य एक दोसराक लगीच रहैत जीवन बीतायत । तकर अभावक भयानक स्थिति दिस लेखक संकेत करैत छथि ।

प्रभासजीक प्रसिद्ध कथा अछि 'पिता' । एहि कथा मे कथाकार अपन लेखन मादे कहैत अपन गाम ओ पिता सङ जुड़ाबक कथा कहैत छथि आ से कहैत अपन भूमि सँ जुड़ाव के आवश्यक मानैत पिताक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत कहैत छथि–"आइ लगैत अछि जे तहिया यदि दादा नहि लिखितथि त' गाम हमरा सँ बीस बरख पूर्व छूटि गेल रहैत । सोरहम बरखमे गाम सँ बाहर आबि गेल रही । मुदा गाम आइ धरि अपरिचित नहि भेल अछि, ओहिना लग अछि अपन गुण-अवगुण संग ।" कथाकार आगू एहि कथा मे अपन कथाक विषय मे कहैत छथि–"हमर कथा मे सँ एक्केटा विन्दु छल, ओकरे चारूकात छोट-छोट बहुत रास विन्दु...माय, पत्नी, भाइ-वहीन, धिया-पूता, गाम-घर आ संसार....एहि सभसँ पैघ विन्दु छलाह–छलाह नहि छथि, आइयो वैह सभसँ पैघ विन्दु छथि । दादा नहि छथि, ओ विन्दु अछि हमर सम्पूर्ण लेखक आ व्यक्ति-सामर्थ्यक विन्दु । ओ सभ दिन रहत ।' आ से वस्तुतः हिनक कथा मे अछि । तैं हिनक कोनो कथा हो जाहि मे स्वतंत्रताक बाद लोकक आशा-आकांक्षा कोना विफल भ' गेल तकरवात हो, वा कथा कोनो पतनक स्थिति के देखार करैत हो सभ मे मानवीय जुड़ावक प्रति साकाञ्च कयल गेल अछि । अपन भूमि ओ लोकक प्रति अद्भुत रूपें हिनक कथा मे जुड़ाब अछि जे सभ बात मानवीय संबन्ध के कवच प्रदान करैत अछि । संवेदनाक क्षरण के रोकबाक हेतु प्रेरित करैत अछि । हिनक कोनो कथा हो ओहि मे कोनो विषय पर लिखल गेल हो मुदा ओहि मे कोनो व्यक्ति, स्थान, आ ओकरा प्रति लगाव आदि के अवश्य मन पाड़ल गेल रहैत अछि । अपन भूमि ओ लोक सँ दूर कोनो शहर मे खटैत कोनो व्यक्तिक एहन कएकटा कथा अछि जे ओ अपन उत्तरदायित्वक रक्षा पूर्ण नहि करबा कारणे, अपना सम्बन्धीक अपना प्रति जे आकांक्षा रहैत छैक, ओकरा पूर्ण नहि क' पयबाक कारणे औनाइत रहैत अछि । एहि तरहें हिनक कथाक कोनो विषय हो ओहि मे मानवीय सम्बन्धक जुड़ाब लेल कथा कोनो ने कोनो रूपें पहल कएनहि भेटत ।

कथाकारक बाल जीवन गाम सँ जुड़ल रहल आ कहि सकैत छी जे ई ओहि जुड़ाव सँ कहियो मुक्त नहि भेलाह । हिनक सम्पूर्ण कथा मे गाम आ गामक लोक रहल । ओना ई अपन पोथी 'प्रभासक कथा' क चौदहटा कथा के नगर/उपनगर/महानगर क खाना मे रखलनि अछि । किन्तु ओहू कथा सभ मे गामक लोक आ ओकर संस्कार परिलक्षित हैत । जकर मुख्य कारण इहो अछि जे मिथिला मे नगर नहि अछि, जे किछु शहर मिथिला मे अछि ओहि मे नगरजीवन होयबाक कारण सभ नहि छैक । तें ओ चौदहो कथा के मिथिलाक गामक कोनो व्यक्ति वा ओहि व्यक्ति सङ नगर-जीवनक कथा कहि सकैत छी । जेना ओहि खाना मे राखल कोनो एक कथा मे 'एकटा दुखान्त चलचित्र' के लेल जाय । सुजाता मैट्रिक फेल, भलमानुस गामक, नीक गोत्र ओ पाँजिक वर सँ विवाह करब नहि गछलकै आ 'सिद्धान्त' फेरि देलकै । 'सम्पूर्ण मैथिल समाज मे बात पसरि गेलैक जे फल्लांगामक एकटा छौंड़ी सिद्धान्त फेरि देलकैक ।' एहि तरहें उक्त कथा सभ नगर/उपनगर/महानगर मे रहैत मैथिलक कथा थिक । जे बात कथा अपन सन्दर्भ सँ कहैत अछि । एहि रूपें हिनक कथा सभ मे अपन गाम, अपन लोक, अपन कोनो सम्बन्ध बहुत उभरिक' आयल अछि । बेर-बेर वैह गाम आयत जाहि मे कोनो नाव सँ वा हेलिक' टपल जा सकैत अछि । नावक अभाव मे आ पानिक अथाह स्थिति मे घूमि क' पूल पर द' क' गेल जा सकैए । एहन पोखरि भेटत, जाहि मे कुम्भी छाड़ल रहत । थोड़े जमीन्दार वर्गक लोक भेटत आ श्रमिक वर्ग । जकर भिन्न टोल भेटत जाहि मे मलाह ओ दुसाध जातिक लोक भेटत । ओहि मे बहुतो एक नाम आ एक सम्बन्धक कोनो व्यक्ति आ ओहि बीच एकटा एहन व्यक्ति जे ओहि बीचक सम्पूर्ण हालचालक सङ रहत, स्वयं जुड़ल वा अवलोकन करैत अपना सङ कथा के ल' जायत । ओहि बीचक व्यक्ति, विभिन्न परिचयक विशेषता मे कथाकारक रूप मे ठाढ़ भेटत । जकर चर्चा पहिनो कयल अछि । एहन कथाकारक कथाक उत्स मे मानवीय सम्बन्धक जुड़ाव हैब स्वाभाविके अछि । ओहेन कथा जे टिपिकल चरित्रक बात कहैत कोनो भौतिक लक्षण के लक्षित कयलक अछि ओहू मे उक्त 'उत्स' कथा पड़ाव बनैत देखाइत अछि । तात्पर्य कतहु ने कतहुँ उक्त उत्स कथाक सुरभि मे विद्यमान भेल परिलक्षित होइते अछि । जेना 'रासलीलाक हुनमान' । एहि कथा मे भगतक चरित्र के कथाक रूप दैत कथाकार कहैत छथि कोनो स्त्रीके अर्थ सँ पहिने ओकरा मर्द चाहियै । भगत अपन सभ नव पत्नी के पाइ-कौड़ी दैत छलाह किन्तु पुरूषत्वक अभाव मे पति सुख देवा में विवश छलाह आ तें हुनक पत्नी पड़ा जाइत छलथिन, मु[illegible] नव कनियाँ अनैत छलाह । हुनका द्वारा वेर-वेर पत्नी आनब, पारिवारिक जीवन सँ जुड़बाक प्रयास थिक । बाद मे जखन भागिन के वेटा होइत छनि तँ सभ दिन गाम

सँ छिटकल रहैत व्यक्ति गाम सँ जुड़ि गेलाह । अन्त मे भगत के जखन पुतहु संग लीला करबाक बात कहल गेल तखन कथाक कथ्य स्पष्ट होइत अछि । वाद मे भगत अपन पुरूषत्व हीनताक बात अपन दुनू कनियाँक पड़ा जयबाक रहस्य खोलैत हवोढ़कार भ' जाइत छथि । आ गाम सँ चल जाइत छथि । हुनक चल जयबा सँ जे करूणा उपजैत अछि ओ जुड़ाबेक अभिव्यक्ति थिक । एहि तरहें जुड़ावक कारणे वा कहू कथाकार अपन लोकक बात कहबाक कारणे अपना के एक वर्गक लोकक सीमाक अन्दर घेरि लेने छथि । यैह कारण अछि जे ई कथाकार दलित वर्ग केँ आत्म सम्मान लेल संघर्ष करैत त' देखौलनि किन्तु ओकर पारिवारिक जीवनक सहज इच्छा-अनिच्छा, सौख्य-मनोरथ के नहि देखा सकलाह । किएक ? से एहि हेतु जे कथाकार जेना लगैत अछि सतत अपना के फूट बुझैत अपना के ओही वर्गक समाङ बुझैत छलाह जे जमीन्दारक छल । ओ दलित वर्गक स्वतंत्र अस्तित्वक जिनगी चाहैत छलाह से हुनक मानवीय दृष्टि छल, किन्तु कथाकारो रूप मे ओ अपन वर्ग सीमा सँ टपि नहि सकलाह । ओना हिनक अन्तिम प्रकाशित कथा 'पतिवरता' हमर आरोप के अंशत: खण्डित करैत अछि किन्तु एकरवादो ई मध्यवर्गीय चेतनाक कथाकार थिकाह । हिनक कथाक विश्लेषण काल इ प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि जे कि कारण अछि जे हिनक कथा मे कोनो भूमि संघर्ष नहि देखाओल गेल अछि? जखन कि हिनक लेखन समय मे मिथिला मे कतेको गाम मे भूमि संघर्ष भेल जे मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे आयलए। हिनक दृष्टिक विषय मे जेना पूर्व मे कहने छी से ओहि दृष्टिक पक्ष सँ भूमि संघर्ष नहि अयबाक आरोपक खण्डन कएल जा सकैछ, किन्तु एते अवश्य जे तें ओहि प्रश्न के हटाओल नहि जा सकैछ । आरो बहुत बात के नहि कहि एत' कहब जे ओ दलित उत्थान चाहनिहार मध्यवर्गीय जीवन-वोधक कथाकार थिकाह ।

2 जनवरी 1941 के जन्म लेनिहार एहि कथाकारक पहिल कथा 1957 मे 'प्रतीक्षा' नाम सँ प्रकाशित होइत अछि आ हिनक अन्तिम प्रकाशित कथा थिक (1997) 'पतिबरता' । एहि बीच ई एकटा दीर्घ कथा लिखलनि । 13 सितम्बर 1997 केँ सगर राति दीप जरय' बेगूसराय मे अपना सङ अनने छलाह किन्तु समय अभावक कारणे पढ़ि नहि सकलाह । (बेगूसराय सँ प्रकाशित भरि राति भोर-कथा संग्रह मे से कथा छपि गेल अछि—सम्पादक) एकर अतिरिक्त जे अप्रकाशित कथा हो । अपन लेखनकाल मे मैथिली के ई सैकड़ों कथा देलनि । हिनक कथा स्वतंत्र भारतक स्थिति ओ चेतनाक कथा थिक । स्वतंत्र भारतक एहि मिथिला भूमिक जीवन कोन रूप-रङ मे कोन गति पकड़ैत रहल आदि बातक जानकारी देबा मे हिनक कथा महत्वपूर्ण भेल अछि ।

स्वतंत्र भारत मे जमीन्दारी उन्मूलन भेलै । आधुनिक शिक्षाक प्रसार भेलैक । जमीन्दारक स्थिति बहुत खराब भ' गेलै ओ सभ बड़ आशा सँ वेटाकेँ पढ़ब' लागल जे ओ नीक नोकरी प्राप्त क' परिवारक भार टेकि लेतै । एहिना आनो लोक अपन वेटाकेँ पढ़ा लिखा आशा जोड़लक । किन्तु देशक परिस्थिति बहुत खराब भ' गेलै। राजनीति, राजसुख भोगबाक लेल भ' गेलै । कार्य-योजना मात्र बनैत रहलै, रूप कहियो ने लेलकै आदि सभ स्थिति के हिनक कथा स्पष्ट करैत अछि ।

एहि लेखकक लेखनकाल 1962 मे चीनी.आक्रमण भेलै, जे हिनक कथा मे सेहो आयलए । तेसर आम चुनाव सम्पन्न भेल । महगाइ बढ़लै । रोजगार घटलै । जीवन निर्वाह कठिन भ' गेलै । एहना मे पूर्व मे संयुक्त परिवारक जे मानसिकता छलै ओ छिन्न-भिन्न भ' गेलै । रागात्मक सम्बन्धक बन्धन कड़कड़ाय लगलै । पति-पत्नीक बीच छोट-छोट बात पर मतान्तर होब' लागल । दिन-प्रति दिन संचार व्यवस्थाक सुविधा लोकक मानसिकता के उपभोक्तावादी रस सँ बोरि रहल छल । नोकरी करैत लोक माय-बापोक 'दुख' आबि बुझब बेकार बूझ' लागल । जकरा पढ़ि-लिखि लेलाक बाद नोकरी नहि भेटलै ओकर उपेक्षा आ कुंठा भयानक भ' गेलै । गाम मे कार्य घटि गेल छै । एहन लोक जकरा खेत छलै, रैयत छलैक ओ एहि सभक बिना भयंकर त्रासदी मे जीबैत गाम मे कुचक्र मे रम' लागल । एहि सभ स्थितिक अभिव्यक्ति प्रभासजीक कथा करैत अछि । आ से अभिव्यक्ति सङ हिनक कथा ओहि सँ उबारबाक प्रेरणा दैत अछि । हिनक कथा दलित वर्ग के सामन्ती मानसिकता सँ लड़बाक लेल वा एहिना कोनो कार्यप्रणाली सँ लड़बाक लेल विद्रोह के तँ आवश्यक मानलक अछि । किन्तु हिनक कथा मे अपन लोक सँ विद्रोह कदचिते भेटत । ओना 'अनजनुआक जनमल' मे वेटा सतमायक अन्यायक विरोध मे डण्टा ल' क' उठैत अछि किन्तु ओ अपनत्व सूत्र कोनो अंश मे नहि रहले सन्ता होइत अछि । सामान्यत: हिनक कथा-माता-पिता, भाइ-वहीन, सर-समाज वा पति-पत्नीक बीच सँ उठैत प्रसङ के ठीक कर' हेतु विद्रोह करबा सँ बचैत अछि जे बात अन्तत: कहैत अछि जे ई कथाकार सुविचारित डेग लेबाक पक्षपाती छथि । रागात्मक सम्बन्ध केँ विद्रोहक ताप नहि देखा पबै छथि । वरिष्ठ आलोचक मोहर भारद्वाज अपन आलोचनाक पोथी 'अनवरत' क' आजुक कथाक' शीर्षक आलेख मे प्रभास कुमार चौधरीक कथाकार पीढ़ी अर्थात सातम दशकक विषय मे कहैत छथि 'ई लोकनि कथावस्तु मे विविधते नहि अनलनि, ओकरा व्यापक धरातल पर रखबो कयलनि । स्थिति के ओकर सम्पूर्णता मे देखलनि । स्पष्ट अछि जे तत्कालीन स्थिति सँ ई सभ प्रसन्न नहि छलाह । संघर्षक आवश्यकतोक अनुभव करैत छलाह, किन्तु जागल चेतना केँ आक्रामक बनाएब स्वीकार नहि छलनि 1 एकटा धाख, एकटा संकोच हुनका सभकेँ आगू बढ़बा सँ रोकैत छलनि । ओ सभ संघर्षोंक स्थिति मे ककरो

पर हाथ उठयबाक बात भलमनसाहत क विरूद्ध मानैत छलाह ।' हम उक्त टिप्पणी सँ सहमत होइत एकर पुष्टि मे प्रभासजीक कथा सँ उदाहरण देब' चाहब । हिनक कथा 'विकलांग' मे जखन 'हम' केँ परिस्थितिवश हाथ उठेबाक लेल उतारू होब' पड़ै छै आ से भ' जाइये तखन ओकर कार्य स्वाभाविक रूपें भ' जाइत छै । किन्तु क्रोध-शान्तिक बाद 'हम' स्वयं भीतरे-भीतरे लाजक अनुभव कर' लगैए । तखन ओकरा होइ छै जे 'चारूकात लोक हमरा तेना देखि रहल छलाह जेना हम कोनो विजेता होइ मुदा हमरा लागि रहल छल जेना हम एकटा पैघ आ बहुत दिन सँ लड़ि रहल युद्ध मे पराजित भ' गेल होइ ।' एतबे नहि जेठ भाइकेँ ओना देखि आलोकक आँखि मे सेहो चिन्ता पैसि जाइ छै, जकर स्वभाव मे पहिने सँ आगि छलैक ओ शान्त रहैत जेठ भाइके आक्रामक होइत डरि जाइए । 'हम'क संकुचित हैब आ आलोक के चिन्तित भ' जायब आक्रामक होयबाक हेतु साकाञ्च करैत अछि । अर्थात् कथाकार पढ़ल-लिखल द्वारा ओना आक्रामक होयब नहि चाहै छलाह । जखन कि एहन होयबाक परिस्थिति भ' गेल छलैक । एहिठाम ओलोचकक टिप्पणी सँ सहमत होइत एकटा प्रश्न जगैत अछि जे दलित चेतना के अपन 'रक्षक' बनबाक लेल आक्रामक होयबाक छूट देनिहार कथाकार केँ अपन सदृश्य लोक के ई छूट देबा मे की अरचन छलनि ? एकर उत्तर मे हमरा लगैए जे मिथिला समाजक मध्यवर्गीय लोकक बीच लाठी उठायब संकोचक बात बुझाइत छल । मध्यमवर्गीय लोक प्रत्यक्षत: दलितक शोषक नहि छल किन्तु सामन्तवादी सोचक लोक बीच रहैत, ओकर तरी-घटी बुझै छल । ओकर शोषण सँ परिचित छल, अपनो शोषित छल । तें सामन्तवादी लोक के उकटब ओकरा नीक लगै छलै, दोसर मैथिली साहित्य मे दलित चेतना एहि विन्दु पर आबि गेल छल जखन ओ अपन अधिकार हासिल कर' बुझ' लागल छल । हिंसा-प्रतिहिंसाक झनझनाहटि सँ बेशी अधिकार स्थापनाक महत्त्व भ' गेल छल । 1965 मे ललितक 'पृथ्वीपुत्र उपन्यास आबि गेल छल जकर मिथिला समाज मे खूब स्वागत भेलै । 1961 सँ नियमित लेखन मे जखन प्रभास जी रमलाह त' ओहो दलित वर्गक चेतना के आक्रामक बनेबा मे संकोच नहि कयलनि । किन्तु अपने सन लोक पर लाठी उठेबाक बात हिनका नहि अरघलनि। हमरा जनैत परिस्थिति सँ लड़बाक चिन्ता ओ अपन आगूके देने गेलाह।

प्रभासजीक कथा पर विचार करैत हमरा लगैए जे ई मिथिलाक कृषि जीवन सँ नौकरी जीवन मे प्रवेश कयलाक बाद जे लोकक चालि प्रकृति मे बदलाव अयलै ओकर कथा कहलनि अछि । ताहि क्रम मे मैथिली कथाकेँ हिनका सँ विभिन्न विविधता प्राप्त भेलै । व्यापकता भेटलै । ताहि व्यापकता मे मुख्य रूप सँ मानवीय सम्बन्धक जोड़-तोड़क बात उभरि क' समक्ष आएलए । जीवनक विभिन्न दर्शन ओ

व्यक्ति के व्यक्तिक जुड़ाव बीच होइत विघटन ओ व्यक्तिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अद्‌भूत रूपें हिनक कथा मे विश्लेषित होइत अछि । एहि सभ गुण सँ युक्त हिनक कथा मैथिली कथा के व्यापक आधार देलक अछि । प्रभासजी जीवनक जाहि-जाहि विन्दु के उठौलनि अछि ओहि मे नारी ओ पुरूषक सम्बन्ध बहुत महत्पूर्ण अछि आ ताहि क्रम मे हिनक प्रेम-कथाक विश्लेषण मैथिली साहित्यक परिपेक्ष्य मे आवश्यक अछि ।

प्रेम कथा एहि हेतु जे मैथिली साहित्य मे प्रेम-कथा बड़ थोड़ अछि । मैथिली कथा सभ दिन सामाजिक समस्या दिश ध्यान देलक । ओहि समस्याक कोटि मे प्रेम (प्रेम त' ओना बहुत व्यापक अर्थक शब्द थिक, किन्तु एहिठाम एकर तात्पर्य अछि-स्त्री ओ पुरूषक बीच परस्पर आकर्षण सँ उत्पन्न भाव जे एक दोसर के जोड़य) कहियो नहि आएल । तकर कारण मे मुख्य सामाजिक स्थिति ओ ओकर आवश्यकता छल। स्वतंत्रता सँ पूर्व एहि शताब्दीक समस्या स्वतंत्रता प्राप्तिक लेल जनमानस के तैयार करक छल ताहि परिप्रेक्ष्य मे मैथिली कथा समाज-सुधारक स्पष्ट उद्देश्य ल' संचरित छल । जाहिमे सामाजिक कूरीति कथाक मुख्य विषय बनल । जाहिमे वैवाहिक कूरीति स्थान पौलक । क्रमशः कथाक विषयक व्यापकता बढ़ल । आर्थिक असमानता कारणे आ रूढ़ि परम्पराक पालन मे जे अंधविश्वास छल ताहि कारणे जे समाजक दुर्दशा छल ताहि दिस कथाकारक ध्यान गेलनि । स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद साहित्यक मुख्य विषय आर्थिक ओ दैहिक शोषणक विरोध मे बनल । धनीवर्ग द्वारा गरीब स्त्रीक यौन शोषण होइत छल, ओहि स्त्री मे जातिगत छोट-पैघक हिसाब नहि छल । कोनो खगल स्त्री एकर शिकार होइत छलीह । एहन स्त्रीगणके देहक दाम मे खोराक भेटैत छल आ से कर' लेल ओ सभ विवश छलीह । ई माहौल प्रेम कथा कोना उपज' दैत । ललित सँ ल' क' कतेको कथाकार एहि (स्त्रीक यौन शौषण) पर लिखलनि अछि । ओना प्रेम तहियो होइत छल, आइयो होइत अछि । राजकमल 'आकाश गंगा' लिखलनि किन्तु एहि कथा मे 'प्रेम' सँ अधिक अन्नपूर्णाक दृढ़ चरित्र देखार होइत अछि । प्रेम कथाक मूल धारा मे नहि आबि सकल । तकर एक कारण मे एहिठामक ग्राम्य जीवन सेहो अछि । से एहि हेतु जे गामक जीवन ततेक ने अनुबन्धित होइत अछि जे ओहि बीच बन्धित लेखक प्रेम जीवन के ठीक सँ वा कहू मानव-धर्म अनुसार नहि अनुभव क' पबैत छथि । यदि अनुभव करितो छथि तै ओ लिखबा मे संकोच करैत छथि । कहियो मैथिली साहित्य मे प्रेम (खास क' विद्यापतिकालीन साहित्य मे) उत्कर्ष पर छल तकर अपन सामाजिक ओ काव्यगत स्थिति छलैक आजुक अपन स्थिति छैक । तथापि किछु

लेखक एहि पर कलम चलौलनि । खासक क' शहर जीवनक आभा जखन किछु एहि भूमि पर पड़लै त' प्रेम मूलक कथा-रचना मे वृद्धि भेल ।

एहि बीच प्रभासजीक प्रेम-कथा ध्यान खींचैत अछि । ओना एहि मूलक हिनक किछु कथा गाम-जीवनेक थिक किन्तु अधिक एहन कथा कें शहर मे रहैत लिखल गेल अछि । हिनक प्रेम-कथा मे नारी-पुरूषक प्रेमक विभिन्न रूप अछि । किन्तु साधारण मान्यताक विरूद्ध मे सेहो हिनक कथा आयलए । साधारणतः मान्यता अछि जे स्त्री (जे कोनो रागात्मक सम्बन्ध मे नहि बान्हल अछि) ओ पुरूषक बीच प्रेम विना दैहिक आकर्षण के नहि भ' सकैत अछि । फ्रायड तँ समलैङिक मित्रता मे सेहो सेक्स के दखैत छथि । किन्तु ई कथाकार एहि धारणा के खण्डित करैत छथि । हिनक कएकटा कथा एहि दिशा मे कार्य कयलक अछि । जाहि मे एकटा कथा अछि, एक त्रिभुजः चारि कोण' । एहि कथा मे आशा ओ अरुणक बीच मित्रता छैक । ओ दूनू कतेको दिन एकान्तक्षण मे गप्प करैत रहैत छल । चाहैत त' दुनू परस्पर बन्हा सकै छल, किन्तु कहियो कोनो लोभ दुनूक बीच विकार नहि आब' दै छै । आगू दुनूक प्रेम के आरो स्पष्ट करैत ई सिद्ध करैत बुझाइत छथि जे प्रेम लेल आत्मीय भाव कोना अन्य भाव सँ प्रवल अछि । यैह भावक विस्तार मे हिनक कतेको कथा घनीभूत भेलए ।

बहुत प्राचीनकाल सँ राष्ट्र-उत्थानक भाव मे एहन आख्यान वा काव्य लिखाइत रहलए जाहि मे प्रेमिका अपन प्रेमी के पत्र लीखि राष्ट्रक रक्षार्थ प्रेरित करैत रहलए। हिनक एकटा कथा 'गय विढ़नी ! तोहर डंक' एहि भावक कथा थिक । चीनक आक्रमण कालक उक्त कथा मे राष्ट्रीय जागरण उत्कर्ष पर आबि गेल छल । शत्रु के अपन सीमा सँ खिहाड़ि भगेबाक लेल जेना जनमानस कनकन क' रहल छल । ओहि भाव के प्रेरित करैत एकटा एहन प्रेमिकाक कथा कहैत छथि जकर वाल जीवनक प्रेम छै। ओकर विवाह दोसरा सँ भ' जाइ छै । ओ आगू विधवा भ' जाइत अछि । एहि युद्ध काल मे ओकर अपन पति त' नहि छै मुदा ओ अपन प्रेमी के मन पाड़ैत अछि आ युद्ध लेल जयबाक हेतु प्रेरित करैत छैक । ओना त' एहि कथा मे राष्ट्रभाव बलात् पीऔल लगैत अछि, किन्तु प्रेमक सम्बन्ध मे कएकटा बात कहैत अछि । एक त' ई जे किओ जखन कोनो भाव मे जुड़ि जाइए त' ओ परस्पर दूर रहितो, मर्यादा सँ घेरल रहितो, जुड़ल रहैए । दोसर जे स्त्री-पुरूषक जुड़ाबक मुख्य बात आत्मीयता अछि। ई बात हिनक 'व्यतीत' कथा सेहो स्पष्ट करैत अछि ।

आजुक समय मे भौतिक सुखक इच्छा बहुत प्रवल भ' गेलए आ से इच्छा प्रेम के 'हँसी' कहि उपहास करैत अछि किन्तु ओ वस्तुतः ओहि इच्छा सँ पराजित होयबाक स्थिति थिक । प्रेमक यर्थाथता सँ वस्तुतः ओकरा कहियो मुक्ति नहि होइत छैक ।

अपन 'हँसी' कथा मे प्रेमक प्रवलता कें देखबैत इम्हर आबिक' प्रभासजी 'पतिवरता' सन श्रेष्ठ कथा लिखैत छथि। एहि कथा मे प्रेमक माधुर्य सङ नारीक सेवा धर्म निखरि क' समक्ष आएलए आ स्पष्ट भेलए जे प्रेमक आगां कोनो स्वार्थ मे लोक घेरायल नहि रहि पबैत अछि। एहि कथा मे मूल कथ्यक सङ कएकटा अर्थ उद्‌भुत होइत अछि आ स्त्रीक चरित्रक विषय मे कहैत अछि जे स्त्री कोनो स्थिति मे अपन पति सँ एहन अनुरागक आकांक्षी होइत अछि जाहि मे अनुराग आ विश्वास होइ। एहि दुनूक आगू ओकरा सभ बर्दास्त छैक। ओना एहि कथा मे यौन-शोषणक जे बात आएल अछि ओ युगक अनुकूल नहि अछि तथापि ई कथा फूट सँ विश्लेषणक माङ करैत अछि।

एहि तरहें प्रभासजी जीवनक विभिन्न पक्ष पर कथा लिखलनि अछि। ओहि कथाक च'-तू गप्प कहबाक लेल प्रत्येक कथाक स्वतंत्र व्याख्या चाही। हमरा जनैत कोनो कथाकारक समग्र कथाक विश्लेषण मे कथाक मूल विशेषता तँ समक्ष आबि जाइत अछि किन्तु एहन विशेषता जे अक्षरक दोग मे रहैए कखनोकाल मूल सँ महत्वपूर्ण रहितो अविश्लेषित रहि जाइत अछि।

हिनक कथाक विशेषता ओकर शिल्प, कथ्य वा विषयेजन्य नहि अछि। हिनक कथाक वाक्य विन्यास वा शब्द संस्कार अद्‌भुत अछि। वाक्य विन्यासक क्रम मे उपमाक प्रयोग जाहि निपुणताक सङ कयलनि ओ कएठाम चमत्कार उत्पन्न करैत अछि।

अस्तु, प्रभासजीक कथा सतत अध्ययन ओ मूल्यांकनक माङ करैत रहत।



रमेश

'पिता'क संक्रमणकालीन कछमछी आ अहुरिया कटैत कथाकार-पूत

'पिता' प्रभास कुमार चौधरीक एहेन कथा थिक जे गप्प-सप्पक खिसक्कड़ी शैलीक प्रारंभिक रूपक झाँकी देखबैत 1973 ई० मे पाठक सँ प्रत्यक्षित भेल छल, जाहि मे बहन्ना अर्थात शिल्पगत सूत्रधारक काज कयलक जीवकान्तक एकटा पत्रक किछु पाँती।

जीवकान्तजीक चिट्ठी सँ कथाक विश्वसनीयता बाँचल रहि सकल कारण, कथा मे निबन्धात्मकताक पर्याप्त समावेश कयल गेल छल आ तें कथाकारकें ई ताना-बाना बूनब आवश्यके छलनि। कथाक नायक पिता छथिन जिनकर परिवेशात्मक ईकाई गाम छनि। कथाक मुख्य प्रयोजन गाम, देश आ समाज (सतही रूप मे) बुझाइछ, जकर ब्याज पिता कें बनबैत छथि कथाकार। प्रतिनिधिक रूप मे।

मुदा....

मैथिली कथाक एकटा एहेन युग रहल जाहि मे सम्बन्धेपरक पारिवारिक कथा लिखल जयबाक एकटा धारा चलल छल। जेना-बाबी, मामी, पिता...आदि...।

एहि धाराक अन्तर्गत लिखल गेलाक बावजूदो 'पिता' मे प्रभासजी मिथिलाक एकटा कोनो गाम मे, एकटा कोनो परिवार मे बनैत-बिगड़ैत सम्बन्ध-बन्ध आ विघटन-टूटन केर अलगे तरहक संकेत 1973 ई० मे करैत छथि। एहि अनेक अन्योन्याश्रित सम्बन्धक बीच कोना एकटा नोकरिहारा माय-कनियाँ अथवा पिता-पुत्रक मध्य पेंडुलम जकाँ डोलैत रहैए जिनगी भरि अथवा पिता-पत्नीक मध्य कोना अहुरिया कटैछ। से जीवकान्तक पाँती सँ प्रथमदृष्टया द्योतित होइछ। मुदा ताहि सँ कथाकार कतेक सहमत भ' पबैत छथि आ पाठक 'पिता' कथाक आधार पर कतेक सहमत हेताह से तँ पड़ताल करहि पड़त।

कोनो-कथाकार अपन समकालीन समाजक रेखाचित्र बनाबथि वा विकृतिक सटीक वर्णन करथि से एकटा अपरिहार्य कौशल थिक। प्रभासजी निस्संदेह एहि कौशल

सँ युक्त कथाकार छथि । कथाकार (हम) आ हुनक पिताक ई गाम मिथिलाक एकटा प्रतिनिधि गाम थिक से कथाकार प्रमाणित करए चाहलनि अछि । मिथिला वा भारतक आठम दशकक प्रारंभिक वर्ष मे एकटा औसत गामक विद्यमान स्वरूप आ विकृतिक रेखाचित्र 'घीच' मे माहिर साबित भेलाह-ए प्रभासजी तकर प्रमाण थिक 'पिता' कथा। विकृतिक चित्र सुकान्त सोम सेहो बनौलनि 'रक्तबीज' नामक अपन कथा मे । मुदा, से मनोरम नहिं भ' क' पर्याप्त जबदाह भ' गेल आ से कथाक अभिप्रेत आ संप्रेषण केँ आघात कयलक । मुदा ओहि कथाक 'सिजरियन सर्जरी' एतय अभिप्रेत नहिं, अपितु प्रसंगवशहिं चर्च कयल ।

'पिताक' गामक प्रसंग मे मोहन भारद्वाज स्वीकार करैत छथि जे टुटैत कृषियुगीन आ नव-औद्योगिक संस्कृतिक बीच संक्रान्तिकाल मे ठाढ़ अछि-पिता । कथाक गाम आ पिता तेहेन यथार्थ बिन्दु सभ केँ ल' क' बनल अछि जे ई सहजहिं कोनो भारतीय गाम आ गाम सँ जुड़ल पिताक प्रतिनिधि चित्र भ' क' ठाढ़ भ' जाइत अछि । मोहन भारद्वाजक एहि बात सँ सहमत नहिं हेबाक कोनो टा कारण नहिं अछि ।

प्रभासजी ग्रामीण परिवेशक आ मध्य वित्त आ निम्न मध्यवर्गीय चेतनाक एहेन कथाकार छलाह जिनका गामक अवधारणा गहींर रूपें छलनि । विस्तृत कथाधार पर गाम आ परिवारक उत्साह आ अवसाद केँ चित्रित करबाकाल ओ ग्रामीण जीवन्तता आ माटि-पानिक सोन्हगर सुगंध केँ नहिं बिसरैत छलाह । समकालीनताक अवधारणा आ अपन परिवेशक पूर्ण ज्ञानक संग ओ कलम उठबैत छलाह, से 'पिता' कथा सँ सेहो बुझाइछ ।

जे 'पिता'क पृष्ठभूमि थिक से प्रभासजीक समस्त लेखनक पृष्ठभूमि थिक आ सैह आधुनिक भारतीय समाज वा गामक पृष्ठभूमि सेहो थिक । पूर्व-मध्यकाल मे जनमल आ मध्यकाल मे जुआँठ भेल भारतीय सामन्तवाद जखन उत्तर-मध्यकाल वा पूर्व-आधुनिककाल मे पतनशील भेल तँ ओ पतन मात्र राजनीतिक सामन्तवादक स्तर मे नहिं छल, अपितु सामाजिक स्वरूप आ आर्थिक सामन्तवादक स्तर मे सेहो जगजियार भेल । सामन्तवादक खाढ़ी वा सीढ़ी मे जखन विघटन प्रारंभ भेल तँ समाजक तानी-भरनी काँच सूत जकाँ टूटय लागल छल-जे संयुक्त परिवारक व्यवस्था मे ह्रासक रूप मे समक्ष आयल। परमाणविक विखण्डनक शृंखला प्रतिक्रिया जकाँ ई विखण्डन आइयो दाम्पत्य-विखण्डन, वैयक्तिक टूट आ नेह-विखण्डनक रूप मे गतिमान अछि। तहिना जाति आ उप जाति विखण्डनक प्रक्रिया गतिमान भेल आ आइ अपन निकृष्टतम रूप मे गतिमान अछि। तहिना आर्थिको स्वरूप मे (ग्रामीण समाज मे) ई टूटन पूर्व-आधुनिक काल मे अपन चरम रूप मे छल । ताहि परिवेश पर जखन नव-औद्योगिक तत्त्व सभक आक्रमण भेल तँ समाज मे संक्रमणकालीन उथल-पुथल आ परिवर्त्तनक

कछमछी भारतीय समाज मे देखार होअय लागल छल । स्वभावतः साहित्य एहि सँ निरपेक्ष नहिं रहि सकैत छल आ ने रहल । समकालीन भारतीय समाज, साहित्य, प्रभासजीक लेखन आ 'पिता' क पृष्ठभूमि यैह यथार्थ थिक । सामन्तवादी समाजक आर्थिक अवमूल्यन आ मध्यवर्गक टूटन, संक्रान्तिकालीन मैथिल समाजक द्वन्द्व आ ताहि मे जखन अपन समकालीन जीवनक आयाम सभ केँ मिझहर क' क' प्रभास जी कथा परसैत छथि तँ बुझाइछ जेना आजुक साहित्यकार आ साहित्य लेल ओ कतेक आवश्यक सीढ़ी छलाह । 'सामन्तवादी साहित्य' सँ सोझें 'आधुनिक साहित्य' पर हनुमान-कूद होइत तँ मैथिलीक कथा अविश्वसनीयताक ग्रास बनैत । प्रभास जी एकटा एहेन सेतु बनलाह जे एहि खतरा सँ मैथिलीक कथा केँ मुक्ति देलनि । मोहन भारद्वाज 'पिता' क प्रसंग कतेक सटीक छथि, जखन ओ कहैत छथि जे मिथिलाक बदलैत गाम, गामक बदलैत लोक आ ओहि लोकक स्वरूपक जे खाँटी रूप हिनक कथा मे भेटैछ से अन्यत्र दुर्लभ ! ग्रामीण चरित्र आ स्थापित मूल्यक विघटनक सजीव चित्रण आ स्थानापन्न होइत जीवन-मूल्यक जाहि स्थिति केँ सोझ-सोझ भाषा मे राखल गेलए से कथाकारक अनुभवक उपजा थिक, तमसगीरक प्रतिवेदन नहिं । वस्तुतः पिता' क ठोस आधार कथाकारक अनुभव आ तत्कालीन सामन्ती अवशेष सँ उपजल अवसादे थिक । अन्ततः कोन-कोन एहेन तत्व थिक, जे कि एहि कथा मे विद्यमान अछि, आ जे एहि कथा केँ खाँटी मैथिलीक कथा बनबैत अछि?

कोनो गाम मे दैतक खुनाओल पोखरि हैब मिथिलांचलक जनमानस मे दन्तकथा सन भ' गेल अछि । जे कोनो पैघ सन पोखरि कोनो गाम मे अछि त' तकरा पाछू एकटा दन्तकथा अछि जे ई दैत्यक खूनल-पोखरिं थिक । ताहि दन्तकथाक चर्च प्रभास जी प्रसंगवश नहिं करितथि, से संभव नहिं छल । एहि पोखरिक (अपना गामक) उन्नति-अवनतिक वर्णन ओ 'पिता' कथा मे एना कयलनि अछि जेना अपना गामक। पोखरि केँ गाम अथवा मिथिला वा देशक बिम्ब-स्वरूपहिं प्रस्तुत कयल गेल अछि। सौंसे पोखरि कुम्भी सँ छारल आ जाठि निपत्ता-पोखरि अथवा समाज मे भरल विकृति आ नेतृत्व वर्गक सकारात्मकताक अवसानक प्रतीक थिक । आइ पोखरिक उपयोगिता समाप्त प्राय अछि-ने तँ नहयबा योग्य आ ने एकर पानि अदहन चढ़यबा योग्य । गाम घर मे नहुँ-नहुँ ढुकैत परिवर्त्तनक गति थिक जे धनुकटोली सँ बभनटोली आ मलहटोली सँ खतबेटोली धरि आब कलेक पानि सँ भानस करैछ, पोखरिक पानि सँ नहिं । पोखरि जे संयुक्त परिवार सन गंगा छल, तकर जरूरति आब लोक केँ नहिं रहलैक आ कल जे व्यक्तिगत परिवारक एकटा मुख्य तत्व थिक, से घरे-घर भ' गेल । मुदा ततहि ईहो ध्यातव्य थिक जे पोखरिक पानि कतबो शुद्ध छल तँ कलक पानिवला शुद्धताक

लाभ सँ वंचित करबाक कसाइपना होइत । वस्तुतः अनियोजित विकास-संस्कृतिक समानान्तर विकृतिक-धारा बहैत अछि । परिवर्त्तनक सकारात्मक आ नकारात्मक दुनू पक्ष एक संग दृश्यमान अछि मिथिलाक कोनो औसत गाम मे । ताहि परिवर्त्तन केँ स्वयं प्रत्यक्षीकरण करब आ तखन ओकरा स्वर देब कथाकारक लेल उचिते छल ।

मुदा ई परिवर्त्तन तात्कालिक आ प्रायोजित प्रमाणित होइछ । कथाक अगिले अनुच्छेद कहैछ जे कल टोल-टोल गाड़ल गेल रहैक पछिला एलेक्शनक प्रसाद-स्वरूपहिं। सरकार आरो बहुत रास काज करए चाहैत छलै-मुदा किएक ? भोट दुआरे । भोटक समय मे सड़क पर माटि खसाओल गेलैक, रोड़ा खसाओल गेलैक जे पिचरोड बनतैक। इलाका आसमर्द भ' गेलै जे असंभव काज संभव भ' रहल अछि । क्यो दोकान खोलबाक सपना देख' लगाल तँ क्यो मोटर चलयबाक लेल परमिटक सपना । बाधे-बाध बिजलीक खंभा खस' लागल । एक-दोसरक मोन मे ग्रामीण ईर्ष्या सेहो जनम' लागल ।

मुदा एलेक्शनक बाद बिजलीक खंभाक निपत्ता हैब भारतीय राजनीति आ प्रशासनक पोल खोलि क' राखि देलक । राजनीतिक छल-छद्म बिजली-बत्तीक सपना निपत्ता क' देलक आ डिबिया टिमटिमायब आइयो बन्न नहिं भेल अछि मिथिलाक गाम मे । प्रशासन-तंत्रक पूर्ण-विफलताक चित्र सँ भरल अछि ई कथा । गामक इसकुलक हाल आजादीक एतेक दिनक बादो 1973 मे यैह छल जे वित्तमंत्रीक आगमन आ भाषणबाजीक बावजूदो इसकुलक भवन नहिं बनि सकल । हेडमास्टरी लेल मोकदिमाबाजी, शिक्षा-व्यवस्था मे पैसल आ चकरी मारिक' बैसल अनुचित महत्वाकांक्षाक साँप थिक जे शिक्षाक व्यवसायीकरण क' देलक अछि । फेर हड़ताल, विद्यालय-बन्दी, छात्र-राजनीति आ गुटबन्दी हु-ले-ले-ले-फुर्र...आदि कि थिक ? प्रजातंत्रक विकृति कहू वा भोट-राजनीतिक बाइ-प्रोडक्ट-? जे कही, मुदा दुनू स्थिति समाज आ शिक्षा केँ भयावह दुर्दशाक स्थिति मे आनि पटकलक अछि । गामक एहि युगसत्य आ युगचिन्ताक संग जँ 'पिता' कथा भाँज पुरैत अछि तँ से कथाकारक सम्यक् दायित्व निर्वाह थिक ।

मुदा 'बाहरी' सिमान परक इसकुल (छात्र)क गप्प सँ आर भयावह स्थिति 'भितरिया' (कन्या-विद्यालय) इसकुलक हालत कहल गेल अछि कथा मे ई स्वाभाविको अछि जे बालक-पाठशाला सँ बेशी भयावह दुर्दशा कन्या-पाठशालाक हो । कन्या पाठशालाक एकमात्र छाहरि बेलक झमटगर गाछ अछि । जमीन रजिस्ट्रीक उपरान्तो मास्टरनीक दलान पर इसकुल चलब नारी-शिक्षाक उपेक्षाक कथा कहैए । समाज आ सरकारक दृष्टिकोण आ नारी-संवर्गक प्रति अनुदारता स्वतः स्पष्ट आ स्वयंसिद्ध भ' जाइछ । तकर कारणो स्पष्ट अछि जे नारीक भोटक प्रति तँ नेतृत्व-वर्ग आश्वस्ते रहैछ. जँ पुरुष-समुदाय केँ लाठी, टाका वा जाति-सम्प्रदायक नाम ल' क' पटा लेलक । तें नारीक ओहो टा समाजिक उपयोगिता आ महत्व पृष्ठभूमि मे नुका जाइछ । आइयो विद्यालय आ नारीक स्थिति मे सतहे पर थोड़ेक अन्तर आयल अछि । आइ जँ गाम मे इसकुल-भवन अछि तँ चटिया नहिं अछि, मास्टर जी नागा करैत छथि आ अनेक कारणें शिक्षा-संस्कृतिक अभाव अछि इसकुल मे । आ नारी तँ भोग्या आ पीड़िता आइयो अछि घर-बहार मे ।



(भोजन प्रेमी प्रभास जी)

कोनो टा सामाजिक विकृतिक विरूद्ध विरोधक समानान्तर धारा सेहो उत्पन्न आ गतिमान होइत रहैछ । नदीक कछेर सँ बालु उठाव'वला लोक सँ फी टायरगाड़ी दू टाका टैक्स असूलि क' कन्या पाठशाला मे लगयवाक योजना एकटा सुविचारित समाधान छल । मुदा अनेक बेरक क्रान्तिक गर्भपात जकाँ एहू बेर यैह होइछ जे एकटा दलाल-वर्गक जन्म भ' जाइछ नदीक कातक बालुपर आ ओ बालुओ केँ गीड़य लगैछ गीड़ू साहु जकाँ । असंख्य 'टैक्स कलेक्टर' कोना टैक्स-असूली मे अराजकता उत्पन्न क' दैत अछि आ अराजकताक तब पर अपन सोहारी पकाब' आ भकोस' लगैत अछि-तकर नीक उदाहरण थिक बालुक टैक्स-ओसूली मे जनमल दलाल-वर्ग । मोन पाड़ल जा सकैछ जे 1973 क मिथिला आ भारत मे भरिसक्के कोनो एहन क्षेत्र रहल

हो जाहि मे दलाल-वर्गक अस्तित्व नहिं रहल हो आ हर धंधा मे गोरखधन्धा नहिं हो ।

चालनि जकाँ सहस्त्र-छेद भेल भारतीय समाजक विद्यमान अव्यवस्थाक वर्णन कथाकार अंकित करैत छथि जखन धारक पानि, नाव, आ नैयाक खेरहा ओ कहैत छथि । बुढ़बा-पीढ़ीक मूक भ' शोषण भोगब आ नवका पीढ़ीक सोडावाटरक बोतल सँ उफनैत अस्तित्वविहीन, अस्थायी, दिशाहीन विद्रोह केँ संकेतित करैत छथि कथाकार। पुरना नाव मे भूरे-भूर हैब जतय प्राचीन व्यवस्थाक जर्जरताक खीसा कहैछ ततहि नवका नावक आकांक्षा नव-पीढ़ीक उत्साह आ महत्वाकांक्षा केँ । मुदा सामाजिक जड़ताक षरिणामस्वरूप पुरना नाह अधिककाल बालु पर उनटले पड़ल रहैछ आ यथास्थितिवादी लोक सभ घुमानवला रस्ता सँ पुल पर द' क' नदी पार करैत अछि वा धोती उछेहि क' पार होइछ । स्त्रीगण समाजक नूआ उछेहि क' धार पार करब आ ओहेन स्थिति मे ककरो देखि लेला पर नवकनियाँक लाजें कानय लागब कतेक कारूणिक अछि! ठीक ओतबे कारूणिक, जतेक सामाजिक जड़ता, संवदेनहीनता आ कसाइपन !

व्यक्तिगत स्वार्थ कोनो सामूहिक दसगर्दा काज केँ गीड़ि जाइत अछि । गामक अव्यवस्था आ अनुशासनहीनता कतेक प्रबल अछि ? नवतूर जँ थोड़ेक सक्रिय भ' क' पोखरि मे मछहर क' सफाइ कराब' चाहलक तँ ललमुहाँ रोहु देखिते पट्टीदार सभ बखरा बाँटवाक लेल धड़फड़न खसा देलनि आ मांछ लूटिक' पोखरि मे कुंभी आ मच्छड़ भनभनाइत छोड़ि देलनि । यैह हाल गामक कवीश्वर चन्दा झाक नाम पर बनल पुस्तकालयक सेहो होइत अछि ।

किछु गोटेक उत्साह । पुस्तकालयक अस्तित्व आ फेर अस्तित्व-मर्दन सँ पुस्तकालय वर्तमान सँ अतीत बनि जाइछ । कारी इतिहास । मानि लिय' जे कथाकारक ई गाम जँ पिंडारुछ थिक तँ हमरो गाम (मेंहथ) मे पुस्तकालयक दुर्दशाक यैह खिस्सा थिक । सत्य मानू, हमरहु गाम केँ अपना-आप पर गौरव आ गुमान छैक, जखन कि पुस्तकालयक आलमारी ककरा घर गेल आ पोथी सभ कोन दोकानक ठोंगा बनल तकर कोनो टा ठेकान नहिं । जड़ल जौड़क ऐंठन मिथिलाक सभ औसत गाम केँ एखनहुँ छैक । 1973 क कोन गप्प ? हाथी बिका गेल, सिक्कड़ बकूटने ऐंठल जुन्ना बनि क' टर्र भेल छी । सामन्तवादी अवशेषवला समाज मे ई गौरवाह—मानसिकता आइयो कौखन क'देखार भ'जाइत अछि, जखन तथाकथित उच्च जातिक लोक अनका 'छोटहा' आ 'राड़' कहिक' अपन गाड़िवला संस्कार आ कुप्रवृत्ति केँ देखार करैछ ।

मुदा 'पिता' कथाक पहिल साढ़े तीन पृष्ठ पिताक गामक पृष्ठभूमि पर खर्च कयल गेल अछि आ शेष साढ़े तीन पृष्ठ पिताक कथा कहैत अछि । कमाल के संतुलन-गाम आ पिताक चरित्र-विश्लेषण मे भेल अछि, जखन कि दुनूक चरित्रगत असंतुलनक कारणें एहि कथाक सृष्टि भेल अछि । असल मे 'पिता' कथाकारोक पित छथि' मुदा, वस्तुतः ओ गाम भरिक 'पिता' छथि । अथवा एना कहू जे गामक नेतृत्व

करबाक आकांक्षा सँ युक्त ओ एहेन प्रतिनिधि वा नेता छथि जिनकर नैराश्य एकाध आदर्शवादी राजनीति कयनिहार वा वास्तविक सामाजिक कार्यकर्त्ताक नैराश्य थिक ।

कोनो सामाजिक कार्यकर्त्ता वा प्रतिनिधि जाहि परिवेश मे बसैत हो, तकर पृष्ठभूमिक विशद चित्रण हैब ओतबे आवश्यक अछि, जतबा प्रमुख नायकक चरित्र पर ध्यान देब । तें कथाकारक गामक विकृतिक विभिन्न आसंग पर एतेक शब्द खर्च करबाक औचित्य तँ छैक । वस्तुतः सातम दशकक कालखण्डक चित्रण थिक 'पिता' मे गामक चित्र । गाम तँ एकटा इकाई मात्र थिक । यैह हाल वस्तुतः सातम दशकक सम्पूर्ण समाज आ देशक छल । यैह पृष्ठभूमि थिक जाहि पर 1977 क रक्तहीन 'बैलट-क्रान्ति' अपन रस्ता (भाया-तानाशाही-विरोध) बनौलक । सामाजिक विकृतिक समानान्तर विरोधक ई कथा एकटा आदर्श उदाहरण भ' सकैत छल । विकृतिक ढ़ेरी पर सामाजिक चेतना कोना गोबर-छत्ताक रूप मे जनमैत अछि आ 'थीसिस' मे कोना 'एन्टीथीसिस के बीया नुकायल रहैछ जे उचित नमी पाबि अंकुरैत अछि—से सातम दशकक भारतक खीसा मे देखल जा सकैछ । मुदा से सबसँ पैघ बात नहिं ।

बेर-बेर कोनो असहज राजनीतिक क्रान्ति, जकर आधार पदलोलुपता रहैछ, तकर कोना गर्भपात होइत अछि वा भेल अछि (1977-80क मध्यक नाटक) तकरो खीसा प्रभासजी कहलनि अछि अपन समाजक विकृतिक चित्रणक क्रम मे । आजुक यथास्थिति सातम दशकक यथास्थिति सँ बेशी भयावह अछि । यथास्थिति मे सकारात्मकता अबैत तँ एकर स्वरूप केँ कल्याणकारी यथार्थ मानवाक प्रक्रिया प्रारंभ करितहुँ वा कम-सँ कम सुधारवादोक नाम दितहुँ । टी० एन० शेषण वा खैरनाड़ वा किरण बेदीक धारा एहि समाज मे एखनहुँ तात्कालिके आ क्षणभंगुरे प्रमाणित भ' पाबि रहल अछि । नकारात्मकता, विकृति, जड़ता आ दुर्दशा, छल-छद्म प्रपञ्च पाखण्ड आइ शताब्दीक चरम शिखर पर अछि । ओना से एतय विवेच्य नहिं, मुदा, तकरो झाँकी-दर्शन एहि कथा मे कयले जा सकैछ । एहि कथा मे वर्णित अनेक क्रान्तिक अकाल-मृत्यु ओहने अछि, जेना 1977 क क्रान्तिक अकालमृत्यु राजनीतिक कुकुरा-लूझि सँ भेल छल । सम्पूर्ण-क्रान्ति अन्ततः आंशिको क्रान्ति नहिं प्रमाणित भ' सकल । आइ समाज भूखल पेटक आजादी केँ लौंगिया मेरचाइ जकाँ सुआदि रहल अछि सुसुआ रहल अछि आ 'जे० पी० आन्दोलनक बाइ-प्रोडक्ट' इन्दिरा गांधीक आपातकालीन-छड़ी' ल' क' गाँधी मैदान मे भेड़-बकरी जकाँ जनता केँ डपटि क' हाँकि रहल अछि—'चोप्प ! बैठ जाओ ! हम जे कहते हैं, से ध्यान से सुनो ।'

मोन पाड़ू कृपया सातम दशकक राजनीतिक क्षितिजक वक्तव्य सभ—

1. जे. पी. कोई मसीहा नहीं है ।' —मोरारजी देसाई ।
2. 'मैं कान्ति (देसाई) को बलि का बकरा नहीं बना सकता ।'
—(मोरारजी देसाई)

3. दल-बदल आ कूटनीतिक तोड़-जोड़ सत्ताखेलक-कीर्तिमान-चरण सिंह/देवीलाल/गायत्री/राज नारायण

4. हमाम में सभी नंगे हैं ।

5. कानून के हाथ बड़े लम्बे होते हैं ।–मोरारजी

(मुदा ककरा पकड़बाक लेल ? जन सामान्यकेँ)

मोन पाड़ू ओहि समयक कहबी-कहा पठौलनि मोरारजी भाइ, मुँहक नापें भेटत मिठाइ ।

उपर्युक्त सभ वक्तव्य/तथ्य 1977 क बैलट-क्रान्ति पर व्यंग्यात्मक अट्टहास छल । सम्पूर्ण-क्रान्तिक ओहिना सम्पूर्ण गर्भपात भेल जेना प्रभासजीक 'पिता' कथाक गामक पुस्तकालय, पोखरि, बालक-बालिका विद्यालय, धारक नाह-व्यवस्था, मछहरिक अराजकता, बालुक टैक्स व्यवस्था (मे पैसल दलाली) मे । ई सभ गर्भपात दलाल-वर्ग द्वारा प्रायोजित छल, जकर जन्मदाता राजनीति आ राजनीतिज्ञे टा छल । तकर सहयोगी भलें व्यापारी वा नौकरशाह रहल हो । विश्व भरि मे एहेन असंख्य क्रान्ति पात भेल अछि, तकर इतिहास गवाह अछि । ठीकम ठीक 'पिता' कथा जकाँ विकृति केँ विनष्ट करबाक अभियानक क्रम मे जखन कखनो सामाजिक चेतनाक भ्रूण बनैछ, नेता-दलाल-ठिकेदार-वर्ग अहिना अपन खलनायकी देखबैत स्वार्थान्ध भए गर्भपात प्रायोजित करैछ आ कौआ-लूटि होअय लगैछ । मुदा की कोनो समाजक लेल ई विकृतिकरण, चेतनाक नैसर्गिक भ्रूणीकरण आ प्रायोजित गर्भपातीकरणक प्रक्रिया शाश्वत थिक ? नहिं, किन्हुँ नहिं ।

ई सामयिक क्षण भंगूर, तात्कालिक, संक्रान्तिकालीन, सत्तावादी थिक । चेतना तं आत्माक अमरत्वक सिद्धान्त जकाँ अज्जर-अम्मर होइत अछि । चेतना सदतिकाल संघर्षरत रहैत अछि । खाहे ओ हमरा लोकनिक आँखिक स्थूलताक कारणें अदृश्य हो अथवा सूक्ष्म दृष्टि अर्जित केला सँ दृश्य । तं की प्रभासजीक उद्देश्य छल विकृति आ गर्भपातक मात्र वर्णन क' क' यथा-स्थितिक गौरवान्वीकरण ? की ओ विकृतिक वर्णन मे वेशी मगज खपौलनि आ चेतनाक जीवन्तता सँ बेशी गर्भपात मे आस्था देखौलनि? की ई आरोप दमगर अछि ? की ओ चेतनाक असहज दीर्घ जीवन इमानदार रहि प्रस्तुत क' संकैत छलाह आ से यथार्थ होइत ? की चेतनाक काल्पनिक विजयक चित्रण क' क' 'स्यूडो मार्क्सवादी कथाकार बनितथि तं हुनक लेखकीय व्यक्तित्व एतेक विश्वसनीय होइत, जतेक आइ अछि ? प्रश्न फेर ईहो उठैछ जे कीँ प्रभास जी मे अपन युगक सीमा तोड़बाक लेखकीय सामर्थ्य छल आ से ओ क' सकलाह ? नहिं, हुनका मे अपन युगक सीमा तोड़बाक लेखकीय सामर्थ्य नहिं छल । ई आश राखब थोड़ेक बेशी हैत । प्रभासजीक जीवन आ पृष्ठभूमि केँ देखी तं स्पष्ट हैत जे ओ ओतबे क' सकैत छलाह जतेक केलनि । किछु दिन आर जीवन रहितनि तँ आर-आर परिमाण मे उपलब्धि अवश्य होइत । किछु आर विविधता केँ अ. पन उपलब्धिक राजमुकुट

मे अवश्य जोड़ितथि । मुदा तकरो ई अर्थ नहि जे हुनक उपलब्धिक स्टॉक कोनो कम अछि ।

प्रभासजी अपन 'पिता' कथा मे बहुत स्पष्ट छथि । बाद मे देखल गेल जे 'नवारंभ' अथवा अपन आन-आन उपन्यास सभ मे ओ आर घनगर-चित्र प्रस्तुत कयलनि आ चेतना केँ पुष्ट बनयवाक प्रयास कयलनि । ताहि सँ हुनक लेखकीय दायित्वक निर्वाह भेल ।

मुदा क्षमा करब !

ई तँ हम किदन-कहाँदन कहि देल ! हम तँ एकटा गामक गप्प कह' चाहैत रही जतय प्रभासक कथाकारक पिता रहैत छलाह । पिता आदर्शवादी हेडमास्टर छलथिन, तें वित्तमंत्री सँ इसकुल लेल अनुदानक याचना केलनि "पिता" अत्यंत सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता छलथिन आ सामाजिक समरसता मे रमिक' समाजोत्थानक उत्साह प्रदर्शित करैत छलाह । नवका पीढ़ीकेँ दिशा-निर्देश देवाक लेल सतत तैयार अपन पीढ़ीक प्रतिनिधि 'पिता' अर्थात 'दादा' एकदिन एतेक श्लथ आ शिथिल भ' जाइत छथि नैराश्य सँ आ 'यूरीनिया' क रोगी बनि जाइत छथि । कथाकार अर्थात् नवका पीढ़ी ओहू हालत में हुनका सँ दिग्दर्शन/संदेशक आश रखैत अछि । टूटनक दंश भोगैत आ "डिप्रेशन' क गहींर अवसाद में डूबल कोनो व्यक्ति पिता महाप्रयाणो कालक संदेश देबा में समर्थ नहिं छलाह । ममता नेह आ आत्मीयता सँ भरल कोनो 'पिता' दण्ड आ प्रतिहिंसा नहि पोसि सकैत छलाह । आ सेहो एहेन आदर्शवादी आ गाँधीवादी ! हुनकर सामाजिक संलग्नता गाँधीवादी समाजवादक नजदीक 'पिता' केँ अवश्य ठाढ़ करैत अछि, जतय हिंसा/प्रतिहिंसा निषेध थिक ।

मुदा गामक एतेक चिन्ता कयनिहार पिताक संग गाम नहिं अछि आ ओ एकसर रूग्ण पड़ल छथि मृत्युशय्या पर आ सेहो भीतर सँ टूटिक' । जहिया युद्धक्षेत्र आ कर्मक्षेत्र मानि इसकुल जाइत छलाह, तहियो सम्पूर्णता मे गामक चिन्ता करैत छलाह–आ कथाकार पुत्रकेँ अपन पत्र मे गामक.तथाकथित अ घटनो सभकेँ विशद वर्णन करैत लिखैत छलाह।

आ से भीष्म पितामह जँ असगर शर-शय्या धेने होथि, ...वाध्यता मे अपना अन्तस मे डूबल, तं गामक बइमानीक मादे आर किछु कहब शेष नहिं रहि जाइछ। कथाकार फेर इहो गछैत छथि जे जँ 'दादा' पिता क पत्र मे वर्णित गामक परिचय नहिं रहितनि तं ओ गाम सँ दूर भ' जइतथि। अपन पूर्व-पीढ़ीक योगदान केँ गछब कथाकारक कृतज्ञ-भावना थिक, जे इमानदार अछि ।

कथाक अन्त अपन युगक मांगक अनरूपहिं कारुणिक आ दर्दनाक अछि–से पैघ बात नहिं थिक । पैघ बात ई थिक जे जीवकान्त कथाकार प्रभास पर ई आरोप लगौलनि वा प्रशंसा केलनि जे प्रभासजी द्वारा सृष्ट कथानायक सामान्यत: 'एकोमोडेटिंग' होइत छनि । जीवकान्त जी ईहो लिखने रहथिन जे प्रभासजीक कथा मे प्राय: दू बिन्दु

होइत छनि- एक पिता आ एक पत्नी । आ कथानायक प्राय: दूनू बिन्दुक बीच डोलैत वा 'ओसिलेट' करैत रहैत छनि ।

मुदा कथाकार जखन घोषणा करैत छथि जे ओ पहिल बिन्दु आब टूटि गेल तँ बहुत दर्दनाक स्थिति उत्पन्न होइछ । कथाकार अर्थात् 'हम' एतेक विचलित होइत छथि जे ओहि दू बिन्दु कें अस्वीकार कए अपन कथामे मात्र एक बिन्दु रहवाक बात करैत छथि आ तकर चारूकात शेष सभ सम्बन्ध गाम-घर, सम्पूर्ण जीवन आ लेखकीय वा वैयक्तिक सामर्थ्य कें । आ से एक बिन्दु मात्र 'पिता' कें ओ मानलनि । ओही पुरान एकमात्र बिन्दु पर अहुरिया काटि-काटि क' घूरब आ रहब-कथाकार अपन नियति कहलनि अछि । मुदा से कतेक तथ्यात्मक थिक ? कतेक सत्य ?

सत्य मात्र 'पिता' कथाक सन्दर्भ मे मानल जा सकैछ । ओ मात्र 'दादा' कें स्वीकार कयलनि आ शेष सभ बिन्दु (पत्नी सेहो) कें अस्वीकार क' देलनि । से 'पिता' कथाक पिताक चरित्रक गढ़नि लेल हुनका आवश्यक बुझयलनि । पिताक एहेन प्रभाव 1973 धरि कथाकारक जीवन पर छल । समाजक 'पिता' क रूप मे हुनकर 'दादा' तँ परमआदरणीय छथिने, अपितु पुरूष-प्रधान समाजहु मे जहुधा पुरूषे आदर्श-पुरूष बनि क' नेतृत्व मे ठाढ़ होइत छै, तें प्रभासजी द्वारा माता अथवा पत्नी कें प्रधान बनाक' एहेन कथा लिखब अपन समकालीन समाज आ युगक सीमा तोड़वाक प्रयास होइत। मुदा से काज ओ 'पिता' कथा लिखबाक काल नहिं क' सकलाह । ओ से कइयो नहिं सकैत छलाह, कारण 'दिदवल' पत्नी केर जरूरति 'पिता' कथा मे नहिं छलनि आ ने 'दिदवल' क तेहेन प्रभाव 1973 मे कथाकार पर छलनि । असल मे अपन पुरुष-प्रधान समाज मे 'पिता' क अछैत 'पत्नी' कें दोसर बिन्दु ओ नहिं बना सकैत छलाह।

मुदा, बाद मे, हमरा लोकनि देखल जे 'दिदवल' कथाकारक दोसर बिन्दु अवश्य प्रमाणित भेलखिन ।

मुदा की जीवकान्तक दू बिन्दुक बीच 'ओसिलेट' करबाक बात गछि क' कथाकार अथवा व्यक्ति प्रभास जँ उदारता देखबितथि तँ की हुनकर कथाकार व्यक्तित्वक अहित होइतनि वा 'पिता' कथा पर तकर नकारात्मक प्रभाव पड़ैत ?

आइ प्रभासजी व्यक्ति रूप मे उपस्थित नहिं छथि । आइ हमरा लोकनि हुनकर जीवनों कें अपेक्षित निरपेक्षता आ निर्वैयक्तिताक संग मूल्यांकित क' सकैत छी आ तकर आधार आन कोनो रचनाक अपेक्षा 'पिता' कथा वेशी प्रावधान करैत अछि ।

असल मे प्रभासजीक जीवन एहि बातक प्रमाण अछि जे ओ दू बिन्दुक बीच कहियो 'ओसिलेट' नहिं केलनि । जहिया पिता जिवैत रहथिन ओ पिता मे लिप्त छलाह। मात्र पिता टा मे । जहिया पिता चलि गेलखिन, पत्नी दिदवल मे लेपित रहलाह, बाल-बच्चा

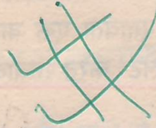
आ साहित्य मे लेपित रहलाह, एतावता एक कालखण्ड मे एकटा बिन्दु प्रधान रहैत छल हुनका जीवन मे । तें ओसिलेट' करैत रहबाक बात कें ओ स्वभावत: पिता' कथा मे नकारलनि ।

'पिता' कथा मे प्रभासजी पुरना पीढ़ी बनाम नवका पीढ़ीक सीमा आ दूरी सेहो संकेतित केलनि अछि । 'पिता' सन जिम्मेवार नेता वा प्रतिनिधि कें तँ गाम नहिंएं चीन्हि सकल, नवका पीढ़ी अपनो लेल अपन सीमाक निर्माण करैछ आ पुरनो पीढ़ीकें गाम सँ काटवाक प्रयास करैछ । पुरना पीढ़ी कें अपना सीमा मे रहवाक आदति लगेबाक उपदेश कथाकार 'पिता' कें दैत छथि । ई स्पष्टत: दू पीढ़ी मे सोचक अन्तर आ एक तरहें नवका पीढ़ीक पतने मानल जायत । तकर कारण ई जे गाम कें ओकर दुर्गुणक संग स्वीकार करबे गामक संग प्रेम करब थिक । एतय ई स्पष्ट करी जे गामकें दुर्गुणक संग स्वीकार करब, गामक दुर्गुण कें समर्थन करब नै थिक । ककरो प्रति प्रेमभाव पोसवाक ई अर्थ किन्हुँ नहिं जे खाली ओकर गुण सँ प्रेम कयल जाय, बल्कि, ओकरा सम्पूर्णता मे स्वीकार करबे प्रेम थिक आ ताही स्वीकार सँ अवगुणक विनाशक रस्ता निकालल जाइत छै । नवका पीढ़ी गामक दुर्गुण सभ सँ विखिन्न भ' भ' गाम सँ पड़ाइत रहय तँ ओ गाम सँ प्रेम करवाक दाबी नहिं राखय । से नवका पीढ़ीक सीमो देखार होइए 'पिता' मे आ गामो अपन सीमा 'पिता'क मृत्युशय्या स्थिति मे देखार करैए।

वस्तुत: 'पिता' कथाक घट्ना टूटनक एकटा निरंतर (परमाणविक) प्रक्रिया /श्रृंखला थिक । सामन्तवादी व्यवस्थाक टूट, गामक टूट, सामाजिक आ सामूहिक भावनाक टूट, संयुक्त परिवारक टूट, व्यक्तिगत परिवारक टूट आ अन्तत: एकटा व्यक्तिक टूट, मूल्य आ आदर्शक टूट...। एहि टूटक लेल जतबे जिम्मेवार पुरातनपंथी आ सामन्ती ऐंठी आ प्राचीनताक विखण्डन अछि, ततबे पाश्चात्य-हवाक विकृति सेहो । ई दुनू धाराक विकृतिक घालमेल सँ एहेन परिस्थिति उत्पन्न भेल अछि जे 'पिता' असगर मृत्युशय्या पर शरबिद्ध भेल पड़ल छथि आ समुच्चा गाम नितुआन भेल अछि वा स्वार्थान्धता मे आकंठ डूबल अछि । गामक 'दादा' लेल ककरो मोन वा मुँह मे कोनो संवेदना बाँचल नहिं छैक ।

'पिता' कथा मे एकटा टुटैत परिवार, अवसान होइत पीढ़ी (दादा) आ आकार लैत एकटा नव पीढ़ीक बीच वस्तुत: कथाकार 'ओसिलेट' करैत रहैत छथि, जेना जीवकान्त जीक विचारें प्रभासजीक कथानायक 'ओसिलेट' करैत रहैत छनि । ओना ई कहब (जीवकान्तजीक) उचित छनि वा नहिं जे प्रभासक कथानायक बड़ 'एकोमोडेटिंग' होइत छथिनं, से फूट पड़ताल करवाक विषय थिक । कम-सँ-कम 'पिता' कथाक नायक (दादा) तँ गाम वा परिस्थिति वा नवका पीढ़ीक संग 'एकोमोडेटिंग' रूखिक प्रदर्शन नहिंए करैत छथि-से स्पष्ट छैक ।





अशोक

अन्तरंगवार्त्ता जे नहि भ' सकल

सन्धान–1 मे कथाकार राजमोहन झा संग अन्तरंगवार्त्ता रहय । ओही क्रम मे सन्धान–2 मे प्रभास कुमार चौधरी सँ अन्तरंगवार्त्ताक योजना छल । कथाकार–उपन्यासकार प्रभास कुमार चौधरी सँ अन्तरंग वार्त्ता लेल हुनका एक प्रश्नावली पठौने रहियनि । दिसम्बर 1997 मे गछने रहथि जे जनवरी 1998 मे अवश्य ओकर उत्तर पठा देब । पठा नहि सकल रहथि । प्रतीक्षा मे रही जे एहि बेर पटना औताह त' अवश्य लेने औताह । मुदा पटना आएल हुनकर मृत शरीर। उत्तर नहि आबि सकल । उत्तर नहि द' सकलाह । ई अनुत्तरित प्रश्न के हम आब अपने लग राखिक' की करब ? प्रभासजी त' उत्तर नहि द' सकलाह । आब एहि अनुत्तरित प्रश्न सभकेँ मैथिलीक पाठक, समीक्षक, आलोचक लग प्रस्तुत कऽ रहल छी ।

(1) भाइ, अहाँक उपन्यास, कथा सभ पढ़ि लेलाक बाद कोनो मैथिली पाठक के अपन मातृभाषा पर गौरव भ' सकैत छै । पूराक पूरा उपन्यास एक बैसक मे पढ़बा लेल वाध्य भ' कए अहाँक लेखनीक चुम्बकीय गुण के सेहो जानल जा सकैए । आम पाठक सँ ल' कए प्रवुद्ध पाठक धरि के तृप्तिक हेतु अहाँक अनेक कथा / उपन्यास उपलब्ध अछि । पाँच-पाँचटा मोटगर उपन्यास, सएटा सँ बेसी कथाक रचना, युवा लेखन संस्थाक आजीवन सचिवक उत्तरदायित्व, अनामा, कथा-दिशा, प्रवासी पत्रिकाक सम्पादन, अपन अनुज रचनाकार केँ सतत प्रोत्साहन देबाक लेल उद्यत अग्रज–ई सभ रूप कार्य मे कोना तालमेल बैसबै छी अहाँ ? खास क' कए मिथिलाक एकटा जमीन्दार परिवारक राजसी लोक आ जीवन बीमा निगमक उच्च अधिकारी सँ ई सभ कोना सम्भव भेलैक ? कोन उद्दाम भूख, कोन अतृप्ति, अहाँ सँ ई सभ करौलक आ एखनहुँ करा रहल अछि ?

(2) अहाँक कथा-संग्रह प्रभासक कथा जाहि पर अहाँके साहित्य अकादमी सँ पुरस्कार प्राप्त भेल अछि ओहि मे अहाँ किछु आशीष । शुभकामना । सम्मति छपने छी । पहिले सम्मति अछि मिथिला मिहिर, कथा अंक 1962 क 'प्रभास कुमार चौधरी माने विरोधाभासक साक्षात उदाहरण ! एक दिस राजसी मनोवृत्ति दोसर दिस स्वावलम्बिताक हेतु घनघोर श्रम ! पटना विश्वविद्यालयक रंगीन वातावरण मे रहितो फूसि फटक सँ निर्लिप्त । प्रतिभाक एहन धनी जे अल्प समय मे स्वनामधन्य ! स्वाध्यायी, स्वयं-सेवक ।' ई सम्मति अहाँके अपना केहेन लगैत अछि ? एहि सम्बन्ध मे कोनो टिप्पणी कर' चाहब ?

(3) भाइ, अहाँक व्यक्तित्व मे ई विरोधाभास लेखन मे कोन रूपें सहायक भेल अछि ? कोना सधलहुँ एकरा अहाँ जाहि सँ एतेक रास नीक आ श्रेष्ठ कथा, उपन्यास अहाँ मैथिली मे द' सकलहुँ ?

(4) भाइ, 'नवघर उठय पुरान घर खसय' अहाँक पहिल कथा संग्रह थिक ।ओहि संग्रहक पहिल कथा अछि 'आयल पानि गेल पानि...।' ओहि कथाक नायिका अछि एकटा ट्रेन्ड दाइ गंगा । सभ लोक ओकरा भ्रष्टा बूझैत छै । ओकरा सम्बन्ध मे स्वादि-स्वादि गप्प करैत अछि। कथाक अन्त मे गंगा कहैत अछि, 'हम जत' जाइ छी तेरह वर्ष सँ तिरपन वर्षक बएसक लोक के भ्रष्टे पबैत छी । हमरा एहन सन लगैत अछि जे संसार आइ स्त्रीगण के माय ओ बहीनिक दर्जा नहि देब' चाहैत अछि । ओ चाहैत अछि जे स्त्रीगण ओकर उपभोगक बस्तु बनल रहए ।' लगभग पैंतीस-चालीस वर्ष पूर्व लिखल अहाँक कथाक नायिक गंगा जँ आइ पुनः ओहि गाम मे आबए त' की अहाँके लगैए जे ओकरा कोनो परिवर्त्तन लगतैक ? एहि अन्तराल मे लोकक मानसिकता मे कोनो नोकरिहारा स्त्रीगणक प्रति कोनो परिवर्त्तन अयलैक अछि ? यदि हँ त' केहेन ? कोना? यदि नहि त' किएक नहि ?

(5) मिथिलाक जे कस्वानुमा गाम सभ अछि ओहि मे कोन तरहक परिवर्त्तन अहाँके दृष्टिगोचर होइत अछि ? सामाजिक-सांस्कृतिक आ आर्थिक रूप सँ कि गाम आगू बढ़ल अछि ? खास क' कए देशक स्वतंत्रताक बाद ? अहाँ तँ हालहिं मे विदेश भ्रमण क' कए वापस अएलहुँ अछि । सम्पूर्ण देश मे सेहो विभिन्न स्थान पर जयबाक अवसर भेटल अछि अहाँके । मिथिलाक गाम ओ आन ठामक गाम मे कोनो अन्तर लगैत अछि अहाँके ? मिथिलाक गाम के शेष भागक गाम सँ कोना फराक करबैक?

(6) एक क्षेत्रक रूप मे मिथिला देशक अन्य भाग सँ सामाजिक आ सांस्कृतिक दृष्टि सँ कोना फराक अछि ? मिथिलाक वर्त्तमान के अहाँ कोना परिभाषित करबैक?

(7) भाइ, अहाँक विभिन्न कथा मे मिथिलाक ब्राह्मण-सामंतीलोक, निम्नवर्गीय जन-बोनिहार-श्रमिक आ शहर मे रहनिहार मैथिल खासक' कए ब्राह्मण पात्र-चरित्र भेटैत अछि । ई पात्र सभ गुजरात, उड़ीसा, वंगाल, महाराष्ट्रक कोनो गाम, शहर मे रहनिहार ओहि क्षेत्रक लोक सँ कोन रूपें फराक आ विशिष्ट लगैत अछि अहाँके ? कहबाक अर्थ जे कोन रूप मे मैथिल लगैत अछि अहाँक पात्र सभ ?

(8) भाइ, अपन उपन्यास 'अभिशप्त' मे अहाँ किछु तथाकथित मैथिल सेवी। समर्थक नेता पर टिप्पणी कएलहुँ अछि ? हुनका लोकनिक मानस उघार भेल अछि अहाँक कलम सँ । ओना एहि क्रम मे उपन्यासक नायक प्रकाश जे एकटा लेखक छथि हुनको मानसिकता, द्वैध उघार भ' जाइये । मैथिली सेवी नेता आ मैथिली लेखकक बीच सामंजस्यक अभाव बहुत दिन सँ चलैत आबि रहल छैक । एक दोसरा के बुझबाक सम्मान करबाक जेना भावने नहि रहि गेलैक अछि । एम्हर ई बात आर तीव्र भ' रहलए। एक दोसरा पर दोषारोपण करबाक, उत्तरदायित्व फेकबाक, एक दोसराक काजक निन्दा करबाक प्रवृत्ति बढ़ि रहलए । की एकर कारण मैथिलीक घर ढनमनायब थिक ? एकर मूल मे लक्ष्य विभ्रम, यथार्थक अज्ञानता अथवा प्राप्त सुविधाक उपयोग । उपभोग लेल कटाउझ त' ने थिक ? अहाँ त' सामन्ती स्वभाव बुझबाक मर्मज्ञ छी । की सामंजस्य ओ एकता मे सैह स्वभाव त' ने बाधक भ' रहल अछि ? की मानैत छी अहाँ ? की लगैत अछि अहाँके ?

(9) प्रभास भाइ, अहाँ हमरा लोकनिक प्रमुख हस्ताक्षर छी । पछिला कतेक बरखसँ मैथिली कथा-उपन्यास आ ओकर प्रकृति, प्रवृत्ति के एक कलाकारक रूप मे देखि रहल छी। अहींक 'अभिशप्त' उपन्यास मे नायक प्रकाश अंजलि सिन्हा सँ गप्प करैत कहैत छथि, नीक कथा कहब आ लिखब जेना भूतक गप्प भ' गेल हो। एकटा पैघ महत्त्वपूर्ण वक्तव्यक संग एकटा फिसड्डी रचना । वक्तव्य सर्वत्र भेटि रहल अछि रचना कतहु नहि । जेना वक्तव्य आ नारावाजी साहित्य बनि गेल हो ।' चारूकात जे लिखल जा रहल छल तेकरा पढ़ला पर प्रकाशक ई वक्तव्य रहय । की प्रकाशक वक्तव्य के अहाँ अपन वक्तव्य मानब ? यदि हँ, त' प्रकाशक तहिया देल वक्तव्य आ आजुक वक्तव्य मे मैथिली कथाक सन्दर्भ मे कोनो फर्क पड़तैक ? की आइ लिखल जा रहल मैथिली कथा मे अहाँके तहिया सँ कोनो परिवर्त्तनक संकेत भेटैत अछि ? यदि हँ त' कोना ? कने स्पष्ट कहियौक ?

(10) भाइ, गामक कथा खूब कहलियैक अछि अहाँ । गामक लोकक कथा सेहो ।। गाम पर बहुत रास टिप्पणी अछि । गाम मे सम्बन्ध कोना टूटि रहल छैक । किये सुख-दुखक संगी नहि छैक । मौज-मस्तीक पार्टनर छैक । 'अभिशप्त' मे प्रकाशक पिता कहैत छथि जे कोनो टूटल चीजक मरम्मति सम्भव नहि छैक । कारण सम्बन्ध टूटि गेल छै । भाइ, की प्रकाशक पिताक ई टिप्पणी 'कान्ह पर राखल जुआ आर भरिगर' भ' जेबाक कारणे छनि, की लोक मे आयल परिवर्त्तनक कारण ? की अहाँ एहि बात सँ सहमत छी जे टूटल चीजक मरम्मति सम्भव नहि छैक ?

(11) अहाँक विभिन्न कथा मे 'सम्बन्ध' बहुत प्रमुखता सँ उभरिक' अबैत अछि। पिता-पुत्रक सम्बन्ध, भाइ-भाइक सम्बन्ध, पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, दोस, अपना सँ फराक समाज ओ समाजक लोक सँ सम्बन्धक विभिन्न रंग अहाँक कथा पढ़ि देखल जा सकैत अछि । जायज आ नजायज सम्बन्ध सेहो अहाँक लेखनक एजेण्डा मे खूबे

रहल अछि । किए ? की सम्बन्ध अहाँके परेशान करैत अछि ? सम्बन्ध मे आस्था ओ अनास्था पर अहाँक की टिप्पणी होयत ? बदलैत सम्बन्धक जड़ि मे कोन तत्त्व अहाँके प्रमुख लगैत अछि ?

(12) समाज मे बड़का ओ तथाकथित छोटका लोकक बीच सम्बन्ध मे आयल परिवर्त्तनक की प्रमुख कारण अहाँ मानैत छी ? संगहिं सम्बन्ध सुधारबाक लेल की सभ जरूरी लगैत अछि अहाँके ?

(13) भाइ, की अहाँक रचनाकार के लगैत अछि जे विभिन्न सम्बन्ध पर आर लिखबाक आवश्यकता छैक ? कोनो विशेष योजना अछि ? यदि हँ त' किएक ? यदि नहि त' किएक नहि ?

(14) भाइ, अहाँक कथा आ उपन्यासक विभिन्न नायक लोकनि जे साधारणतया सवर्ण वर्ग सँ अबैत छथि कोनो दुख, संताप, क्षोभ, ओझराहटि मे कोनो मलहटोली, खतबे वा मुसहरटोली दिस चल जाइत छथि । किए ? कोनो विशेष प्रयोजन सँ अथवा अनायासे ? की टूटल सम्बन्धक मरम्मति लेल अथवा शक्ति ग्रहण करबाक लेल ? की स्नेह-सुख पयबाक लेल ? कोनो बुढ़िया वा मोदिआइन, झिल्ली-मुरहीवाली स्नेहिल स्त्रीक सानिध्य हुनका किएक नीक लगैत छनि ?

(15) प्रभास भाइ, अहाँक उपन्यास युगपुरुष, राजापोखरि मे कतेक मछरी, नवारम्भ, हमरा लग रहब आ अनेकों कथा मे नायकक वाल आ किशोर अवस्थाक वर्णन बहुत आवेश सँ कएल गेल अछि । गामक बोन-झाँखुर, स्कूल, बुढ़िया सभ, छौंड़ा-छौड़ी संगी, ढहल-ढनमनायल घर, स्नेह करैवाली दादी, काकी कतेक रास चम्पा, नीरू, आ विढ़नी । भाइ, एकटा बात पूछै छी, लगैत छै जेना सभ नायक पात्र मे सँ बालक प्रभास टुकुर-टुकुर तकैत हो । अपन नेनपन किएक एतेक पसिन्न अछि अहाँके ? की नेनपनक किछु आरो बात रहि गेल अछि जेकरा कहबाक खगता अहाँ अनुभव करैत होइ ?

(16) भाइ, अहाँक विभिन्न उपन्यास, कथा मे किशोर आ वाल-अवस्था मे कतेक रास 'चम्पा' हेरा जाइत अछि । नायकक संग ओहि सखी सभ सँ टूटि जाइत छैक। जकर टीस ओ कचोट नायक बहुत दिन तक भोगैत रहैए । ई टीस 'बिढ़नीक डंक' जकाँ 'नेपाली बोको' के दुख दैत रहैत छैक । अपन सखी सभ सँ एतेक स्नेह केनिहार नायक के जखन कहियो पैघ भेला पर ओ सखी लोकनि ओहिना अनमधाने भेटि जाइत छथिन त' ओ पबैत छथि जे कियो सुखी नहि छथि । कोनो ने कोनो कारणे ओ स्त्री सभ वियाहक बाद कष्टे मे छथि । की नायकक संग वियाह सँ ओ नेनपनक सखी सुखी भ' जइतथि ? जखन कि नायक लोकनि त' हुनका छोड़ैत रहलथिन अपन कैरियरक पाछू ? कहियो हुनकर हाथ पकड़बाक हिम्मति नहि केलथिन ।

(17) भाइ, अहाँक उपन्यास युगपुरूष मे नायक अंत मे कहैत अछि अपना सँ, 'मुदा हम ? हम की करब ? एहिना गाम आ पटनाक बीच डोलैत रहब पेण्डुलम जकाँ ? कहियो स्थिर नहि भ' सकब । आनन्द, रमण, रतना सभ त' आगू बढ़ल

जा रहल अछि । हमहीं ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छी ?' ओ तकरबाद लाइन पर सँ पाथर उठा-उठाक' बताह जकाँ विजलीक खम्भा पर मार' लगैत अछि । भाइ, की अहाँ अनुभव करैत छी जे युगपुरुष क 'हम' एकदम भीरु आ भावुक लोक अछि? खम्भा पर पाथर मारब ओकर खौंझक द्योतक थिक ?

(18) भाइ, 'युगपुरुष' चरित्रहीन, बदमास, चालाक, धुरफन्दी रतना थिक की ओकर संगी-भावुक, भीरु, नीक लोक 'हम' ? केकरा अहाँ युगपुरुष मानबैक ? रतना यदि युगपुरुष थिक त' किए ?

(19) भाइ, मैथिली कथा/उपन्यास संयुक्त परिवार व्यवस्था के विषय बनाक' बहुत कम लिखल गेल अछि । ओहि पर कम टिप्पणी आयल अछि । अहाँके आलोचक लोकनि ढहैत सामंती व्यवस्थाक कथाकार कहैत छथि । की संयुक्त परिवारक संरचना पर सामंती स्वभाव आ मानसिकता फड़ल-फुलायल ? सामंती व्यवस्था ढहल त' संयुक्त परिवार व्यवस्थो ढहि गेल । की लगैए अहाँके ?

(20) भाइ, हमरा लगैए अहाँक लेखक अपन विभिन्न कथा/उपन्यास मे ढहैत आ टूटैत संयुक्त परिवार व्यवस्थाक दर्द के अनुभव करैए । ओकरा लगैत छै जे किछु छूटि रहल अछि । टूटि रहल अछि । संयुक्त परिवारक सभ सदस्य के डेबल जेबाक बैचेनी अनुभव करैए। मुदा से आर्थिक असमर्थताक कारणे सम्भव नहि भ' पबैत छै। मुदा चाहैत अछि जे होइ। एहिसँ उत्पन्न तनाव अनेक कथा मे दृष्टिगोचर होइत अछि। की हमर एहि बात सँ अहाँ सहमत छी ?

(21) प्रभास भाइ, हमरा इहो लगैए जे अहाँक विभिन्न नायक सभ जे संयुक्त परिवार व्यवस्था टूटबाक कारणे क्षोभ आ विभ्रमक स्थिति मे अछि, सन्धिस्थल पर ठाढ़ अंतिम लोक थिक । ओ संयुक्त परिवारक टूटल-भांगल अवशेष पर ठाढ़ अछि। जेकरा पुरना छोड़लो नहि जाइत छैक आ नवका नीको लगैत छैक । हमर एहि मन्तव्य पर अहाँ कोनो टिप्पणी कर' चाहब ?

(22) भाइ, अहाँक एक बड़ नीक कथा अछि 'अरगनी' । जकर अंतिम पाँती अछि, 'ओहिना पड़ल-पड़ल खिड़की सँ आङ्गन मे ठाढ़ 'अरगनी' के देखैत छी जाहि पर आइ बाँसक नव टुकड़ा राखि देल गेल छैक आ ओहि पर बहुत रास कपड़ा सुखा रहल छैक' भाइ, पीढ़ी दर पीढ़ी चलैत कर्त्ता-पुरूषक उत्तराधिकार की अहाँके अकच्छ करैत अछि ? मध्यवर्गीय परिवारक जेठ वेटा होयब केहेन लगैत अछि अहाँके ?

(23) प्रभास भाइ, अहाँक 'लिफाफ बन्द: चिट्ठी खूजल' आ 'पिता' कथाक पिता आ 'सम्बादहीन' कथाक पापा मे पीढ़ीक अन्तर मौजूद अछि । समयक अन्तर स्वाभाविक अछि । एकटा रचनाकारक रूप मे दूनू पीढ़ीक पिता मे की अन्तर पबैत छी अहाँ ? एकटा पिता आ व्यक्तिक रूप मे दुनू पिताके कोना फुटकाओल जा सकैए?

(24) भाइ, अहाँक 'भयाक्रान्त' कथा मे पत्नी पति के कहैत छथि, 'असल मे अहाँ सन लोक के विआहे नहि करक चाही । सभटा झंझट सँ चैन ।' की अहाँके लगैत अछि जे पतिक कर्तव्य बहुत जटिल भेल जा रहल छैक ? अथवा लोक व्यक्तिपरक

होइत-होइत केवल अपना मे सिमटि के जीब' चाहैए ? निखालिस 'अपन' सुख भोग' चाहैए । पुरूषक एहि क्षरण पर कोनो टिप्पणी ? जेना अहाँ ओही कथा मे कहैत छी जे 'एहनें क्षण मे पुरूषक मोन मे बुधियारी जन्म लैत छैक'।

(25) भाइ, लगैए हमरो मोन मे बुधियारीक जन्म भ' रहल अछि । कनियें जोर सँ पुछैत छी, की अहाँके वंगाली स्त्री नीक लगैत अछि ? नीक लगबाक की कारण सभ भ' सकैत अछि ?

(26) बंगाली उपन्यास केहेन लगैत अछि अहाँके ? की अहाँके लगैए जे शरदचन्द्र, विमल मित्र, लोकनि बंगाली स्त्रीक महानता, प्रौढ़ता, देखेबाक लेल, हुनका लोकनि के स्नेहमयी, ममतामयी, बनेबाक लेल कोनो इन्द्रजाल रचैत छथि ? यथार्थ सँ किछु उपरो भ' जाइत छथि । अहाँके ई बात एहि दुआरे पुछैत छी जे अहाँ अपन 'हमरा लग रहब ?' उपन्यास मे शीला सन चरित्रक रचना कएल अछि । जे बहुत उदात्त अछि ।

(27) एही प्रसंग आ सन्दर्भ मे एकटा आर जिज्ञासा । मैथिली उपन्यासकार बंगला सन 'इन्द्रजाल' किएक नहि रचि पबैत छथि ? की स्त्रीक प्रति अपन दृष्टिकोणक कारणे ? वर्णवादी आ पुरूष वर्चस्वक मानसिकता त' ने हावी छनि ? की लगैए अहाँके?

(28) भाइ, बात के कने दोसर दिस ल' चली । अहाँक कथा आ उपन्यास सभ मे दलित आ पिछड़ल लोक सभक इज्जति आ प्रतिष्ठाक प्रश्न मुख्य रूप सँ उभरिक' समक्ष अबैत अछि । बाबू, भैया लोकनि अपन कुल, धन आ सत्ताक निशा मे लचार पिछड़ल लोक के 'लतखुर्दनि' क' कए राखि दैत छथिन । बेटी-पुतहु कें 'घोकि' दैत छथिन । की अखनो स्वतंत्रताक पचास वर्षक वादो अहाँ वैह स्थिति पबैत छी अथवा स्थिति मे कोनो परिवर्त्तन भेलैक अछि । यदि परिवर्त्तन भेलैक अछि त' की अहाँ ओहि सँ संतुष्ट छी ?

(29) अहाँक कथा सभ मे लचार लोकक दैहिक शोषणक गप्प बहुत भेटैत अछि। कतेक कथा त' ओही पर आधारित अछि । सवर्ण समाजक मजबूर ओ गरीब लोक के अहाँ नपुंसक आ स्त्रीके पतिता पबैत छी । दलित आ पिछड़ल लोकक त' प्रश्ने नहि अछि । की अहाँके लगैत अछि जे ई पुरूषक नपुंशकता आ स्त्रीक पतितपना चाहे सवर्ण हो अथवा दलित अर्थक दुष्चक्रक कारणे अछि ? अर्थे मूल समस्या छैक ? यदि आर्थिक आधारं सुदृढ़ भ' जाइक त' दैहिक शोषण आ पतितपना, नपुंशकता समाप्त भ' जेतैक ?

(30) भाइ, अहाँक कथा 'मलाहक टोल'क फुलेसरी नहि बिसरल जाइवला चरित्र अछि । कदाचित् अहूँ ओहि पात्र संग संवेदनात्मक स्तर पर बेस गहींर सँ जुड़ल छी। तैं ओ चरित्र पुनः इन्द्रधनुष मे सेहो आएल अछि । भाइ, एकटा बात पुछै छी । फुलेसरी कहिया धरि चेथरी भेल नुआ के फाड़ि-फाड़िक' ओही मलाहक टोलक ओहि टुट्ठ

गाछ तर नाचि नाचिक' गबैत रहतैक 'हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता' ? की सभ दिन धरतीक दरारि फाटले रहतैक ? की इन्नर देवता आबिक' कहियो धरतीक कोखि जुड़ौतैक नहि ? धरतीक वेटा मे ओ सामर्थ कहिया औतैक भाइ ? एक रचनाकार रूपमे की लगैए अहाँके ?

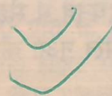


(युवालेखनक गोष्ठी मे : सुकान्त सोम, महाप्रकाश, प्रभास कुमार चौधरी रमानन्द झा 'रमण' ओ सुभाष कुमार चौधरी)

(31) प्रभास भाइ, एकटा जिज्ञासा ! की रचना सभक माध्यमे अहाँ अपन आत्मकथा लीखि गेल छी अथवा फराक सँ आत्मकथा लिखबाक खगता अनुभव करैत छी ? यदि करैत छी त' किए ?

(32) अन्त मे भाइ, कत्तौ अहाँ अपन घर बनेबाक सूरसार क' रहल छी की ने ? कोनो शहर मे ?





कुणाल

एकटा खिस्सा अविराम; 'अभिशप्त' सँ 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी धरि'

लेखन एकटा सायास कर्म अइ जकर उद्देश्य होइ छै अपन इच्छाक पूर्ति । इएह इच्छा, आग्रह, कामना-रचनाक उत्प्रेरक तत्व होइए । एहि तरहें, रचना मे वर्णित संसार, रचनाकारक अप्पन संसार होइ छै जकर सत्य, रचनाक बाहरक संसार के प्रभावित करबाक प्रयास करै छै । ई प्रयास, रचनाक सत्यक कनवीक्शनक अनुसारे कम वा बेसी भ' पबैए । कोनो एकटा तथ्य, मुद्दा, समस्या वा घटना अपना आप मे रंगहीन होइए । गंधहीन आ स्वादहीन सेहो । ओइ मे अपना के ओझरौनिहार, अपन व्याख्या स' रंग, गंध आ स्वाद भरैए । ई व्याख्या निर्यंत्रित होइए विचार स' । अतएव रचना निरपेक्ष नै रहि सकैए । तट पर स्थित नै भ' सकैए रचना । ओकरा पानि मे पैसहि पड़तैक। आब देखबाक बात ई छै जे ओ कत्ते गहींर पैसैए । आब हम देखै छी 'अभिशप्त' (1970) क संसार के ।

प्रभास कुमार चौधरीक पहिल उपन्यास 'अभिशप्त' मे एकटा जोड़ी अइ, प्रकाश आ मीराक । ओकरा सबहक संग छै 'सात गाम मांगू की एक गाम मांगू, हासिल एक्के तामा' बला मिथक । एकरा संग-संग छै एकटा कँसमसी आ असोकर्य । असोकर्यक कारण छै घरक-परिभाषा । मीराक 'अप्पन घर' आ प्रकाशक 'अप्पन घर' फराक-फराक छै । मीरा सात्विक प्रतिरोध स' ल' क' वाक-आउट तक निरंतर सक्रिय रहैए आ प्रकाशक मोन मे भरल जाइ छै अवसाद । रचना प्रकाश दिस ठाढ़ भ' क' भेल छै। फलतः सौंसे उपन्यास मे भकोभन्न, उदास दुपहरिया छै । अंततः सांझ होइ छै । सांझ मे 'दखिन पवन' सिहकै छै । मुदा से गाम (प्रकाशक गाम) स' आएल मनिआर्डरक गोधुलि-वेलाक उपरान्त ।

मुदा एइ स' पहिने घरक परिभाषा । मीराक घर मे पति, संतान आ नैहरक लोक छै । प्रकाशक घर मे मीराक सासुरक लोक सेहो मिज्झर भ' जाइ छै । मीरा के से स्वीकार्य नै । प्रकाश के से त्याज्य नै । मीरा नैहर-गमन क' जाइए आ प्रकाश अपना

अवसाद मे डुबि जाइए । किएक त' ओ एकटा नीक लोक अइ । मितव्ययी -उद्यमशील पिता आ निरंतर घर-दुआरि, लोक-वेद मे लागलि स्नेहमयी माएक संतान अइ । मीराक अवज्ञा ओकरा लेल किंकर्तव्यविमूढ़ताक स्थिति ठाढ़ क' दै छै । स्त्री अपना विचार पर एना भ' क' अड़ति से ओकरा लेल अनचिन्हार छलै । ओना प्रकाश पढ़' मे बेस चंसगर छल । एखनो अइ । सुशील अइ । मारि झगड़ा स' कोसो फराक रह'बला। ओइ उमेर मे प्रेमो केने छल । आब लेखक माने कथाकार सेहो अइ । आदंके पटाक्षेप भेल ओइ प्रेमक खिस्सा के रचनाक स्त्रोत बना लेलकए । ई हम नै, प्रकाशक भूतपूर्व प्रेमिका स्वयं कहै छै-स्टीमर पर । प्रकाश ओकरा कोनो उत्तर नै दै छै । किएक त' अपन समस्त युद्ध ओ अपना मोने मे लड़ैए । एक दिस अपने, बाकी सौसें दुनिया दोसर दिस । बेचारा के बड़ दुंख छै । सनगर, स्थायी नोकरी छै । ओहू मे युनियनक बखेड़ा जाइ स' अफसर वर्ग के त्रास होइ छै जखन कि युनियनक नेता प्रकाशक नजरिए बड़का लफांड़ि छै । किएक त' ओ कम्युनिज्मक बात करै छै । प्रभासजीक समस्त उपन्यास मे राजनीति स' घोर वितृष्णा छै खासक' कम्युनिस्टक प्रति जकर नामोल्लेख टा मात्र अही उपन्यास मे छै । बाकी ठाम ओ अन्योक्ति संकेत वा उपहासापद शब्द सब स' काज चलौलनिए । अस्तु, हम प्रकाशक बात क' रहल छलौं ।

प्रकाश एकटा नीक लोक अइ । मोन मे हाहाकार आ बहार स' निर्विकार रहबाक प्रचेष्टा मे अपसियांत । मीराक घरक परिभाषा टा मे नै, आफिस मे युनियन, मैथिली भाषा-आन्दोलन मे स्वार्थी झंडाबरदार दिग्गज साहित्यकार सब मे दुरंगी चालि, उपरफांटू-जोगाड़ी सबक वर्चस्व, अप्पन कहब'बला मे दगाबाज...सब मे दुखे-दुख ! एहना मे प्रकाश के मोन पड़ै छै अप्पन गाम । कुम्भी पोखरि आ भालसरीक वृद्ध वृक्ष। पुबारि डयोढ़ी, पछबारि डयोढ़ी । भगिनमान टोल, दछिनबारि टोल । गीतामायक आंगन। आंगन मे अड़रनेबाक गाछ आ गीता । पद्मा । शोभा । अरुणा । मुदा...

मुदा जकरा संग कत्ते ने कूद-फान केने रहए प्रकाश से गीता चारि बच्चाक माय भ' क' गिरथाइन भ' गेल छै । जे देहक आगि स' लह-लह जरैत छल से पद्मा पझाएल गोइठा भ' गेलै । 'मिस्टर जिट' कह' वाली अरुणा जन-अरण्य मे भोतिया गेलै । गाम के अपना मे रीन्यू करैत प्रकाश के स्टीमर पर शोभा भेटबो केलै त' की भेटलै ! 'भरल सींथ, भरल देह । दुनू हाथक दूटा आंगुर पकड़ने दूटा बच्चा आ मुह स' फोंका जकां फूटैत शब्द,' बड़का लेख भ' गेल छै तों...एना खिस्सा लिखि क' हमर सुखी जीवन मे संशयक जहर घोरला स' की भेटैत छौक तोरा...खाली खिस्सा लिखि-लिखि बहादुरी देखौला स' की होयतौक ? एत्तेक बहादुर छलें त' गुण्डा सबहक डरे भागि किएक पड़ेलें ? ओही दिन बहादुरी देखबितें...' प्रकाश के कोनो उत्तर नै फुरै छै ।

'प्रकाश के कोनो उत्तर नै फुरैत छैक ।' मुदा प्रकाशक लेखनक केन्द्र मे जे नारी छै शोभा, तकरा स' अपना के आइडेंटिफाइ करैए । इ आइडेंटीफिकेशन एते प्रबल छै जे शोभा के अपना दांपत्य-जीवन मे संशयक जहर घोरा जेबाक संभावना बुझाइ छै । जँ सैह, त' प्रकाश एक रोगी व्यक्ति अइ । ओकर मस्तिस्क विकृतिक रचना मे सक्रिय छै । एहना मे ओकर अवसाद निजी होइतो असामाजिक छै । ओकर आग्रह, अस्वस्थताक प्रगतिक लेल भ' जाइ छै । मुदा जँ दोसर कात स' देखी त' इहो भ' सकै छै जे शोभा, रचना स' पहिने प्रकाश के आइडेंटीफाइ करैए आ तखन रचना मे स्वयं के ताकि लैए । अतीत मे गुंडा सब स' अपन परिचयक स्मरण स' अपराध-बोध स' ग्रस्त भ' जाइए । अपना 'शांत आ सुखी जीवन मे ई स्मरण ओकरा कठाइन अ-आयाचित बुझाइ छै । सशंकित भ' उठैए आ प्रकाश पर तमसा जाइए । मुदा इहो त' भ' सकै छै जे शोभा के ल' क' गूंडा सब जे प्रकाश के धमकी देलकै, ताइ मे शोभाक कोनोटा हाथ नै होइ । ओकरा सभक क्रिया मात्र गूंडपनी होइ आ शोभा, प्रकाश मे अपन रक्षकके देखने हो आ जकरा भागि पड़ेला स' ओ दुखी आ क्रोधित भेल हो । मुदा प्रकाश के से सब सोचबाक अवकाश नै छै । ओ अपना पीड़ा मे ऐंचैत रहैए-ओकरा किओ नै बूझलकै । एहन सन जे सबहक ई कर्त्तव्य छै जे सब ओकरा मनोनुकूल बूझौ । खाली प्रकाश के ककरो बूझबाक आवश्यकता नै छै । किएक त' ओ अपना माए के पिताक स्वास्थ्यक लेल चिन्तित देखने अइ । मुदा मीरा त' घरक परिभाषा मे चिन्तित छै आ शोभा...ओह ! भाषा-आन्दोलन मे गलत लोक अगुआ भ' गेलै, साहित्य मे स्वार्थक चलती छै । ऑफिस मे कम्युनिज्मक ढोलबज्जा युनियन लीटर । आपकता ने साफे निरपेक्षताक व्यवहार । एहि सबहक बीच एसगर प्रकाश। ओ अपना के अभिमन्यु घोषित नै केलक सैह आश्चर्य । ओह ! जँ प्रकाश आइयो गामक ओ गाछक दुकन्हा पर जाक' सुति सकितय...

एहि भकोभन्न अभिशप्त दुपहरियाक सांझ होइ छै । प्रकाश 'प्रोन्नति-मूलक' कोनो परीक्षा पास केलक । ओइ स' आगूक-परीक्षा देबाक छै । पाँच सय टाका लगतैक। मुदा ओ त' सात गाम मांगू तैयो एक्के तामा...' बला श्राप स' ग्रस्त अइ । पिता गाम स' मनिआर्डर करै छथिन । मीरा, प्रकाश के ओ टाका दैत कहै छथिन, स' घर स' आएल अछि' । मात्र 'घर' कहै छथिन । अहाँके वा 'अप्पन' दुनू मे स' कोनो विशेषण नै । मात्र घर । अर्थात मीरा प्रकाशक घर के अप्पन घर मानि लेलक । मुदा कखन? जखन घर स' टाका भेटलै । अर्थात् स्त्री के जत' स' टाका भेटतै सैह अप्पन घर बुझेतै । मीरा के, मायक कार्बन कापी बनेबाक प्रयास मे प्रभासजी एहि चरित्र के एत' तक ल' अनै छथि । प्रकाश धरि ओहिना अइ । माने ठीक अइ । ई त' निश्चिते अभिशापक स्थिति भेल-खासक' मिनीक लेल ।

भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिदृश्यक संदर्भ मे आठम दशक बेस युगान्तरकारी कालावधि छल । प्रभासजीक पहिल उपन्यास सातम दशकक अंत आ दोसर आठम-दशकक आरंभक रचना अइ । परंतु रचना मे एहि कालखंडक लेल मात्र घृणा आ उपेक्षा छै । राजनीति पतित अइ । नीक छै बीतलाहा समयक ओ संयुक्त परिवारक हारमोनी । हँ । प्रभासजी बेस मनोयोग स' ओकरा गढ़ैत छथि । एहि संरचनाक क्रमशः विस्तार भेटै छै युगपुरुष (1971) मे ।

उपन्यास युगपुरुष मे, एकटा अइ शंकर आ दोसर अइ रतना । एकटा चौधरी, दोसर झा, रत्नेश्वर झा । शंकरक बाप संभ्रांत कुलीन, भद्र-पुरुष, उत्तम शिक्षक। रतनाक बाप मवाली, गंजेरी, कामुक, अभद्र । शंकरक माय स्नेहमयी, सुघड़ । रतनाक माय दीन, दयनीय, आर्तंकित । शंकर सुन्दर, स्वस्थ, चंसगर आ सबहक प्रिय । रतना, आवारा, अबंड, अगुरबान । शंकरक मोन मे बनारसक घाट पर हेराइलि लाल-फ्राकवाली चंपाक स्मृति-सुवास । रतनाक देह स' रति-प्रवीणक अगरैनी फूटैत । पढ़ैत-पढ़ैत शंकर बेरोजगार भ' जाइए । मस्तानी करैत-करैत रतना नेता भ' जाइए । पास पड़ोसक दस गामक लोकक मोन मे आदंक छै । शंकरक मोन मे शोभाक अक्श छै । हँ शोभा । परंतु एइठां एकरा समयक संग बढ़' नै देल गेल छै । शोभा माने हाइस्कूलक सहपाठी। ओकरे लिखने छल प्रेमपत्र । पत्र पकड़ा गेल । हेडमास्टरक पएर पकड़ि जीवन भरि प्रेम नै करबाक सप्पत खेलक । आइ तक निमाहने अइ । शोभा ओत्तहि रहि गेलै । शंकर पएर छुविक' आगू बढ़ि गेल । पाछू दिस तकैत । मुदा रतना पाछू नै तकैए । जकरा चाहलक, तकरा भोगि लेलक । रतना पएर तोड़' मे विश्वास करैए ।

जीवनके बुझबाक ढंग रचना के एकटा आत्मिक स्वरूप दै छै । ई स्वरूप क्रमशः अपना लेल शरीर बना लैए । जं सैह त' दिशाक आभास क्रमशः सघनतर होइत जाइ छै आ रचना पाठक के अंत तक तार्किकताक दावा स' ल' जाइए । युगपुरुष पर ई बात एकदम लागू होइ छै । उपन्यास पढ़ैत काल क्रमशः आभास होब' लगै छै जे शंकर बताह भ' जाएत । अंततः सैह होइए । ओ अनधुन पाथर फेंक' लगैए । अनधुन, अनवरत, धुनकी मे । बिना कोनो सोच आ दिशा के । फलतः निशाना बनै छै लैम्प-पोस्ट । मुदा एक स' पहिने एकटा आर विस्फोट होइ छै । घुरन मिसरक आंगन मे सौंसे गाँम आ की शेखपूरा बजार जमा छै । रतना गरजि रहलए । शंकर कोनो उत्पातक आशंका गढ़ैत मूक साक्षी अइ । घर स' एकटा स्त्री बहराइ छै । ओ रतनाक प्रताड़ित, परित्यक्ता पत्नी छिऐ । रतना ओकरा पर बमकैत छल। आब ओ स्त्री गुम्हरै छै । ले, देखि ले...छियौ तोहर स्त्री...?" रतना मूड़ी झुकाक' आंगन स' बाहर । सबहक वाक्-करुणा सम्पूर्ण दृश्य, निर्णायक स्पष्टवादिता स' दमकि उठै छै । स्त्रीक ई साहस

ओकरा, शोषण-उत्पीड़नक विरोधक प्रतीक बना दै छै । स्त्रीके पुरुष त' चाहिऐ मुदा अमानुषक ओ प्रतिकार करता । अमानुष के ओ से बजार दुतकारैए । संलग्नता मे ई विस्फोट, ओहि सांचाक विरूद्ध होइए जाहि स' रतना सन चरित्रक निर्माण भ' रहल छै ।

उपन्यास 'युगपुरूष' मान-मूल्य मे होइत ह्रास, शुभ पक्षक अपदस्थता आ कुकर्मक उत्कर्ष स' चिन्तित अइ । परंतु शंकर आ रतनाक कन्ट्रास्ट क्रमशः अवसाद, असहायता, हीन-वोध के घनीभूत करैए रतनाक पराभव, एकटा पराजय जकां लैम्प-पोस्ट के देखियाब' मे व्यक्त होइ छै ।

उत्कर्षक अर्थ माने संपतिशाली भेनाइ । इलाका मे रोब-दाब, राजनीतिक पहुंच। एम. एल. ए., एम. पी. बनबाक लालसा । रतना अही उत्कर्षक उदाहरण अइ । दोसर दिस उत्कर्ष माने एकटा नीक-नोकरी । नान्हिटा घर । दूटा बाल-गोपाल । उत्सव-त्योहार मे नव वस्त्र । सप्ताहमे एक दिन माछ-मासु । माय-बाप, भाय-बहिनक लेल उदारता। शंकर मे इएह लालसा छै । मुदा भेटै छै ओकरे जे दिसि सकैए वा जोगार क' सकैए अथवा किछु बेचि सकैए । रतना के छीनला स' भेटै छै । रमण आ आनन्द के जोगार स' रोजी के देह बेचला स' तीनू ठाम उपभोगक सुविधा, भौतिक उत्कर्षक आग्रह छै । से नै होइ छै करुणेश आ शंकर संगे । एक गोटे इजोत स' मुंह मोड़ि लैए आ दोसर वृद्धि स' । पहिल ड्रग लेब' लगैए दोसर लैम्पपोस्ट पर ढेपा फेक' लगैए । अनधुन ।

एहि परिणतिक कारण की ? जत' बान्हल लीख पर चलला स' अधोगति आ रेलमपेल केला स' "उत्कर्ष' होइत हो ओहन संसारक की कैल जाए ? उपन्यास कहैए, बस ! शंकर के कोनो नीक चाकरी भेटि जाइ । रतनाक बहुत स्वर के चीन्हबा स' मना क' जाइए । फलतः लैम्प-पोस्ट के मारि खाए पड़ै छै । बेचारा ! 'राष्ट्रीय अनुशासनहीनताक शिक्षा प्रभासजीक तेसर औपन्यासिक कृति हमरा लग रहब (1977), बाहरे-बाहर एकटा प्रेम कथा अइ जाहिमे 'पास रहकर भी ये कितनी दूरिया' छै । इ पीड़ा, बचपनक कोनो दुर्घटनाक पार्थिव चेन्ह जकां स्थायी आ अकाजक छै । ई हमर कहब अइ । उपन्यासकारक ले ई पीड़ा बेस आकर्षक छनि । एकरा पुष्टिक लेल सौंसे उपन्यास खर्च भ' जाइए ।

उपन्यास ह. ल. र. मे वैह पूर्व परिचित गाम अइ । गाम मे बसैए कल्लू चौधरी नामधारी कलामी लोक । ओकरा दूटा बेटी छै-माला आ शीला । मुन्नर झा, कल्लू चौधरीक भनसीयाक बेटा अइ । दस कट्ठा खेत आ एकटा महींस । अही स' ओ अपन पत्नी आ प्रणवक पेट भरैए । नै-नै । प्रणव मुन्नर झाक बेटा नै । भागिन

छिऐ। दोसर गामक, नामी चौधरी खानदानक कुलदीप । मुदा परित्यक्त । ओकरा बापके मरिते जेठ पित्ती, ओकरा माए के गर्भ मे स्थित प्रणव सहित बैला देने छलै । गामक दुसधटोली मे बसैए मुनेसरा अर्थात् मुनेसर पासवान । तकर बाद सौंसे गाम अइ । ओकर सब चीज, स्थल, लोक वनस्पति, घुमा-फिराक' एत्तहु अइ जे अभिशप्त वा युगपुरुष मे छल । मुदा कथा माला-शीला, प्रणव आ मुनेसराक त्रिकोण मे गाम स' बहरा क' शहर-शहर घुमैत गाम अबैए आ बनारस जाक' विराम लैए ।

मालाक विवाह भ'जाइ छै । वर कुलीन परंतु वृद्ध छै । मालाक मोन आ खासक' देह एकरा अस्वीकार करै छै । माला जकरे-तकरे बाट-घाट रोक' लगैए । एकबेर प्रणवो के रोकैए । मुदा स्कूल मे कने हाथ छुआ गेला स' जे चाट ओ माने माला प्रणव के मारने रहै से तेना क' छनछनेलै जे बेचारा जीवन भरिक लेल नारी-देह स' भयाक्रांत भ' जाइए । कलकत्ताक परिवेश । भीगी-भीगी रात, जागी-भागी लड़की, कोठरीक एकांत आ स्पष्ट आमंत्रण पर्यन्त प्रणव मे ओ आदिम प्रवृत्ति नै जगा सकलै । प्रणव एकदम स' कमालक चीज भ' गेल । ओ काम-जयी त' भेबे कैल । क्रोध-लोभ स्वार्थ, ईर्ष्या, मोह, सबस' मुक्त भ' गेल । अपवाद स्वरूप कने मोह-पाश लगलै सेहो अमितक दुआरे । अमित ओकरा माला स' भेटलै । माला, जे देहक अग्निकुंड मे नवका-नवका आहुति दैत पितिऔतक भोग बनैत-बनैत पित्ती स' भोगाएल आ पहुंचा देल गेल शहरक लालबत्ती क्षेत्र मे । नाना प्रकारक गुप्त रोग स' ओत्तहि गलि गेल। मुदा ताइ स' पहिने अमित के प्रणवक आंगुर धरा गेल जे तावत तक सर्वगुण संपन्न प्रोफेसर बनि गेल रहैए । ओकर एकटा सहकर्मी छै प्रोफेसर झा । जँ प्रणव आदर्शवादी, भावुक, स्वप्नदर्शी आ उदार अइ त' प्रोफेसर झा भेल शाओभेनिस्ट, फेनेटिक आ भौतिकवादी । शीला अही प्रोफेसर झाक पत्नी अइ । शीला पर सब तरहक पाबंदी छै । मुदा ओ प्रणव स' भेंट भेला पर साहस करैए । एन्टागोनिस्ट के त्यागि प्रोटागोनिस्ट लग आबि जाइए । मुदा रहैए नै । एइ बीच, मुनेसरा अर्थात् मुनेसर पासवान, एम. एल. ए. बनि जाइए । दलित उत्थान करैत-करैत अपन आर्थिक उत्कर्ष क' बैसैए । एकटा देवीयो जी राखि लैए जकरा ओकर पत्नी अपन सौतिन माने छै। मुनेसर, पत्नीक डरे गाम स' पड़ाइए ओकरा जीप स' उड़ल गरदा स' जलेसरी बुढ़िया तोपाइत रहैए । अर्थात् एकटा आर नेता बनल । जनता, जहिना छल तहिना रहल । प्रोटागोनिस्ट एकबेर गाम मे घूमैए । गाम मे माने ब्राह्मण-टोल स' बाहर । ओ धानुक मुसहर, दुसाध, चमारक टोल मे जाइए । ओ त' एकटा ओपिनियन पोल जकां भ' जाइ छै । एहि पोल स' निर्णय बहराइ छै जे जँ सामंत लोकनि जबर्दस्ती यौन-शोषण करब छोड़ि दिअए त' सामंती शासन-व्यवस्था भारतीय (वा कहू जे मैथिल) समाजक लेल श्रेयस्कर । एत' आबिक' लेखकक राजनीतिक मान्यता स्पष्ट भ' जाइ छै । आ ओो मान्यता छै सामंती-शरमायेदारी मे कने सुधार अर्थात् यौन शोषण के स्वच्छया यौन-उपयोग मे बदलि क' पुनर्स्थापित करबाक ।

शीला, प्रणवक घर मे बासक' लैए मुदा रहैए नै । प्रणव चाहैए जे शीला ओकरा ल'ग रहौ । मुदा देह स' निरपेक्षताक व्यवधान खलनायक बनि जाइ छै । दुनू आस-पास अइ । सांस मे सांस टकराइ छै । शीला, जकर देह पता ने कतेक बेर धंगाएल, मोन स' कुमारि, प्रणवक प्रतीक्षा करैए । प्रणव, मोन परहक बलात्कार के खोधि-खोधि क' जगबैत देह स' शिथिल आ मष्तिष्क स' लुंज-पुंज भेल अइ । एहना मे, के ककरा ल'ग रहत ! दुनू सोझां-सोझी ठाढ़ भ' क' संवाद बजैए । छिटकि क' अपना-अपना स्कीम के समृद्ध करैए । फेर अस्पष्ट संवाद सब । एहना मे जाएज बात एक्कहिटा छै । अमित द्वारा प्रणवक त्याग । ओ झूठ, छद्‌म आ दमित वासना क' साइड-इफेक्टक माया-जाल के नकारि दैए । बाकीक लेल हारे को हरिनाम छैहे आ सैह होइतो छै।

ह. र. ल. स' प्रभासजीक उपन्यास सबहक स्टॉक कैरेक्टर्स एकटा मेलोड्रामा मे जीव'लागल । एकरे अग्रिम आ कने आर विकसित कड़ी छै हिनकर चारिम उपन्यास, 'नवारंभ' (1979) । नवारंभ मे जे नव (प्रभासजीक उपन्यासक संदर्भ मे) से भेल नायक-नायिकाक मिलन । दुनूक संयुक्त जीवनक आरंभ । ब्राम्हणेतर समाज स' फराक समाजक सदस्यक किछु मुखरता । भले ओ मुहलगुआ खबासे जकां किए ने हो । एकर अतिरिक्त ओ सब किछु अइ जे नवारंभक पूर्ववर्ती तीनू उपन्यास मे अइ । गाम। गाम मे चौधरी खानदान । चंसगर प्रोटागोनिस्ट आ भुसकौल काउन्टरपार्ट । नारी देह। देह के देह स' मिलला पर उठ'बला सामाजिक बबंडरक भय । पलायन । आगमन। आदर्शक लफ्फाजी । सुधारक सर्वोदयी नाटक । हारे को हरिनाम । पुनरागमन । नवारंभ। जबर्दस्त टीयर जर्किंग । नवारंभ । अपन नवजात शिशुक संग ब्राम्हणेतर समाजक ओइ मुखर सदस्यक घर मे बास । एहि फ्लोचार्ट के भरै छै वैह अजमाएल ज्वाइनरी सीन्स। बनैत नवका नेता जे आरो स्वार्थी आ क्रुर अइ (ह. र. ल. मे मुनेसर पासवान युगपुरूष मे रतना, अभिशप्त मे भाइ । ओना अभिशप्त मे मैथिली भाषा आन्दोलनकारी सब सेहो नवारंभक एकवाली चौधरीक बीज-रूप अइ ।) वैह अछोप टोल मे प्रोटागोनिस्टक भ्रमण । वैह सामंतवादी प्रशासनक वकालतिक अंतर्धारा । वैह सेक्सक डोज । भैया-भौजी बरखा मे भिजि-भिजि क' केलि-क्रिया करैए । नवारंभक रवि से दृश्य देखि लैए। ओकरा फुनगुनी फेकि दै छै । कविता ओकरा एकांत मे भेटि जाइ छै एकदिन । ओ वेसम्हार भ' जाइए । कविता के पंजिया लैए । उफान समाप्त होइ छै त' बापक नाक कटा जेबाक भय स' हडबड़ा जाइए । घर स' पड़ा जाइए। अनेको बरखक उपरांत

आपस अबैए । लोक सब एकरा देखिक' गड़बड़ा जाइ छै। रवि हतप्रभ भ' जाइए । समाज मे द्रोह आ स्वार्थक चलती देखि हमर ई 'रिप-वान-विकल' दार्शनिक भ' जाइए। किछु सुधारवादी काज आरंभ करैए । सामान्ये विरोध होइ छै। चुपचाप छोड़ि दैए । सोच' लगैए । एइ बीच कविता स' भेंट होइ छै । ओकर बेटा लव स' भेंट होइ छै?। कविताक पतिक चर्च होइ छै । रवि आपकता मे पुछै छै, कविता संकेत मे उत्तर दैए। कविता पतिक अछैतै, विधवा जकां किए रहैए, रविके तकरा तह मे जेबाक इच्छा नै होइ छै । पाठक के बुझ' मे आबि जाइ छै जे कविता, रवि-ए के प्रतीक्षा क' रहलए। ओकरा बेटा जकर नाम ओ लव (लभ) रखने अइ से ओही दिनक समागमक परिणाम छिऐ । मुदा प्रोटागोनिष्ट त' कविता स' भेंट क' क' निश्चिन्ते भेल छल । ओकरा इजानि जे ओइ दिनका घटनाक बात दुइए गोटे जनैए, ओ आ कविता, तेसर केओ नै, भार-मुक्तिक अनुभव भेल छलै । थोड़ेक कचोट सेहो जे तखन त' ओ अनेरे के अपन स्वर्णिम भविष्य के लैहेब क' लेलक । जहिया पड़ाएल रहए तकर किछुए दिनक उपरांत मैट्रिक-परीक्षाफल बहराएल रहै । जिला मे प्रथम भेल छल । एहन मन: स्थिति मे कविताक बात केना बूझैतै ? से इ नै बुझबाक बात प्रभासजीक समस्त कथानायक मे छनि । ओ अपन आदर्शों स' अनभिज्ञ अइ तखन आन बात सब कात जाओ !

मुदा प्रभासजीक महिला सब साधंस करैए । मुदा कविता के खोलिक' कह' पड़ै छै जे ओ त' हिनके प्रतीक्षा क' रहल छल । ओकर तथाकथित पति स' कनगुरियाक संस्पर्श नै छै । लव (वा लभ) ओही घटनाक परिणाम अइ । पलायनक लेत तत्पर रवि, स्टेशन स' आपस अबैए । अपन उत्तरदायित्व सम्हारैए । समाज नै मानै छै । ओ बरा जाइए । अवसादक स्थिति बनै छै । बेटा मरि जाइ छै । दोसर बेटा होइ छै । कविता मरि जाइ छै । रवि, एकाकी भ' जाइए । कोरा मे बेटा आ कान्ह पर पत्नीक लहास उठबैए । भोरुका पहर । श्मशान । धधकैत चिता । लहकैत मोन । चिता पझायल । मोन महुराएल । नै आब एत' नै रहबाक छै । रवि घूमल । सोंझां मे सौसे गाम ठाढ़। सबहक हृदय परिवर्तित भेल । कोन चमत्कार भेलै तकर कोनोटा सूचना उपन्यास मे नै छै । अंत करबाक छलै । एकटा धांसू अंत भ' गेलै ।

उपन्यास स्क्रीन-प्लेक आनन्द दै छै । अपन समृद्धिक दुआरे स्थान आ दृश्य मोन रहि जाइ छै । पात्र मोन रहि जाइ छै । अधूरापनक दुआरे । मुदा ओ तिलिस्म नै बनै छै जे कथाक शिल्प अपन तान्नी भरनी स' बनब' चाहैए आ ने चेतनाक स्तर पर कोनो आन्दोलन उठेबा मे सफल होइए जकर दावा उपन्यास मे बेर-बेर करबाक प्रयास होइ छै, प्रभासजीक अंतिम उपन्यास, 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी' एहि धारणा के आर प्रबल करैए ।

उपन्यास 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी' (1981) प्रभासजीक उपन्यास परिवारक अंतिम सदस्य अइ । पूर्णत: शृंखलाबद्ध । स्टॉक कैरेक्टर्सक वैह हुजूम । वैह परिवेश, परिस्थिति आ विचारक रिपीटीशन । वैह गाम । वैह चौधरी खानदान । वैह चंसार, सुशील, संस्कारी, प्रोटागोनिस्ट प्रकाश, शंकर, प्रणव रवि आ रा. पो. मे क. म. क भास्कर। कथाक मूल स्त्रोत मे कोनो लोककथा की प्रेमकथा । अभिशप्त मे 'सात गाम मांगू तैयो एक्के तामा, एक गाम मांगू तैयो एक्के तामा', युगपुरूष मे अच्छाइ बुराइक शाश्वत द्वन्द्व, ह. ल. र. मे 'रूसल जाइत सुग्गी रानी, हमरा ल'ग रहब ?' नवांरभ मे प्रेमकथा सबहक संयुक्त तिलिस्म आ अंत मे रा. पो. मे क. म. मे कठरी बाबाक खिस्सा।

कठरी बाबा, एकटा बेस प्रचलित लोककथा अइ । हमरा जनतबे फणीश्वर नाथ रेणुक एकटा उपन्यास (हिन्दी) आ महेन्द्र मलंगियाक एकटा नाटक (मैथिली)क प्रेरणा स्त्रोत इएह लोक-कथा अइ । अइ कथा मे एकटा बाबा अइ जे मारने नै मरैए आ चोर के पाछू स' टोकैत रहैए । रा. पो. मे क. म. क नायक भास्कर के सेहो तकरे भ्रम छै । ओ रहरहां अपना के कठरी बाबाक रोल करैत देख' लगैए । संगठित-प्रायोजित चोरि स' एसगरे लड़बाक बाध्यता-बोध स' लबालब भरल अइ । किछु-किछु एखनुका लोकप्रिय टी. वी. सिरियलक नायक शक्तिमान जकां । मुदा शक्तिमान के एखन, नाना प्रकारक स्पष्टीकरण देब' पड़ि रहल छै । कारण, ओकर अनुकरण स' होइत दुर्घटना सबहक दुआरे चारूभर स' पड़ैत दबाब । जं प्रभासजी पर एहन दबाव पड़ितनि त' स्पष्टीकरण वा संशोधनक लेल बाध्यं होइतथि की नै से त' नै जानि । परंतु हिनक नायक धर्म कॉमिकस्ट्रिप हीरो बन' मे सफल भ' गेलनि । फर्क एतबै छै जे एत' हीरो मरि जाइए। पत्नी किरण, स्वामीक मृत-देह पर बेहोश भ' जाइए । स्नेहमयी-प्रेरणादायिका आरती, कुहरि उठैए-गूड बाइ बेबी फादर ! फादर मर्फी कहै छथि, वी हैब अलवेज हैंग दोज हू ट्राइड टू टेल अस द' ट्रूथ..... 'बस । उपन्यासक आधार पर वी सैल अलवेज हैंग देम । ओहो सब धेने रहता शहादतक रूमानियत-एकला चलो रे...।

प्रभासजीक उपन्यास सब दृश्य-परिवर्त्तन बहुधा कट-टू-कट तकनीक अपनबैए। एतहु दृश्य बदलै छै । रामचंद्रपुर से एकटा घर । घर मे चारिटा स्त्री आ दूटा नेन्ना। दुनू नेन्ना के सुनाओल जा रहलैए, कठरी बाबाजीक खिस्सा-

–आहि रौ बा ! अनेरे किएक मारैत छह ? हम त' खाली एकटा बात पूछने छलिय' ।

–हमर जतरा भंगठि गेल ।

–टोकला स' जतरा केना भंगठि गेल ?

अही प्रश्नक सामना स' सत्य-असत्यक द्वन्द्वक तिलिस्म खुजि सकै छै। प्रतिकार आ प्रतिहिंसाक ओहि सर्वजयी समष्टि शक्तिक उद्घाटन भ' सकै छै जे मारने नै मरि सकैए। जे लोककथाक सांकेतिकताक अभीष्ट छै। मुदा, प्रभासजी एत्तहि अंत करै छथि। जत' मात्र परंपराक अनुगूंज (इको) टा रहि जाइए, क्रमशः क्षीण होइत।

खिस्साक आकर्षण, खिस्सा कहबाक अवगति मे छै। से अवगति निश्चित रूप स' प्रभासजी के छनि। पांचो उपन्यास एकर प्रमाण अइ। अहां, अनेरोक समय खराप हेबाक विचार स' उपन्यास स' विरत होब' चाहब। मुदा कथानक मे निरंतर अबैत मोड़क नाटकीयता अहांके पकड़ने रहत। अंत कराइए क' छोड़त। भले तकर बाद अहां, जोर स' किताब के पटकिए किए ने दी।

एहि लेखक आरंभ मे हम रचनाक सायास हेबाक धर्म-कर्मक बात उठौलहुं। यैह 'सायास', नीयत आ नियति के निर्धारित करै छै। प्रभासजीक रचनाक सायास छनि, विचारहीनताक विचार। पेट पर गेरुआ बान्हिक' गाभिन हेबाक ढोंग। एकटा अर्थहीन आदर्शवाद जकरा स्वयं नै बूझल छै जे कार्य-कारण संबंधक ओझरौट के की कैल जाए। ओ बच्चा सबके पढ़ेबाक निर्णय करैए मुदा सोचिक' नै रखैए जे विरोध भेला पर की करत। विरोध भेला पर चुपचाप पाछू हटि जाइए। कविता के बेटा समेत घर त' ल' अनैए मुदा बच्चाक कांच मोन पर पड़ैत कुंठाक अनिष्टकारी प्रभाव के हटाबक कोनोटा उपाय नै करैए। ओ दलित-शोषितक पक्ष त' ल' लैंए मुदा शृंखलाक देखाइतो कड़ी सबके आंखि छोट त पहाड़ ओट वा आँखिक लेखे पीठ पछुआरि करैए। संभवतः ओकरा हिसाबे, ओकर ठाढ़े भेनाइटा पर्याप्त छै। से नै होइ छै त' पलायन। एहन सन मुद्रा जे नै उपकार करेब' त' नै कराब'। यैह हम चललिय'। ई जनितो जे जहां जाइएगा हमें पाइएगा, ओ अजीबोगरीब निर्लिप्तता स' स्थान छोड़ैत रहैए। कत्तहु ओकर वा काज के जड़ि नै बहराइए छै।

प्रभासजीक दोसर सायास छनि, सामंती पद्वति आ मूल्यक (यौन-शोषण के छोड़िक'। हं, स्वेच्छा स' आबए एहन प्रयास कर' मे हर्ज नहि) पक्षधरता। एकरा लेल ओ सब बेर ब्राहणेतर टोल मे जाक' ओपिनियन पोलक' क' मत-संग्रह करै छथि। तथा कंट्रास्ट मे तथा प्रजातांत्रिक पद्वति के चलब'बला राजनीतिक नमूना सबके ठाढ़ करै छथि जाहिमे एकोटा सोझ लोक नै छै। सत्ते ? असहमति, भारतीय राजनीतिक सामयिक परिस्थितिक प्रति घृणा स' नै छै। असहमति छै एहि दुआरे पद्धतिएक अस्वीकार स'। एहन सन जे रोग नै छुटैए त' डाक्टरे नै, मेडिकल साइन्से बेकार। नीक वैह देसी पद्धति, जड़ी-बुटी, जादू-टोना, झाड़-फूक। प्रभास जी सैह कहैत छथि। आ तैं राजनेता सब कीड़ा अइ। खासक' कम्युनिष्ट सब। जेना लोक भोरे-भोर कोनो

गाम वा जीवक नाम लेनाइ अमंगलकारी बूझैए तहिना प्रभासजी कम्युनिष्ट के सोझ-सोझ कम्युनिष्ट ('अभिशप्त' मे छोड़ि) नै कहै छथि। लक्षणा-व्यंजना स' काज चलबै छथि। अंत मे नै रहल जाइ छनि त' ब्रम्हा (रा. पो. मे क. म.) क रूप मे कम्युमिस्टक प्रति अपन घृणाक सचित्र वर्णनक' जाइ छथि।

प्रभासजी, अपना हिसाबे बेस जोर द' कं' अप्पन बात रखै छथि। परंतु हिनक उपाय, प्रतिगामी आ जीवनक सत्यक विपरीतं अइ। हिनक समस्त प्रोटागोनिस्ट, इमोशनल, कन्फ्यूज्ड इलॉजिकल आदर्शवादी अइ। ओना सबहक किताबी मेरिट टॉप पर छै। आइ. ए. एस. क उद्देश्य छै। ब्यूरोक्रेटिक एक्टीविज्मक परिकल्पना छै। चारू भर सेक्सक प्रदर्शनी छै। मुदा प्रोटागोनिस्ट आदर्श अइ। ओकरा काजरक कोठरी मे करिखा नै लगै छै। धोखा-धोखी लागिए जाइ छै त' तकर ओ 'भयंकर' प्रायश्चित करैए।

प्रभासजीक महिला सब दू भाग मे बांटल छनि। पहिल, बाबी, मामी, आइ आंगनवाली नानी, माय...जे अत्यंत स्नेहमयी छथि। खिस्सा-पिहानीक पेटार छथि। घर के सजाब', बच्चा सबके पाल'-पोस' बाली, नीक-नीकूत बनब'-सोनब' बाली। निरंतर कार्यरत आ गृहपतिक प्रति समर्पित। हुनक समस्त इच्छा, भावना, काज आ प्रवृत्तिक मूक दर्शक वा सहयोगी। नायक मे एत्तेक संस्कार दैत जाहि स' ओ यौन-शोषणक विरोधी टा भ' सकय। दोसर भाग मे छथि नायकक समवयस्का सब। सेक्सी वा सेक्सक मारल। परंतु नायिका मे दृढ़ मनोशक्तिक प्रचुर मात्रा छै। उपन्यास मे एकर जोड़ा अइ। जेना, ह. ल. र. मे शीला आ झरना दुनू मोन स' कुमारि, दुनू प्रणवक देह-राग स' बारलि, दुनू हृदयतः प्रणव पर निहुछलि। नवारंभ मे कविता आ मीरा, दुनू प्रणव स' समर्पित आ एकटा देहराग स' परिचित परिणामक मारलि आ प्रतीक्षारत। रा. पो. मे क. म. मे किरण आ आरती। एकटा आदर्श पत्नी, दोसर स्नेहमयी प्रेरणादायिक वेलडन बेबी फादर...। मुदा नायकक तुलना मे ई नारी लोकनि वेस मुखर आ दृढ़ छथि। एक हद तक स्वस्थ सेहो। हमरा हिसाबे एहि मे सर्वोपरि अइ, युगपुरुषक रतनाक बहु तकर बाद रोजी (युगपुरुष) आ कविता (ह. ल. र.) नायकक फर्मा सबठाम एक्कै छै, प्रकाश (अभिशप्त) स' ल' क' भास्कर (रा. पो. मे क. म.) तक।

प्रभासजीक विवरण मे खिस्सा-पिहानी वला मौखिक परम्परा जन्य भाषाक संस्कार हमरा बेस आकर्षक लगैए। शिल्पक मैथिलपन स' युक्त प्लॉट-संरचना हमरा नीक लगैए। हमरा नीक लगैए नेनाक हेराएल स्नेह स' उत्पन्न एकटा आदिम राग जकां निरंतर बजैत अस्पष्ट प्रतिविम्बित पीड़ाक नीव पर जोड़ाइत कथाक महल। ई महल हमरा केहन लगैए से त' उपर जनाइए चुकल छी।

□

एहि अंकक रचनाकार

जीवकान्त–मैथिलीक प्रसिद्ध कवि-कथाकार। वस्तु, सुर्य गलि रहल अछि, करमीझील (कथा-संग्रह); नाचू हे पृथ्वी, धार नहि होइछ मुक्त, तकैत अछि चिड़ै, खॉड़ो (कविता-संग्रह), दू कुहेशक वाट, अगिनवान (उपन्यास) प्रकाशित। वर्ष 1998 क लेल 'तकैत अछि चिड़ै' पोथी साहित्य अकादमी सँ पुरस्कृत। सम्पर्क–ग्रा०+पो०–ड्योढ़, भाया-घोघरडीहा, मधुबनी।

मोहन भारद्वाज–मैथिलीक प्रसिद्ध दृष्टि सम्पन्न आलोचक, समीक्षक। सम्पादक। 'अनवरत' नाम सँ निबन्ध संग्रह प्रकाशित। 'अनवरत' पोथी पर किरण पुरस्कार सँ सम्मानित। सम्पर्क : 5/25, आर ब्लॉक, पटना।

तारानन्द वियोगी–मैथिलीक चर्चित कवि-कथाकार/ सम्पादक/अपन युद्धक साक्ष्य (गजल-संग्रह), हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह) प्रकाशित। अनेको पोथी आ पत्रिकाक सम्पादन। सम्पर्क–अंचल अधिकारी, कल्याणपुर, मोतिहारी।

शिवशंकर श्रीनिवास–मैथिलीक चर्चित कथाकार-कवि। समीक्षक। अदहन (कथा-संग्रह), त्रिकोण (कथा-संग्रह, सहयोगी प्रकाशन) प्रकाशित। अनेक कथाक विभिन्न भाषा मे अनुवाद। सम्पर्क–ग्राम-लोहना, पो०–लोहना, भाया–सरिसव-पाही, जिला-मधुबनी।

रमेश–मैथिलीक चर्चित कवि-कथाकार। सङोर (काव्य) नागफेनी (गजल) समाङ (कथा) समवेत स्वरक आगू (काव्य) सामानान्तर (कथा) प्रतिक्रिया (पाठकीय प्रतिक्रिया) पोथी प्रकाशित। सम्पर्क–सहायक परियोजना पदाधिकारी (साख), जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, जवाहर विकास भवन, सहरसा।

कुणाल–मैथिलीक चर्चित रंगकर्मी। कवि। मीताक नाम (कविता-संग्रह प्रकाशित) मैथिली नाटक के राष्ट्रीय ख्याति दिऔनिहार निर्देशक। बर्बरीक उवाच (हिन्दी-नाटक) लेल साहित्य कला परिषद, नई दिल्ली द्वारा मोहन राकेश पुरस्कार सँ सम्मानित। सम्पर्क–रोड नं०–4, क्वार्टर नं०–8 श्री कृष्ण नगर, पटना।

सन्धान—4

(मैथिली कथा पर केन्द्रित)

सन्धान-कथा-पुरस्कार योजना

- तीस वर्ष सँ कम बएसक कथाकार कें देल जायत । जिनकर बएस 31. 3. 99 कें तीस वर्ष सँ कम हुअए ।
- कथाकार अपन रचना फुलस्केप साइज कागज पर एक पिट्ठा टंकित अथवा सुस्पष्ट अक्षर मे लीखि 31.3.99 धरि पठाबथि ।
- रचना अधिक सँ अधिक बारह पृष्ठक रहय । रचना पर लेखकक नाम नहि लिखल रहय । नाम, उम्र, पता फराक सँ लीखि रचनाक संग नत्थी करी । लिफाफ पर सन्धान-कथा-पुरस्कार योजना लिखल रहए ।
- निर्णायक मण्डल द्वारा चयनित कथा के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देल जायत । प्रथम पुरस्कार 551 रु० द्वितीय पुरस्कार 351 रु० तथा तृतीय पुरस्कार 251 रु० रहत।
- तीनू पुरस्कृत कथा निर्णायक मण्डलक मन्तव्यक संग सन्धान—4 मे छापल जायत । चयनक सूचना प्रकाशन सँ पूर्वहिं देल जायत ।
- एहि लेल प्रतियोगी, कोनो पत्र-व्यवहार नहि करथिं । ई हुनकर अयोग्यता मानल जायत।

सम्पादक